शोधाञ्जलि

Convergence of Ideas: A Multidisciplinary Research Perspective

ISBN : 978-93-93248-63-3

EISBN: 978-93-93248-66-4

VOLUME-I-2024

WWW.KMGGPGC.ORG

Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College
Badalpur, G.B. Nagar-203207

शोधाञ्जलि

शोधाञ्जलि

प्रो. (डॉ.) दिव्या नाथ
संरक्षक
(प्राचार्य, कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर)

प्रो. (डॉ.) दीप्ति वाजपेयी
प्रधान संपादक
(प्रोफेसर, संस्कृत विभाग)

प्रो. (डॉ.) किशोर कुमार
प्रबंध संपादक
(प्रोफेसर, इतिहास विभाग)

संपादक मंडल

प्रो. (डॉ.) शिवानी वर्मा
(प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग)

डॉ. नेहा त्रिपाठी
(असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग)

डॉ. नीलम शर्मा
(असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग)

डॉ. संजीव कुमार
(असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग)

डॉ. अपेक्षा तिवारी
(असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग)

डॉ. विनीता सिंह
(असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग)

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

शोधाञ्जलि, ISBN: 978-93-93248-63-3

Published by :

NEEL KAMAL PRAKASHAN
1/11052-A, Subash Park, Shahdara, Delhi-110032
email: nkplife@gmail.com

© ***Editors-*** The concerned author(s) will be responsible for views, data, text and the data analysis presented in the chapter.

ISBN : 978-93-93248-63-3
EISBN : 978-93-93248-66-4

Price: **Rs. 600.00**

First Edition: **2024**

Printed by:

DHRUV PUBLISHER & PRINTER
856 B, Katra Chand Khan, Old City, Bareilly.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

संपादकीय

उच्च शिक्षा के अनंत उद्देश्य हैं। उनमें से तर्कसंगत सोचने (Critical Thinking) की प्रवृत्ति का विकास, नवाचार (Innovation) का विकास, आत्मनिर्भर (Self-reliance) समाज का निर्माण, रोजगार (Employability) के लिए नयी पीढ़ी को तैयार करना, छात्रों में शोध अभिरुचि (Research Orientation) का आरोपण करना, बेहतर वैश्विक नागरिक (World Citizenship) बनाना और उत्तरोत्तर बेहतर समाज (Better Society) का निर्माण करना आदि प्रमुख हैं। शोध अभिरुचि और प्रवृत्ति को प्रायः अकादमिक कार्य से जोड़ दिया जाता है, जबकि शोध का कार्य हम सभी की प्रत्येक जीवनचर्या से जुड़ा विषय है, हम कौन सा मोबाइल खरीदना चाहते है, कौन सा स्मार्ट टीवी हमारे घर के लिए बेहतर होगा और क्यों वही टीवी या मोबाइल हमारे लिए उचित है, उसका मूल्य, कॉन्फिग्रेशन, वारंटी और हमारी जरुरत और क्षमता क्या है? यह सब शोध प्रक्रिया और कार्य अनजाने में ही होता रहता है, यहाँ तक कि आप कौन सी चाय या कौन सा टूथपेस्ट इस्तेमाल करते हैं, यह सब भी अनजाने में और अनौपचारिक किये गए शोध का परिणाम होता है। अकादमिक जगत में शोध कार्य प्रायः औपचारिक रूप से किया जाता है। शोधार्थी या प्राध्यापक विषय के किसी ऐसे क्षेत्र का चयन करते हैं जिसमे उनकी अभिरुचि हो, और उस विषय पर आवश्यक प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत उपलब्ध हों। सर्वप्रथम उपलब्ध स्रोतों का वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर उस विषय पर कितना ज्ञान उपलब्ध है और अभी क्या प्राप्त करना अपेक्षित है?

यह जानने का प्रयास किया जाता है। इसे हम साहित्य समीक्षा (Literature Review) की संज्ञा देते हैं। साहित्य समीक्षा की प्रक्रिया का पालन कर उस विषय– विशेष में शोध अंतराल (Research Gap) का ज्ञान हो जाता है, और साथ ही शोध के विभिन्न संभावित परिणामों पर परिकल्पनाएं (Hypothesis) तथा शोध विधि पर शोधकर्ता की सम्यक समझ और ज्ञान अपेक्षित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्नातक और परास्नातक के छात्र–छात्राओं में शोध अभिरूचि को बढ़ाने का लक्ष्य रखती हैं, और इस संकल्पना पर जोर देती हैं कि शिक्षा और शोध उच्च शिक्षा का प्राथमिक और अपरिहार्य अंग है। जिससे विद्यार्थी चली आ रही परिपाटी का अंग न बन कर अपने विचारों, जिज्ञासाओं, प्रवत्तियों के अनुरूप कुछ नया सोचें और अन्वेषण करें। वर्तमान में जो है, वही मानकर उसी मार्ग पर चलने के बजाए अपना नवीन मार्ग चयन करें। जिससे समाज को एक नई दृष्टि, एक नया परिप्रेक्ष्य मिल सके। शोध में मानकता, नैतिकता और गुणवत्ता हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली द्वारा Consortium for Academic and Research Ethics (CARE) की स्थापना की गयी है। (CARE) केयर की स्थापना के पश्चात शोध में गुणवत्ता तो आई है, पर कहीं न कहीं शोधार्थियों और अकादमिक व्यक्तियों के लिए यह बहुत मुश्किल हो गया है कि वह अपने शोध पत्रों को समय अनुसार प्रकाशित करा सके, क्योंकि मानक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशन हेतु लंबी प्रक्रिया का पालन करना होता है और शोध पत्र के प्रकाशन में कभी–कभी साल दो साल का समय भी लग जाता है। इस कारण महाविद्यालय द्वारा नवीन पहल करते हुए नई शिक्षा नीति के अनुसार छात्र–छात्राओं और शोधार्थियों को एक ऐसा मंच प्रदान किया जा रहा है, जहां पर उनके मानक शोध पत्र समय अंतर्गत प्रकाशित हो सके। सीमित संसाधन होने के बावजूद शोधाञ्जलि पुस्तक को इसी शैक्षिक सत्र से प्रकाशित किए जाने का प्रयास प्रारंभ किया गया और यह सुनिश्चित किया गया कि जो भी विद्यार्थी

सतत आंतरिक मूल्यांकन हेतु अपने शोध कार्य को इसमें प्रकाशित करना चाहे उसे हम समयानुसार प्रकाशित कर सके। शोध के संबंध में यह एक संकुचित अवधारणा है कि शोध अकादमिक प्रगति में सहायक है। निसंदेह शोध अकादमिक प्रगति में सहायक होता है। परंतु उसका सबसे उत्तम पक्ष यह है कि शोध लोगों के जीवन में क्या परिवर्तन कर सकता हैं? उनकी सोच, मनोदशा और जीवन को कैसे बदलता है? समाज को सही दिशा में बदलने में किस प्रकार सहायक हो सकता है? इस प्रकार हमें शोध कार्य को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने की और छात्र–छात्राओं को उस परिप्रेक्ष्य में समझने–समझाने की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण भी इस शोध पुस्तक का उद्देश्य है। महाविद्यालय नवाचार के रूप में इस पुस्तक का प्रकाशन अन्य शोध पत्रिकाओं से इस दृष्टि से भिन्न है कि यह छात्रों के स्तर के अनुरूप उनमें शोध दृष्टि विकसित करने हेतु उन्हें एक मंच उपलब्ध करा रहा है और छात्रों के अंदर शोध का बीज रोपित कर रहा है। शोध कार्य में छात्र–छात्राओं का ज्ञान तुलनात्मक रूप से कम होने के कारण प्रस्तुत पुस्तक में शिक्षकों द्वारा उनका समुचित निर्देशन किया गया। प्राचार्य प्रो. दिव्या नाथ जी के संरक्षण में इसका प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि सुधि पाठकों के सुझाव और छात्र–छात्राओं के मानक शोध पत्र इसे निरंतर गति प्रदान करेंगे।

सम्पादक मंडल

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Contents

C.N.	Detail	Page No.
1.	गांधी, गांधी दर्शन, जीवन मूल्य और समाज विज्ञान *सृष्टि, ज्योति, डॉ. किशोर कुमार*	01 - 05
2.	सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव *सविता रावल, आस्था, डॉ. ममता सागर*	06 - 13
3.	वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण *गौरी सिंह, डॉ. दीप्ति वाजपेयी*	14 - 20
4.	पर्यावरण शिक्षाः समकालीन समाज में इसकी भूमिका और लाभ *सपना, सोनम, स्वाति, लेफ्टि. (डॉ.) मीनाक्षी लोहनी*	21 - 29
5.	श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग की प्रासंगिकता *नीतू पाल, डॉ. नीलम शर्मा*	30 - 36
6.	साइबर क्राइमः चुनौतियाँ और समाधान *आँचल नागर, डॉ. विनीता सिंह*	37 - 43
7.	अमृत काल का भारत और भविष्य की चुनौतियां *गौरी सिसोदिया, डॉ. दीप्ति वाजपेयी*	44 - 49

8.	महिला सशक्तिकरणः वास्तविकता या मिथक *नीति नागर, निशा नागर, डॉ. कविता वर्मा*	**50 - 56**
9.	शास्त्रीय संगीत की धरोहर किशोरी आमोनकर और कौशिकी चक्रवर्तीः एक समीक्षा *गौरी सिंह, डॉ. बबली अरूण*	**57 - 62**
10.	ऑटिज्म से पीड़ित छात्रों की शैक्षिक चुनौतियाँ और समाधानः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में *साक्षी शर्मा, दीपक कुमार शर्मा*	**63 - 70**
11.	महिलाओं पर स्वयं सहायता समूह का प्रभाव *सोनिका, डॉ. अनीता*	**71 - 77**
12.	शहरी अलगाव भारतीय शहरों में छिपा मानसिक संकट *यशवी शर्मा, डॉ. विनीता सिंह*	**78 - 86**
13.	लता मंगेशकर और मोहमद रफी : एक सुनहरा युग *तनु विकल, डॉ. बबली अरुण*	**87 - 95**
14.	सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव *सोनिया*	**96 - 103**
15.	**The Skills of Anganwadi Workers: Strengths and Weeknesses** *Km. Antim, Dr. Shivani Verma*	**104 - 110**
16.	**The Physiology of Sleep: Mechanisms and Functions** *Sakshi Bharadwaj, Dr. Dinesh C. Sharma*	**111 - 119**

17. Nanotechnology: Unlocking Potential across Industries While Navigating Environmental and Regulatory Challenges **120 - 125**
Astha Rawal, Dr. Neha Tripathee

18. The Role of International Trade Fair in Greater Noida for Bettering MSMEs: An Analytical Study **126 - 136**
Vandana Singh, Dr. Arvind Kumar Yadav

19. Understanding Breast Cancer **137 - 145**
Himanshi, Smt. Neetu Singh

20. 'Savitri' As a Future Poetry: A Review **146 - 156**
Shally Nagar, Dr. Apeksha Tiwari

21. A Critical Study of Market Failure in Housing Market and its Major Causes **157 – 162**
Sada Nafees Siddiqui, Dr. Sanjeev Kumar

22. Marital Rape in India: Sexual Violence in Private Space **163 - 169**
Nilanshi Sharma, Deepak Kumar Sharma

23. Gitanjali: A Saga of Intense Emotions and Love **170 - 179**
Chavi Sharma, Dr. Apeksha Tiwari

24. Collaborations between MSMEs and Higher Education Institutions in India: Sector-Specific Opportunities, Challenges, and Impact **180 - 189**
Himani Shisodia, Dr. Arvind Kumar Yadav

25. Three Language Policy: Does India Really Need It **190 - 197**
Sakshi Tanwar, Dr. Sanjeev Kumar

26. Reviewing Nai Talim **198 - 205**
Aparna Chaudhary

27. National Education Policy: 2020 Era of Educational Enlightenment **206 - 216**
Soni Singh

28. Jane Austen's Examination of Social Class and Marriage in 'Pride and Prejudice' **217 - 224**
Nisha

29. R.K. Narayan's Malgudi: An Imaginative Locale **225 - 231**
Shivani

30. Women's Contribution in Amitav Ghosh's 'The Shadow Lines' **232 - 238**
Parul

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

गांधी, गांधी दर्शन, जीवन मूल्य और समाज विज्ञान

- **सृष्टि–Author**
- **ज्योति–Author**
- **डॉ. किशोर कुमार–Corresponding Author**

इतिहास में ऐसे असंख्य उदाहरण हैं, जिनमें एक व्यक्तित्व ने अपने समय, काल और परिस्थितियों को इतना अधिक प्रभावित किया कि उस युग को उनके नाम पर ही विमर्श प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी ऐसे ही व्यक्तित्व है। वैश्विक परिदृश्य में सिकन्दर, नेपोलियन, बिस्मार्क, मार्क्स आदि यथा भारतीय परिप्रेक्ष्य में गौतम बुद्ध, महावीर, सम्राट अशोक, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, डॉ. अम्बेडकर, राम मनोहर लोहिया, इंदिरा गांधी, जय प्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेयी और नरेंद्र मोदी आदि को एक युग का प्रतिनिधित्व प्रदान करने वाला कहा जा सकता है। महात्मा गांधी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की उपलब्धि यह है कि उत्तर आधुनिक वैश्विक परिदृश्य में वह और ज्यादा प्रासंगिक होते जा रहे हैं।

- एम. ए., इतिहास, द्वितीय वर्ष, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- एम. ए., इतिहास, द्वितीय वर्ष, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

यह एक प्रमाणिक सत्य है कि एक राजनेता और एक राजमर्मज्ञ की दृष्टि में व्यापक अंतर होता है। एक राजमर्मज्ञ के लिए मानवता, देशभक्ति और राजधर्म उसकी प्राथमिकता मे होते है, साथ ही वह यह भी परिकल्पना करता है कि आगामी वर्षो में देश किस दिशा और दशा में प्रगति करे, वहीं एक राजनेता की दृष्टि आगामी चुनाव में सत्ता प्राप्ति तक सीमित होती है। आजादी के 77 वर्ष पश्चात भी सत्ता को पहली मंजिल मानने वाले राजनेताओं ने स्वयं को ब्रिटिश औपनिवेशिक चरित्र से अलग नहीं किया है और प्रसिद्ध औपनिवेशिक नीति 'बाटों और राज्य करो' को प्रत्येक दल ने अपनी मुख्य आन्तरिक नीति में शामिल कर लिया है। तुष्टिकरण और ध्रुवीकरण शताब्दी से राजनीति का एक अभिन्न हिस्सा रहा हैं, विडंबना यह है कि यह आज भी विद्यमान है। कथित बुद्धिजीवी एवं मीडिया के लोग भी इन्हीं आधारों पर समाज का विश्लेषण कर साम्प्रदायिक एवं जातीय नेतृत्वकर्ताओं की तरह समाज को बांटने का कार्य कर रहे होते हैं। चुनावों के दौरान मुख्य भारतीय मीडिया के कथित सम्मानित पत्रकार भी विभिन्न दलों की सीटों की अनुमानित संख्या का आकलन इसी आधार पर करते है कि किस जाति और धर्म के लोग किस दल के साथ संलग्न हैं, मुद्दे, सुधार की सम्भावना, नवीन भारत का निर्माण, लोकतंत्र के चारों स्तंभों में प्रासंगिक सुधारों की आवश्यकता, मुद्दा तो बनता है, पर प्राय अप्रासंगिक मुद्दों में गौण हो जाता हैं, निःसन्देह यह भारत के लिए अच्छे लक्षण नहीं है। महात्मा गांधी साध्य (लक्ष्य) और साधन (माध्यम) दोनों में पवित्रता का दर्शन देते हैं और उसका क्रियान्वन भी करते है। गांधी अपने व्यापक दृष्टिकोण, विभिन्न क्षेत्रों के अंतिम सत्यों को जानने का सतत प्रयास, विशेषकर धर्म, राजनीति, मानवता आदि को जानने, समझने और प्रयोग की अभीप्सा उन्हें अपने समकक्ष समस्त राजमर्मज्ञों से आगे स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करती है, और वह धर्म के स्वरूप को आध्यात्मिकता के आधार पर उल्लेखित कर एकता, समन्वय एवं उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यही धर्म का वास्तविक स्वरूप है। इस सर्वमान्य जननेता के विचार भारतीय जनमानस की सामान्य इच्छा से तारतम्य स्थापित करते हैं और उनके समस्त प्रयास बौद्धिक से आत्मिक स्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं इसलिए

महात्मा बन जाते हैं। यह आत्मिक चिंतन और इस चिन्तन का अक्षरशः क्रियान्वयन उन्हें एक सामाजिक, राजनीतिक संत के रूप में स्थापित कर देता है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि उन्होंने जो सिद्धांत प्रतिपादित किये उन्हें पहले अपने जीवन में उसी कथन स्वरूप में लागू किया। उनका कोई भी दर्शन एवं कृतित्व प्रतीकात्मक और समारोह प्रदान नहीं था। स्वच्छता अभियान भी उनकी जीवनचर्या का अंग था, न कि उसका प्रतीकात्मक स्वरूप। चरखा कातना, अस्पृश्यता निवारण उनकी जीवनचर्या का हिस्सा था, न कि वर्तमान राजनीतिक व्यक्तियों–दलों के द्वारा आजकल किया जाना वाला सांकेतिक कार्य। जब कोई जीवन के विभिन्न पक्षों में समग्र रूप से अहिंसा आधारित सकारात्मक क्रांतिकारी विचारधारा को जीवन में पूर्णतः आत्मसात कर लेता है तब हम कह सकते हैं वह व्यक्ति गांधी का अनुयायी है।

गांधी दुनिया के समस्त सामाजिक विज्ञानों में मात्र स्वतंत्रता संघर्ष में अपने योगदान एवं राजनीतिक भूमिका के कारण स्थापित नहीं हो गए हैं, यह स्थान उनके पूर्णतः मानवतावादी वैश्विक दर्शन की व्यापकता का वस्तुनिष्ठ परिणाम है। सत्याग्रह–अहिंसा के माध्यम से गांधी जी सत्य के द्वारा असत्य को, अहिंसा के द्वारा हिंसा को परास्त करने का नैतिक शस्त्र प्रदान करते हैं और भारतीय जनजातियों के आंदोलन, देशी राज्यों का अपने हितों के लिए संघर्ष, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, एवं कांग्रेस की स्थापना और बुद्धिजीवियों के सतत परन्तु एकान्तिक आन्दोलन को अनेकान्तवादी जन–आन्दोलन का स्वरूप प्रदान करते हैं। गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व के आयाम इतिहास, राजनीति विज्ञान, दर्शनशास्त्र, पर्यावरण विज्ञान, प्रबंधन, समाजशास्त्र, स्वच्छता. भाषा और साहित्य आदि के विषय तक ही सीमित नहीं हैं इनसे इतर भी उसकी व्यापकता है। भारतीय राजनीति में लोकतंत्र का सच्चा पारदर्शी और जवाबदेह स्वरूप प्राप्त करना अद्यतन एक परिकल्पना है। समाज के सबसे निचले स्तर पर मौजूद व्यक्ति अपनी मेहनत, क्षमता और ईमानदारी से सर्वोच्च पदों पर अपना स्थान बना सके, ऐसा बेहतर माहौल बनाना हम सभी का दायित्व हैं और सत्ता के

विकेन्द्रीकरण, नागरिकों के जीवन में यथा सम्भव न्यूनतम हस्तक्षेप गांधी जी के दर्शन का एक उपांग है।

यह एक विडम्बना ही है कि आजादी के सात दशक में हम जीवन मूल्य एवं रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था स्थापित नहीं कर पाये। महात्मा गांधी की वर्धा शिक्षा योजना के माध्यम से हमें शिक्षा के व्यवहारिक पक्ष से बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उन सभी संकल्पनाओं को अपने अंदर समाहित किये हुए प्रतीत होती हैं, परन्तु इसके व्यावहारिक अनुप्रयोग हेतु चुनौतियों का शमन करना अद्यतन एक चुनौती है। गाँधी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था एवं उद्योगपतियों के विषय में ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रतिपादित करते हैं, लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना, मितव्ययिता एवं उपयोगितावादी दृष्टिकोण पर बल देते हैं। भौतिकवादी बाजार प्रणाली मे ट्रस्टीशिप का सिद्धांत और ज्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है, इससे मिलती जुलती संकल्पना कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी द्वारा विभिन्न उद्योगपतियों समूहों (टाटा, विप्रो, इंफोसिस, माइक्रोसॉफ्ट, एचसीएल आदि) द्वारा काफी क्षेत्रों में विशेषकर शिक्षा, स्वास्थय आदि में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया गया है, हालांकि नव उपनिवेशवादी प्रवृत्तियाँ तेजी से अमीर और गरीब के बीच की खाई में निरन्तर वृद्धि कर रही हैं, और गांधी जी इसे समय से पूर्व ही समझ चुके थे, अब यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम ज्यादा समरस समाज के निर्माण के लिए कार्य करें। पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास आज हमारा लक्ष्य है, महात्मा गांधी का कथन है कि यह पृथ्वी हमारी सभी जरूरतों की पूर्ति करने में सक्षम है, परन्तु यह हमारे अनियंत्रित लालच के जिम्मेदार और पूर्ण नहीं है, आज भारतीय पर्यावरण में व्याप्त प्रदूषण हम सभी के लालच, तटस्थवाद और सुविधाभोग का परिणाम हैं। पर्यावरण संरक्षण की नीतियों और उनके क्रियान्वयन पर महात्मा गांधी ने लगभग शताब्दी पूर्व जो कार्य किये, वह आज भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलन मे सत्याग्रह और अहिंसा के प्रयोग ने भारत को एक अनोखी लोकतान्त्रिक और महत्वपूर्ण और प्रबल शस्त्र प्रदान किया है, चम्पारण, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा

आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, जे. पी. की सम्पूर्ण क्रांति का आंदोलन, अन्ना आंदोलन आदि में इस शस्त्र की शक्ति के साक्ष्य पूर्णतः उपलब्ध हैं। उपर्युक्त उदाहरण महात्मा गांधी के व्यापक वैचारिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने और उनके व्यक्तित्व, कृतित्व, जीवन दर्शन, मूल्यों और उनके समुचित और व्यापक प्रभाव को स्पष्ट करने में सक्षम है। अपने सभी आंदोलनों में उनके द्वारा चुने गए मुद्दे सदैव जनसामान्य में एक जुड़ाव पैदा करने में सक्षम थे क्योंकि वह भारत को, भारत की आत्मा को, भारतीयों के भाव को समझते थे। और यह समझ, यह दृष्टि, यह परिकल्पना उन्हें विश्व में और विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है, और इसलिए वह समस्त मानविकी और साहित्यिक विषयों में पूरे विश्व में निरंतरता से और ज्यादा प्रासंगिक और आधिकारिक पाठ्यक्रम में भी ज्यादा शामिल होते जा रहे हैं। यह सत्य है कि कोई भी संकल्पना, विचार और नीति को शुद्ध भाव से लागू करने पर ही उसके सही परिणाम आ सकते हैं। हम भारतीय नीतियों के सही क्रियान्वयन में अद्यतन पीछे हैं वहीं बेहतरीन नीतियाँ बनाने मे हमारी श्रेष्ठता है, हमें नीतियों की व्यवहारिकता पर भी कार्य करने की आवश्यकता है। गांधी ने जो जो विचार, दर्शन परिकल्पना, मार्ग और प्रयोग आदि हमें दिए, यदि हम उन सभी का अधिकतम या पूर्णतः क्रियान्वन कर पाये, तो हमारा भारत पूरी दुनिया को एक नयी राह देने में सक्षम होगा और यह हमसे अपेक्षित भी है।

सन्दर्भ

1. कुमार किशोर, भारत में साम्प्रदायिकताः अतीत और वर्तमान, मुहिम प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007
2. गांधी जी, राव यू. एस. मोहन, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2009
3. दोशी एस. एल., आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत प्रकाशन, 2015
4. कुमार किशोर, भारत में प्रतिनिधित्व एवं सामाजिक न्याय, मुहिम प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
5. गांधी मोहनदास कर्मचन्द, सत्य के प्रयोग, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2008

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव

• सविता रावल–**Author**

• आस्था–**Author**

• डॉ. ममता सागर–**Corresponding Author**

परिचय

सोशल मीडिया इंटरनेट पर आधारित ऐसे प्लेटफॉर्म होते हैं जो उपयोगकर्ताओं को जानकारी साझा करने, अपने विचारों को व्यक्त करने, और दूसरों के साथ जुड़ने की अनुमति देते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने विचारों, अनुभवों, और जानकारी को साझा कर सकते हैं, और दूसरों के साथ चर्चा कर सकते हैं। यह व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि दोस्तों और परिवार के साथ जुड़ना, समाचार और जानकारी प्राप्त करना, और व्यवसायिक संबंध बनाना। सोशल साइट्स यानी सोशल नेटवर्किंग साइट एक आभासी दुनिया है यहां लोग अपने–अपने दोस्तों परिवार रिश्तेदारों से जुड़े होते हैं

• एम.ए. प्रथम वर्ष, समाजशास्त्र, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• एम.ए. प्रथम वर्ष, समाजशास्त्र, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

इन साइट्स पर लोग अपने प्रोफाइल बना लेते हैं एक दूसरे से बातचीत करते हैं और अपनी फोटो एवंअनुभव शेयर करते हैं। सोशल साइट्स इंटरनेट की सबसे महत्वपूर्ण उपयोगिताओं में से एक मानी जाती है सोशल साइड बातचीत करने का एक अच्छा माध्यम प्रदान करती है। सोशल साइट संचार का सबसे बड़ा माध्यम है। आज हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहां सूचना केवल एक बटन दबाने की दूरी पर है। सोशल साइट सूचना का प्रचार करने में आज सबसे महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है सोशल मीडिया के अलग–अलग प्लेटफार्म है। जैसे फेसबुक ट्विटर इंस्टाग्राम यूट्यूब व्हाट्सएप आदि।

युवा और सोशल मीडिया

सोशल मीडिया युवाओं पर कई प्रकार से प्रभाव डालता है सकारात्मक प्रभावों में यह जानकारी शिक्षा का माध्यम बनती है लेकिन नकारात्मक प्रभावों में यह मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। सोशल मीडिया का युवा पीढ़ी पर गहरा प्रभाव पड़ता है जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में पाया जाता है। सकारात्मक रूप से सोशल मीडिया ने युवाओं को जानकारी शिक्षा और समाज को एक नया मंच प्रदान किया है। यह अलग–अलग मुद्दों पर जागरूकता फैलाने और एक दूसरे को सीखने का अवसर प्रदान करती है। हालांकि नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट हैं सोशल मीडिया पर तुलना की संस्कृति अक्षर ए सुरक्षा और तनाव बढ़ती है इसके अलावा साइबर बुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न की घटनाएं भी बढ़ रही है जो युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। युवाओं के सोशल साइट के बढ़ते उपयोग के कारण यह जरूरी है कि वह इसका संतुलित उपयोग करें।

सोशल मीडिया के कुछ मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं–

- **उपयोगकर्ता–जनित सामग्रीः** सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ता अपनी सामग्री बना और साझा कर सकते हैं, जैसे कि फोटो, वीडियो, ब्लॉग पोस्ट, और ट्वीट।

- **वास्तविक समय में अद्यतनः** सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ता अपने विचारों और अनुभवों को वास्तविक समय में साझा कर सकते हैं।

- **सामाजिक संबंधों का निर्माणः** सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को दुनिया भर के लोगों के साथ जुड़ने और सामाजिक संबंध बनाने का अवसर प्रदान करता है।

- **जानकारी का आदान–प्रदानः** सोशल मीडिया पर उपयोगकर्ता जानकारी साझा कर सकते हैं और दूसरों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

- **व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रताः** सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है, जिससे वे अपनी पहचान और व्यक्तित्व को व्यक्त कर सकते हैं।

सोशल मीडिया का सकारात्मक पहलू

- **जागरूकता और सूचनाः** सोशल मीडिया पर व्यक्ति बहुत सारी जानकारी प्राप्त कर सकता है जैसे स्वास्थ्य शिक्षा और समाज की मौलिक समस्याएं आदि।

- **संबंधों का विकासः** यह साइट्स परिवार दोस्तों एवं रिश्तेदारों के संपर्क में रहने में सहायता करती है।

- **स्वयं व्यक्त करनाः** युवा अपनी कला विचारों को दूसरे तक पहुंचा सकते हैं।

- **समाज का निर्माणः** समान रुचि वाले व्यक्ति के साथ जोड़ने का मौका मिलता है जो उन्हें एक सार्थक समुदाय या समाज प्रदान करते हैं।

- **स्वास्थ्य शिक्षा में**: स्वास्थ्य संबंधी सलाह, बीमारियों के लक्षण और उपचार, और स्वस्थ जीवनशैली के टिप्स शामिल हैं। यह जानकारी हमें अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

- **समाज की मौलिक समस्याएं**: जैसे कि शिक्षा की कमी, गरीबी, पर्यावरण प्रदूषण, और महिला अधिकार भी सोशल मीडिया पर चर्चा के लिए महत्वपूर्ण विषय हैं। इन समस्याओं पर जागरूकता फैलाने से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

- **समाचार और अद्यतन में**: राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समाचार, राजनीतिक और आर्थिक अद्यतन, और खेल और मनोरंजन की खबरें शामिल हैं। यह जानकारी हमें दुनिया भर की घटनाओं से अवगत कराती है और हमें अद्यतन रखती है ।

- **शिक्षा और कैरियर में**: शैक्षिक संसाधन, कैरियर के अवसर, और व्यक्तिगत विकास के टिप्स शामिल हैं। यह जानकारी हमें अपने शैक्षिक और पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है। सोशल मीडिया कई व्यवसाईयों के लिए व्यवसाय के एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रही है।

- **सामाजिक मुद्दे**: जैसे कि महिला सशक्तिकरण, बच्चों के अधिकार, वृद्धों की देखभाल, और विकलांगों के अधिकार भी सोशल मीडिया पर महत्वपूर्ण विषय हैं। इन मुद्दों पर जागरूकता फैलाने से हम समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा दे सकते हैं । सोशल साइट उन लोगों की आवाज बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग है और जिनकी आवाज को दबाया जाता है।

नकारात्मक पहलू

सोशल मीडिया का युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव कई पहलुओं में दिखाई देता है–

- **मानसिक तनाव और अवसादः** सोशल मीडिया पर असली और नकली जीवन के बीच की तुलना करने से युवाओं में मानसिक तनाव और अवसाद हो सकता है।

- **साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़नः** सोशल मीडिया पर युवाओं को साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनकी मानसिक सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- **समय की बर्बादी और उत्पादकता में कमीः** सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने से युवाओं की उत्पादकता में कमी आ सकती है और उनके शैक्षिक और पेशेवर लक्ष्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

- **नकली जानकारी और भ्रामक समाचारः** सोशल मीडिया पर नकली जानकारी और भ्रामक समाचार फैलने से युवाओं को सही जानकारी की कमी हो सकती है और उनके निर्णयों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

- **व्यक्तिगत संबंधों पर नकारात्मक प्रभावः** सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने से युवाओं के व्यक्तिगत संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उनके परिवार और दोस्तों के साथ संबंधों मेंकमी आ सकती है।

- **आत्मसम्मान और आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभावः** सोशल मीडिया पर असली और नकली जीवन के बीच की तुलना करने से युवाओं के आत्मसम्मान और आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

- **साइबर अपराधः** आज के समय को देखते हुए सोशल साइट पर बहुत तेजी से अपराध हो रहे हैं जिससे जिससे व्यक्तित्व की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

- **निजता का प्रभावः** व्यक्ति को जानकारी का गलत इस्तेमाल करने पर खतरा बढ़ जाता है।

फेसबुक

फेसबुक एक स्थित निशुल्क सामाजिक नेटवर्किंग सेवा है जिसके माध्यम से सदस्य अपने परिचितों के साथ संपर्क में बने रहते हैं यह मेटा प्लेटफार्म नमक निजी कंपनी द्वारा संचालित है इसका आरंभ 2004 में हाईवे के एक छात्र मार्क जुकरबर्ग वर्ग ने की थी । तब इसका नाम फेसबुक था कॉलेज नेटवर्किंग जल स्थल के रूप में आरंभ के बाद शीघ्र ही यह कॉलेज परिसर में लोकप्रिय होती चली गई कुछ ही महीना में यह नेटवर्क पूरे यूरोप में पहचाने जाने लगी अगस्त 2005 में इसका नाम फेसबुक कर दिया गया फेसबुक में अन्य कई भाषाओं के साथ–साथ हिंदी में भी काम करने की सुविधाएं हैं।

प्रभाव

1. फेसबुक से दूसरों को सामग्री साझा करके उन्हें संगठित किया जाता है ।
2. एक शोधकर्ता ने विश्लेषण किया था कि फेसबुक कैसे संबंधों के विकास को प्रभावित और मदद कर सकता है।
3. इस पूरे अध्ययन से पता चलता है कि फेसबुक मनोवैज्ञानिक स्तर पर व्यक्तियों और सामाजिक निकायों को कैसे प्रभावित कर सकता है।
4. फेसबुक की लत से आंखों में जलन नींद में खलल सर दर्द आदि जैसे शारीरिक समस्या हो सकती हैं।
5. सोशल मीडिया फेक न्यूज और सिर स्पीच फैलाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

6. कैट फिशिंग ऑफलाइन शिकारी के काम के समान है हालांकि इसका उद्देश्य पीड़ित होने का नाटक करके उसे संकट में डालना है।

इंस्टाग्राम

इंस्टाग्राम एक फोटो और वीडियो शेयरिंग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म है। इसे 2010 में रिलीज किया गया था अब यह 25 भाषाओं में उपलब्ध है इंस्टाग्राम के जरिए आपको आपके फ्रेंड्स से उनकी लाइफ के अलग–अलग चौप्टर के जरिए जुड़ने में मदद मिलती है। इंस्टाग्राम की शुरुआत केबिन सिस्ट्रॉम और माइक करेगर नए 6 अक्टूबर 2010 को की थी। इंस्टाग्राम का पहला प्रोटोटाइप बर्बन नाम से एक वेब एप था। इंस्टाग्राम का सकारात्मक प्रभाव व्यक्तित्व को अपनी रुचि के क्षेत्र में जोड़ने नई दोस्ती बनाने में मदद करता है।

1. इंस्टाग्राम पर लोग अपने लोकेशन को भी शेयर कर सकते हैं इंस्टाग्राम पर लोग दृश्य संचार और सामाजिक संपर्क के जरिए दूसरे लोगों से जुड़ सकते हैं।
2. इंस्टाग्राम पर गोपनीयता से जुड़े कई टूल हैं जिनसे यूजर अपने अनुभव को और बेहतर बनाते हैं।
3. व्यइंस्टाग्राम के डायरेक्टर मैसार फीचर से आप दोस्तों के साथ प्राइवेट तरीके से जुड़ सकते हैं और अपने व्यवसाय ऑनलाइन वेबसाइट के जरिए आगे बढ़ा सकते हैं।
4. **व्याकुलताः** लगातार स्क्रोलिंग से उत्पादकता पर बुरा प्रभाव पड़ता है व्यक्ति काम या पढ़ाई में ध्यान नहीं देता है ।
5. **फोमो छूट जाने का डरः** हर समय दूसरों की जिंदगी देखने से लोगों में खुद मैं अकेलेपन की भावना महसूस होने लगती है।
6. **बॉडी इमेजः** तस्वीरों से लोगों का अपने शरीर के प्रतिश्वास भावनाएं जगाती हैं जो आत्म सम्मान को प्रभावित कर सकती हैं।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव एक जटिल और विविध विषय है। एक ओर, सोशल मीडिया ने युवाओं को जानकारी प्राप्त करने, सामाजिक संबंध बनाने, और अपने विचारों को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली माध्यम प्रदान किया है। लेकिन दूसरी ओर, इसके नकारात्मक प्रभाव भी हैं, जैसे कि मानसिक तनाव, साइबरबुलिंग, समय की बर्बादी, और नकली जानकारी का प्रसार। इसलिए, यह आवश्यक है कि युवा सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी से करें और इसके नकारात्मक प्रभावों से बचने के लिए सावधानी बरतें। इसके लिए, उन्हें सोशल मीडिया पर समय की सीमा निर्धारित करनी, अपने डेटा की सुरक्षा करनी, और नकली जानकारी की पहचान करनी चाहिए। इसके अलावा, शिक्षकों, माता–पिता, और समाज के अन्य सदस्यों को भी युवाओं को सोशल मीडिया के सही उपयोग के बारे में शिक्षित करना चाहिए और उन्हें इसके नकारात्मक प्रभावों से बचाने में मदद करनी चाहिए। अंत में, सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव एक दोहरी तलवार है, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम दे सकती है। इसलिए, हमें इसका उपयोग जिम्मेदारी से करना चाहिए और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए काम करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. रंजन श्री राजीव, सोशल मीडिया की दुनिया में युवा, पुस्तक महल, 2017
2. सिंह राजेंद्र, सोशल मीडिया और युवा, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2018
3. कुमार संजय, युवा और सोशल मीडियाः चुनौतियाँ और अवसर, मनोज प्रकाशन, 2019
4. कुमार सुनील, युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभावः एक अध्ययन, अनामिका प्रकाशन 2020
5. शर्मा रेखा, सोशल मीडिया का युवाओं पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव, अपेक्स प्रकाशन 2020

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण

• गौरी सिंह–**Author**

• डॉ. दीप्ति वाजपेयी–**Corresponding Author**

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग (चारों ओर) और 'आवरण' से मिलकर बना है। जिसका अर्थ है, वह प्राकृतिक इकाइयां जो चेतन तत्वों को चारों ओर से आवृत्त किये हुए हैं। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत इकाई है, जो हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। सामान्य अर्थों में हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्व, जो हमारे चारों ओर व्याप्त है, पर्यावरण कहलाते है। सिर्फ पर्यावरण ही हमें प्रभावित नहीं करता, हम मनुष्य भी अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार एक जीवधारी और उसके पर्यावरण के बीच अन्योन्याश्रय का संबंध है।

भारत अध्यात्म प्रधान देश है। हमारे ऋषियों, मुनियों और आचार्यों ने अध्यात्म में प्रकृति का और प्रकृति में अध्यात्म का साक्षात्कार किया। प्रकृति मानव से अलग नहीं है। मानव का प्रकृति से उतना ही गहरा सम्बन्ध है, जितना शरीर का प्राण से और प्राण का शरीर से।

• एम.ए. प्रथम वर्ष, संस्कृत, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.।
• प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.।

शरीर के बिना प्राणों की अभिव्यक्ति नहीं होती और प्राणों के बिना शरीर का अस्तित्त्व नहीं हो सकता, अतः जिस प्रकार प्राणों की सत्ता को प्रमाणित करने के लिये शरीर की आवश्यकता है। ठीक इसी प्रकार, मनुष्य और प्रकृति का अन्योन्याश्रय और अविभाज्य सम्बन्ध है। जब सृष्टि की रचना हुई तब इस सृष्टि में जीव, जंतुओं और पर्यावरण का निर्माण हुआ। प्राचीन समय में मानव पर्यावरण के अनुकूल आचरण करता था। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों में भी पर्यावरण चेतना को जागृत करने का प्रयास किया गया है। पर्यावरण चेतना का तात्पर्य मनुष्य का पृथ्वी पर विद्यमान अग्नि, जल, मृदा, वायु, जीवधारियों के प्रति चिंतन बोध एवं जाग्रति से है। वेदों में पर्यावरण संरक्षण की भावना से विभिन्न पर्यावरण तत्वों की देव रूप में स्तुति की गई है। परंतु आज परिस्थितियां अलग हैं। वर्तमान मनुष्यों में प्रकृति के प्रति दैवीय भाव तो क्या कृतज्ञता के भाव भी नहीं है। आज प्रकृति के साथ मानव का संबंध सामंजस्यपूर्ण नहीं है। अतः वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं को देखते हुए पर्यावरण संरक्षण की चेतना जनमानस के लिए आवश्यक है।

वेदों में पर्यावरण संरक्षण

जिस समय से मानव जाति ने संसार में अपना अस्तित्व आरंभ किया उस समय से ही शस्य श्यामला पृथ्वी पर दृष्टिगोचर प्राकृतिक तत्वों से प्रभावित मानव ने उसे अपनी स्तुति एवं रचनाओं की विषय वस्तु बनाया। प्रकृति से प्रभावित एवं प्रेरित संस्कृत का आदि साहित्य प्राकृतिक चेतना से ओत प्रोत से है। संस्कृत के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों में अनेक सूक्त हैं, जिनमे प्राकृतिक तत्वों का देवताओं के रूप में आह्वान किया गया है और उन्हें स्तुति योग्य माना गया है। वैदिक साहित्य में सर्वत्र प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन की कामना की गई है। यही कारण है कि तत्कालीन पर्यावरण अपने समृद्ध एवं श्रेष्ठ रूप में था, किंतु आज के समय में पर्यावरण में भीषण प्रदूषण व असंतुलन उत्पन्न हो चुका है। इसका मुख्य कारण मानव जाति के द्वारा प्रकृति को दोहन की वस्तु मानकर उसके प्रति उठाए गए प्रतिकूल कदम

है। जैसे कि– वृक्षों को अत्यधिक मात्रा में काटना, वृक्षारोपण न करना, वनों को नष्ट करना, फैक्ट्रियों से निकलने वाले घातक रसायनों एवं अन्य दूषित पदार्थों को जल स्त्रोतों में विसर्जित करना, दूषित जल को साफ किए बिना समुद्र में विसर्जित करना, अयोग्य वाहनों का प्रयोग करना आदि।

इन क्रियाकलापों के परिणाम स्वरूप आज समग्र मानव जाति अनेक समस्याओं, प्राकृतिक आपदाओं और नित–नवीन बीमारियों का सामना कर रही है। इन सभी समस्याओं के समाधान स्वरूप पर्यावरण को संरक्षित करना अनिवार्य है।

वेदों में निहित ज्ञान हमें यह प्रेरणा देता है कि हम इस प्रकृति की गोद में इसको कष्ट न पहुंचाते हुए अपना जीवन जिएं। वेदानुसार यदि मानव वायु, जल भूमि तथा प्राकृतिक घटकों को क्षतिरहित, शुद्ध व स्वच्छ रखेगा तो पर्यावरण मानव हितकारी व सृष्टि कल्याणकारी रूप में होगा ।

वायु शुद्धि– वेदों के अनुसार वायु प्राण शक्ति है। वायु के अंदर विद्यमान ऑक्सीजन को अमरनिधि कहा गया है। प्राणवायु (ऑक्सीजन) मनुष्य व सभी जीव जंतुओं को प्राण देती है और शारीरिक अशुद्धियों को दूर करती है। जिस से मनुष्य दीर्घजीवी होता है अतः वायु का शुद्ध व स्वच्छ होना अनिवार्य है। वायु में कार्बन डाई ऑक्साइड व अन्य विषाक्त गैस की मात्रा अत्यधिक होना वायु प्रदूषण की श्रेणी में आता है। वायु प्रदूषित होने से श्वास रोग व हृदय रोगों में वृद्धि होती है। वृक्ष कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण कर मनुष्य के लिए ऑक्सीजन छोड़ते हैं अतः वृक्षों का अधिक से अधिक रोपण आवश्यक है।

वायु की शुद्धता के लिए वैदिक साहित्य में यज्ञ का महत्व विशेष रूप से माना गया है। यज्ञ वायु शुद्धि के लिए अत्यंत प्रभावशाली है। यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसमें विभिन्न औषधियों व वनस्पतियों के उपयोग से स्वास्थ्य को बढ़ाने वाली वस्तुओं का वाष्पीकरण होता है। यज्ञ से वायुमंडल पर विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। यज्ञ को और प्रभावशाली बनाने के लिए वेदों में यज्ञ के साथ मंत्र उच्चारण का महत्व बताया गया है। मंत्र के साथ

याज्ञिक प्रक्रिया वायु शुद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः वैदिक शिक्षा के अनुसार हानिकारक केमिकल और जहरीली गैसों से वायु को प्रदूषित न करते हुए यज्ञ आदि के द्वारा वायु को शुद्ध रखने का का प्रयास करना चाहिए।

जल शुद्धि– शुद्ध जल पर सभी का अधिकार है, परंतु अमृत रूप स्वच्छ जल को सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी भी है। प्राकृतिक जल स्त्रोत्र जैसे नदी, तालाब, झील, भूजल सभी जीव जंतुओं को खनिज पदार्थों व दुर्लभ गुणों से युक्त जल प्रदान करते हैं। परंतु आज इन जल स्त्रोतों की स्थिति चिंताजनक है, इस जल को पुनः संरक्षित करने के लिए इन्हें स्वच्छ रखने का संकल्प हम सभी को करना होगा। वेदों में प्राकृतिक स्त्रोत से प्राप्त जल तथा विभिन्न प्रकार के मिट्टी, लोहा, तांबा, सोना, चांदी, आदि से बने पात्र में रखे हुए जल लाभकारी खनिजों, औषधियों तथा गंधक लोह, अभ्रक आदि से संयुक्त होने के कारण सबके लिए पोषण तथा रोगनाशक है।

ऋग्वेद में नदियों को माता के समान सम्मान दिया गया है–

ता अस्मस्यं पयसा पिन्वमाना शिवादेवीरशिवद।
भवन्त सर्वा नद्: अशीमिहा भवन्तु। (ऋग्वेद 7.50.4)

नदियां जल का वहन करती हुई, सभी प्राणिमात्र को तृप्त करती हैं। भोजनादि प्रदान करती हैं। आनन्द को बढ़ाने वाली तथा अन्नादि वनस्पति से प्रेम करने वाली हैं।

जल संरक्षण पर बल देते हुए ऋग्वेद में कहा गया है कि जल हमारी माता के समान है। जल घृत के समान हमें शक्तिशाली और उत्तम बनाये। उत्तम जल जिस रूप में जहां कहीं भी हो वे रक्षा करने योग्य हैं–

आपो अस्मान्मातरः शुन्ध्यन्तु धृतेन ना धृत्व्वः पुनन्तु। (ऋग्वेद 10.17.10)

जल संरक्षण के लिए वेदों में वर्षा जल तथा बहते हुए जल के विषय में कहा है कि हे मनुष्य! वर्षा जल तथा अन्य स्रोतों से निकलने वाला जल जैसे कुएं, बावडियां आदि तथा फैले हुए जल तालाबादि के जल में बहुत

पोषण होता है। इस प्रकार के पोषक युक्त जल का प्रयोग करके वेगवान और शक्तिमान बनना चाहिए–

अपामहं दिव्यानामपां स्रोतस्यानाम्
उपामह प्रण्जनेदश्वा भवय वाजिनः। (अथर्ववेद 19.1.4)

जल को प्रदूषित होने से बचाना चाहिए तथा हमारे प्रयास इस तरह से रहें कि जल प्रदूषित न करें। इस विषय में यजुर्वेद में कहा गया है कि जल को नष्ट मत करो–

मा आपो हिंसी। (यजुर्वेद 6.22)

शुद्ध जल अमृत के समान जीवन दायक व औषधि के समान जीवन रक्षक है। वेदों में जल को शुद्ध रखने तथा शुद्ध करने के उपाय वर्णित हैं। इसमें वरुण, विश्वादेवारू तथा वैश्वानर आदि देवों को अग्नि प्रविष्ठ बताया है। ये सभी प्रदूषित जल को शुद्ध करने में सहायक हैं। यजुर्वेद में मंत्रों द्वारा या प्राकृतिक रूप में सूर्य ताप को जल में पहुंचाना भी जल को शुद्ध करने का एक विशिष्ट उपाय बताया है। कुश (एक घास) भी जल को शुद्ध करने में सहायक होती है ।

भूमि शुद्धि– यजुर्वेद में कहा गया है कि हे पृथ्वी माता ! न हम तुम्हारी हिंसा करें न तुम हमारी हिंसा करो। यहां भूमि की हिंसा का अर्थ मानव द्वारा किया गया भूमि दोहन, भूमि प्रदूषण व वनों को उजाड़ देना है। इसका मुख्य कारण अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि, मानव की अधिक से अधिक प्राप्त और संग्रह करने की भावना है। पृथ्वी का भूभाग सीमित है। उसमे जीव जंतुओं, वनस्पतियों और अन्य प्राकृतिक वस्तुओं का संतुलन अनिवार्य है। आज मानव जाति के कार्यों से प्रकृति असंतुलित हो रही है। दुर्लभ वनस्पति युक्त वन खत्म होने की कगार पर हैं, खेतों में एक ही प्रकार की फसल भूमि पर लगातार खेती करने से, ज्यादा उर्वरक और कीटनाशकों का प्रयोग करने से मिट्टी बेजान हो चुकी है। भूमि माता की यह दुर्दशा असहनीय है। आज आवश्यकता है कि हम भूमि में पैदा होने वाले वनस्पतियों

और वृक्षों को न काटे, बचे हुए वनों को न उजाड़े। एक ही स्थान पर निरंतर समान फसल न उगाएं। भूमि को संरक्षित करें।

वेदों में भूमि की माता रूप में स्तुति की गई है–

'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः'।

समय समय पर इसको स्वच्छ रखने के लिए और वनों और वनस्पतियों से इसे युक्त रखने की कामना की गई है। वेदों में भूमि संरक्षण के उपायों का भी वर्णन मिलता है। भूमि की नष्ट हुई उपजाऊ शक्ति को पुनः स्थापित करने के लिए– कुछ समय के लिए भूमि को खाली छोड़ देना चाहिए। शुद्ध वायु, सूर्य की किरणें तथा वर्षा से उसकी पोषकता को पुनः संस्थापित किया जा सकता है ।

निष्कर्ष

वैदिक काल में ऋषियों ने पृथ्वी, जल अग्नि, वायु तथा वनस्पति की देवता मानकर प्राकृतिक स्रोतों और प्राकृतिक शक्तियों की रक्षा तथा इन्हें स्वच्छ रखने की कामना की थी। पर्यावरण संरक्षण के लिए इसके प्रति संवेदनशीलता की भावना आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण के लिए किया गया कार्य इस प्रकृति के प्रति सद्भावना रखते हुए किया जाए, तब ही सफल होगा । पेड़ लगाकर छोड़ देने से वह कभी प्रकृति में वायु शुद्धि नहीं कर सकेगा, नदी तालाब आदि जल स्त्रोतों को एक बार साफ कर देने से वे पुनः पवित्र नही हो जाएंगी। लेकिन जब हम एक उगाए गए पेड़ को अपने समझकर उसकी देखभाल करेंगे,जल स्रोतों को साफ करके उन्हें स्वच्छ रखना अपना दायित्व बना लेंगे, उस समय से ही पर्यावरण स्वस्थ व संरक्षित होना आरंभ हो जाएगा।

प्रकृति में सेल्फ हीलिंग पावर होती है। वह अपने आप को पुनः संरक्षित कर सकती है। हमे आवश्यकता है तो इसके अनुकूल रहने की तथा पर्यावरणीय नैतिकता को अपनाने की। विभिन्न वैदिक सूक्त हमे पर्यावरण

के प्रत्येक तत्व के महत्व पर दृष्टि डालते हुए उनके प्रति शुभकामना रखने की प्रेरणा देते हैं।

आज हमारा देश विश्वबंधु के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। इसके साथ हमे आवश्यकता है पर्यावरण बंधु बनने की, पर्यावरण संबंधी वैदिक ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा को संपूर्ण विश्व तक पहुंचाने की, जिससे पुनः वैदिक काल के समान प्रकृति अपने समृद्धतम रूप में हो। मनुष्य और प्रकृति का संबंध समरसता पूर्ण हो, आज इस तथ्य को स्वीकार करने की नितांत आवश्यकता है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ स्वयं के जीवन के साथ खिलवाड़ है। प्रकृति और प्रगति दोनों में संतुलन बनाकर चलना ही समय की आवश्यकता है। जब हमारा चिंतन, ज्ञान और कर्म वैदिक विचारधारा का अनुसरण करेगा, तभी हम सुखी स्वस्थ और समृद्धशाली होकर जीवन को स्वाभाविक रूप में जी सकेंगे। वेदोक्त शिक्षा के अनुरूप प्रकृति के प्रति कृतज्ञता की भावना से किया गया संरक्षण ही प्रकृति को पुनः स्वस्थ, शुद्ध व समृद्ध बना सकता है।

संदर्भ

1. कुलश्रेष्ठ सुषमा, संस्कृत साहित्य एवं पर्यावरण, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
2. गोडिका निर्मला, पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण, अविष्कार पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
3. द्विवेदी कपिलदेव, वेदों में लोक कल्याण, विश्व भारती अनुसंधान परिषद्, भदोही, ज्ञानपुर।
4. द्विवेदी कपिलदेव, वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, विश्व भारती अनुसंधान परिषद् भदोही, ज्ञानपुर।
5. वाजपेयी दीप्ति, संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चेतना, मुहिम प्रकाशन, दिल्ली
6. व्यास किशोरीलाल, भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
7. त्रिपाठी विधाधर, अभिनन्दन भारती एवं संस्कृत वांड्.मय में पर्यावरण चेतना, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् भदोही, ज्ञानपुर।

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

पर्यावरण शिक्षाः समकालीन समाज में इसकी भूमिका और लाभ

- सपना–**Author**
- सोनम–**Author**
- स्वाति–**Author**
- लेफ्टि. (डॉ.) मीनाक्षी लोहनी–**Corresponding Author**

परिचय

हमारे आसपास का वातावरण हमारे जीवन को प्रभावित करता है। हमारा कमरा, घर, गाँव या शहर, परिवार और मित्र, हवा, पानी, सूरज की किरणें और वर्षा – सभी हमारे वातावरण का हिस्सा हैं। यहां तक कि दो व्यक्तियों का वातावरण भी अलग होता है। लेकिन ये वातावरण इतने गहरे से जुड़े हुए हैं कि हम सभी एक ही वातावरण से संबंधित हैं। इस अंतर्संबंध को–

- एम.ए. द्वितीय वर्ष, भूगोल, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- एम.ए. द्वितीय वर्ष, भूगोल, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- एम.ए. द्वितीय वर्ष, भूगोल, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

पारिस्थितिकी कहा जाता है। पारिस्थितिकी शब्द ग्रीक शब्द श्ओइकोसश् से लिया गया है, जिसका अर्थ है घर। इसलिए, पारिस्थितिकी साहित्यिक रूप से सभी जीवों के घरेलू परिस्थितियों से संबंधित विज्ञान है। पारिस्थितिकी जीवों और उनके वातावरण के बीच संबंधों से संबंधित है। पहले, पुराने दिनों में, मनुष्य और पौधों सहित सभी जीवों के बीच एक प्राकृतिक संतुलन बना रहता था। वे सामंजस्य में रहते थे और प्राकृतिक वातावरण में रहते थे। लेकिन हाल के वर्षों में, तेजी से औद्योगीकरण, शहरीकरण के कारण प्रकृति प्रभावित हुई है। वातावरण क्षतिग्रस्त हो गया है और असंतुलन और विषमता है। जल और वायु प्रदूषण व्यापक हो गया है क्योंकि पृथ्वी पर विशाल वनस्पतियों के विनाश के कारण। क्योंकि वन जल संरक्षण, वायु शुद्धिकरण और मानव जीवन के लिए कई उपयोगी चीजें प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एक और आपदा जो हमारे सामने है, वह तेजी से शहरीकरण के कारण है। शहरों और कस्बों में लोगों की जीवन स्थितियाँ खराब हो गई हैं। उद्योगों, बिजली संयंत्रों और मोटर वाहनों आदि के तेजी से विस्तार के कारण जल, वायु और ध्वनि प्रदूषण है। हर जगह प्रदूषण है। यह लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हुआ है। व्यक्तिगत विकास पर सभी प्रभाव वातावरण बनाते हैं। वातावरण व्यक्ति के विकास पर प्रभाव डालने वाली स्थितियों या अनुभवों का समूह है। इसलिए, व्यक्ति का वातावरण उसके चारों ओर के सभी भौतिक और सामाजिक कारकों से बनता है जो उसके जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। विभिन्न पर्यावरणीय कारक आपस में जुड़े हुए हैं। भौतिक वातावरण जीवित और निर्जीव, भौगोलिक विशेषताएं, टोपोग्राफी और जलवायु परिस्थितियां, मानव निर्मित सुविधाएं जैसे कि इमारतें, सड़कें, परिवहन और स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण सुविधाएं शामिल हैं। सामाजिक वातावरण परिवार और समुदाय जीवन, मेले और त्योहार, उत्पादन और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के तरीके शामिल हैं। विभिन्न पर्यावरणीय कारक आपस में जुड़े हुए हैं। हम जानते हैं कि किसी व्यक्ति के पर्यावरण में सभी भौतिक और सामाजिक

कारक शामिल होते हैं। तभी व्यक्ति अपनी धरती पर जीवित रह सकता है। इस कारण हमारे पर्यावरण की रक्षा करना जरूरी है।

शिक्षा की भूमिका

पर्यावरण संरक्षण के संबंध में उचित जागरूकता और पर्याप्त ज्ञान और कौशल पैदा करने के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन और साधन माना जाता है। इसलिए, पर्यावरण के बारे में शिक्षा, पर्यावरण के लिए शिक्षा और पर्यावरण के माध्यम से शिक्षा विकसित करना आवश्यक महसूस किया गया है। तो कुल मिलाकर, यह पर्यावरण शिक्षा होगी।

1. पर्यावरण शिक्षा को सभी स्तरों पर औपचारिक शिक्षा की संपूर्ण प्रणाली में एकीकृत किया जाना चाहिए।
2 पर्यावरण शिक्षा एक समग्र परिप्रेक्ष्य अपनाती है जो विशेष समस्याओं के पारिस्थितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य पहलुओं की जांच करेगी।
3. पर्यावरण शिक्षा वास्तविक जीवन से संबंधित व्यावहारिक समस्याओं पर केन्द्रित होनी चाहिए।
4. पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य मूल्यों की भावना का निर्माण करना होना चाहिए।

पर्यावरण शिक्षा के घटक

- पर्यावरण और पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता।
- पर्यावरण और पर्यावरणीय चुनौतियों का ज्ञान और समझ।
- पर्यावरण के प्रति चिंता का दृष्टिकोण और पर्यावरणीय गुणवत्ता को सुधारने या बनाए रखने के लिए प्रेरणा।

- पर्यावरणीय चुनौतियों की पहचान करने और उन्हें हल करने में मदद करने का कौशल।
- उन गतिविधियों में भागीदारी जो पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान की ओर ले जाती हैं।

सतत विकास और पर्यावरणीय स्थिरता

दुर्भाग्य से, अनुभव से पता चलता है कि पर्यावरण समुदाय में ऐसे कई लोग हैं जो सतत विकास का सही अर्थ नहीं समझते हैं। इसके अलावा, पर्यावरण समुदाय को अपनी सामूहिक व्यावसायिक जिम्मेदारी का निर्वहन ऐसे तरीकों से करना चाहिए जो सतत विकास और वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता की मूल आवश्यकताओं के अनुरूप हों। सतत विकास की सामान्य परिभाषा इस प्रकार है–

''विकास जो भविष्य की पीढ़ी की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।''

संसाधन आधार अटूट नहीं है, इसका मतलब यह है कि कुछ सीमा मौजूद होनी चाहिए जिसके परे खुले अंत की आपूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की दर और वस्तुओं और सेवाओं की बढ़ती मांग भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता करेगी। इसलिए, यह स्पष्ट है कि सतत विकास आर्थिक विकास है जो विशेष रूप से प्राकृतिक पर्यावरण की अखंडता और स्थिरता पर निर्भर करता है और दृढ़ता से निहित है। राष्ट्रीय संसाधन प्रबंधन पिछले तीन दशकों में सतत विकास की विकसित होती अवधारणा के अनुरूप उभरा है। यदि प्रकृति का संसाधन आधार अपूरणीय रूप से समाप्त हो गया है या अपरिवर्तनीय रूप से नष्ट हो गया है, तो सामाजिक कल्याण के लिए धन सृजन के साधन गंभीर रूप से खतरे में पड़ जाएंगे। पर्यावरणीय स्थिरता के बिना, सतत विकास हासिल करना असंभव है।

सतत विकास के लिए परिचालन परिभाषा

वर्तमान में, सतत विकास के लिए कोई अद्वितीय परिचालन परिभाषा नहीं है। इसका कारण यह है कि किसी निश्चित समय में सतत विकास की दिशा में विभिन्न देशों या क्षेत्रों द्वारा की गई सापेक्ष प्रगति की तुलना करने या समय के साथ किसी देश या क्षेत्र द्वारा की गई प्रगति को मापने के लिए कोई एकल संकेतक नहीं है। यह कमी वैश्विक सतत विकास की दिशा में प्रगति में बाधा बन रही है।

सतत वैश्विक विकास की परिचालन परिभाषाः ''स्थायी वैश्विक विकास के लिए आवश्यक है कि जो लोग अधिक समृद्ध हैं वे ग्रह के पारिस्थितिक साधनों के भीतर जीवन शैली अपनाएं – उदाहरण के लिए, ऊर्जा के उपयोग में।''

इसलिए, यदि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय वैश्विक सतत विकास की एक मामूली डिग्री भी प्राप्त करने के बारे में गंभीर है, तो इसकी परिचालन परिभाषा राष्ट्रों के भीतर और उनके बीच समृद्ध लोगों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खपत में कमी पर आधारित होनी चाहिए। इस तरह की परिभाषा सतत विकास को मापने के लिए एक सरल और अद्वितीय संकेतक विकसित करने और राष्ट्रों के बीच धन और संसाधनों के अधिक न्यायसंगत वितरण दोनों का मार्ग प्रशस्त करेगी। सतत विकास की एक मामूली डिग्री हासिल करने के लिए भी उत्पादन और खपत पर अंकुश लगाया जाना चाहिए और औपचारिक शिक्षा के माध्यम से खपत को कम करने के लिए दृढ़ प्रयास किए जाने चाहिए। प्रख्यात फ्रांसीसी मानवविज्ञानी लेवी–स्ट्रॉस का विचार है कि ''मनुष्य ब्रह्मांड का एक विशेषाधिकार प्राप्त निवासी नहीं है, बल्कि केवल एक विलुप्त प्रजाति है जो विलुप्त होने पर अपने अस्तित्व के केवल कुछ धुंधले निशान छोड़ेगा''।

पर्यावरणीय स्थिरता प्रदान करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका

अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समुदाय में यह दृढ़ विश्वास है कि पर्यावरणीय समस्याओं को केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग से ही हल किया जा सकता है और सतत विकास और वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता हासिल की जा सकती है। लेकिन सतत विकास की दिशा में प्रगति प्रकृति और पर्यावरण के प्रति समाज के दृष्टिकोण में बुनियादी बदलाव पर निर्भर है। केवल इस तरह के ज्ञान के साथ ही समृद्ध लोग पृथ्वी की पारिस्थितिक क्षमता के अनुरूप कम उपभोग वाली जीवनशैली अपनाने को तैयार होंगे। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, चाहे कितने भी उन्नत क्यों न हों, इस मामले में मदद नहीं कर सकते। इसलिए, दृष्टिकोण में इस परिवर्तन को लाने के लिए नैतिक और नैतिक दर्शन में शिक्षा की आवश्यकता है। युवा मन में पर्यावरण का सम्मान करने वाले नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

संचार के माध्यम से पर्यावरणीय व्यवहार परिवर्तन को समझना

कई सम्मेलनों में यह माना गया कि पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक समाधानों के अलावा यह आवश्यक है कि हर कोई पर्यावरण के प्रति अलग–अलग व्यवहार अपनाए। 'जिम्मेदार पर्यावरणीय व्यवहार' विकसित करना पर्यावरण शिक्षा के कार्यों में से एक बन गया। दुर्भाग्य से पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से व्यवहार बदलना एक कठिन कार्य साबित हुआ। एक संचार दृष्टिकोण हमें जिम्मेदार पर्यावरणीय व्यवहार का एक नया दृष्टिकोण दे सकता है। यह हमें न केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी इस पर विचार करने की अनुमति देता है।

ज्ञान को दृष्टिकोण और दृष्टिकोण को व्यवहार से जोड़ने वाला पहला दृष्टिकोण व्यवहार में गलत साबित हुआ और पर्यावरण शिक्षा को अपनी प्रथाओं को बदलने और विकसित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। कई

पर्यावरण शिक्षा शोधकर्ता और व्यवसायी पर्यावरण शिक्षा में सुधार के लिए जिम्मेदार पर्यावरणीय व्यवहार को समझने के लिए खुद को समर्पित करते हैं। 'जिम्मेदार पर्यावरणीय व्यवहार' को ''समाज के भीतर एक व्यक्ति के संपूर्ण कार्यों के रूप में परिभाषित किया गया है, जो सचेत तरीके से, इन कार्यों और पर्यावरण के बीच बारहमासी और सामंजस्यपूर्ण संबंध को ध्यान में रखता है''। संचार समाज में प्रक्रियाओं तक पहुंचने और समझाने का एक तरीका है और इसे ''किसी दिए गए समाज के व्यक्तिगत और समूह के सदस्यों के बीच विनिमय प्रक्रियाओं'' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

पर्यावरण शिक्षा का लाभ

1. कल्पना और उत्साह बढ़ जाता है

पर्यावरण शिक्षा एक इंटरैक्टिव शिक्षा है जो कल्पना को जागृत करती है और रचनात्मकता को खोलती है। जब पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाता है, तो छात्र अधिक उत्साही होते हैं और सीखने में लगे रहते हैं, जिससे मुख्य शैक्षणिक क्षेत्रों में छात्रों की उपलब्धि बढ़ जाती है।

2. अनुभवात्मक सीखने का अवसर

पर्यावरण शिक्षा न केवल कक्षा के बाहर अनुभवात्मक सीखने का अवसर देती है, बल्कि यह छात्रों को संबंध बनाने और अपनी सीख को वास्तविक दुनिया में लागू करने में सक्षम बनाती है। पर्यावरण शिक्षा शिक्षार्थियों को सामाजिक, पारिस्थितिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों के अंतर्संबंध को देखने में मदद करती है।

3. आलोचनात्मक और रचनात्मक कौशल को बढ़ाया जाता है

छात्रों को शोध करने, जांच करने, चीजें कैसे और क्यों होती हैं, और जटिल पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में अपने निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। महत्वपूर्ण और रचनात्मक सोच कौशल को विकसित और बढ़ाकर, पर्यावरण

शिक्षा सूचित उपभोक्ताओं, श्रमिकों, साथ ही नीति या निर्णय निर्माताओं की एक नई पीढ़ी को बढ़ावा देने मेंमदद करती है

4. सहनशीलता और समझ का समर्थन

पर्यावरण शिक्षा छात्रों को पूरी तस्वीर समझने के लिए मुद्दों के विभिन्न पक्षों की जांच करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह विभिन्न दृष्टिकोणों और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

5. स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित

पर्यावरण शिक्षा छात्रों को बाहर और सक्रिय बनाती है, और आज हम बच्चों में जो कुछ स्वास्थ्य समस्याएं देख रहे हैं, जैसे मोटापा, ध्यान की कमी संबंधी विकार और अवसाद, उन्हें संबोधित करने में मदद करती है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से अक्सर अच्छे पोषण पर जोर दिया जाता है और प्रकृति में अधिक समय बिताने से तनाव कम होता है।

6. समुदाय मजबूत होते हैं

पर्यावरण शिक्षा सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से स्थान और संबंध की भावना को बढ़ावा देती है। जब छात्र अधिक जानने या अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए कार्रवाई करने का निर्णय लेते हैं, तो वे अपने पड़ोस को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय मुद्दों को समझने और उनका समाधान करने के लिए समुदाय को एक साथ लाने में मदद करने के लिए सामुदायिक विशेषज्ञों, दानदाताओं, स्वयंसेवकों और स्थानीय सुविधाओं तक पहुंचते हैं।

7. पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए जिम्मेदार

पर्यावरण शिक्षा छात्रों को यह समझने में मदद करती है कि उनके निर्णय और कार्य पर्यावरण को कैसे प्रभावित करते हैं, जटिल पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल का निर्माण करते हैं, साथ ही हम भविष्य के लिए अपने पर्यावरण को स्वस्थ और टिकाऊ बनाए

रखने के लिए कैसे कार्रवाई कर सकते हैं। कई पर्यावरण शैक्षिक संगठनों द्वारा पेश किए जाने वाले सेवा–शिक्षण कार्यक्रम छात्रों और शिक्षकों को अनुदान और अन्य संसाधनों के माध्यम से सहायता प्रदान करते हैं

निष्कर्ष

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय वैश्विक पर्यावरणीय स्थिरता और सतत विकास की एक मामूली डिग्री भी हासिल करने के लिए गंभीर है। संपन्न लोगों द्वारा उपभोग पर अंकुश लगाने के लिए प्रभावी नीतियां लागू की जानी चाहिए। हमें युवा नवोदित इंजीनियरों और अन्य विशिष्ट क्षेत्र के छात्रों में नैतिक मूल्यों का सम्मान करने के लिए अभी भी वास्तविक वातावरण में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है, जो योजनाकारों, डिजाइनरों, बिल्डरों और निर्णय निर्माताओं के रूप में अपने पेशेवर करियर में, प्रकृति और प्रकृति पर्यावरण पर मानव जाति के प्रभाव के लिए काफी जिम्मेदारी निभाएंगे।

सन्दर्भ

1. लाहिड़ी, सुदेशना, पर्यावरण शिक्षा, स्टुडेरा प्रेस 2010
2. स्टीवेन्सन, ब्रॉडी, डिलन, वाल्स, पर्यावरण शिक्षा पर शोध, रूटलेज प्रकाशन. 2012
3. रीड, एलन और डिलियन जस्टिन, पर्यावरण शिक्षा, रूटलेज प्रकाशन। 2016
4. पिन, डेविड, ई., पर्यावरण शिक्षाः परिप्रेक्ष्य, चुनौतियाँ और अवसर, नोवा साइंस पब्लिशर्स, 2017
5. शिमरे, चोंग, पर्यावरण शिक्षा शिक्षण, भारत में रुझान और प्रथाएँ। ऋषि प्रकाशन, 2019

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग की प्रासंगिकता

• नीतू पाल–Author

• डॉ. नीलम शर्मा–Corresponding Author

श्रीमद्भगवद्गीता भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में अत्यन्त सुप्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण आध्यात्मिक ग्रन्थ है। यह संपूर्ण मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। श्रीमद्भगवद्गीता में कुल अठारह अध्याय एवं सात सौ श्लोकों में किंकर्तव्यविमूढ़ अर्जुन को श्री कृष्ण के द्वारा उसकी बुद्धि के प्रकाशनार्थ दिए गए उपदेशों का श्लोकबद्ध संग्रह है। गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग व राजयोग के अतिरिक्त समत्वयोग, संन्यास योग, सांख्य योग, श्रद्धात्रय योग व मोक्ष का अद्भुत संगम है। श्रीमद्भगवद्गीता प्रत्येक व्यक्ति से अपने कर्त्तव्य कर्मों, सामाजिक कर्तव्यों एवं स्वधर्म के सम्पादन का आग्रह करती है। इसीलिए यह अकर्मण्यता का विरोध करती है। वह सफलता और असफलता सुख और दुःख, जय और पराजय, लाभ और हानि, इन निम्नतर प्रवृतियों पर विजय प्राप्त करने का आदेश देती है। इसे गीता के कर्म योग के माध्यम से समझा जा सकता है। कर्मयोग अर्थात् कर्म में लीन होना। कर्मों का इस कुशलता से संपादन करना कि कर्म भी हो जाए और वे बंधन का कारण भी न बने।

• एम.ए. प्रथम वर्ष, संस्कृत, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर।
• असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर।

योगः कर्मसु कौशलम्। (श्रीमद्भगवद्गीता 2/50)

कर्म योग गीता का मुख्य या प्रधान विषय है। कर्मयोग के संबंध में श्रीमद्भगवद्गीता की सर्वप्रथम मान्यता यह है कि सभी कर्मों का त्याग करना संभव नहीं है।

न हि कश्चित्क्षमणपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सवर्रू प्रकृतिजैगुणैः ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 3/5)

मनुष्य एक क्षण भी कर्म किए बिना नहीं रहता। सभी अज्ञानी जीव प्रकृति से उत्पन्न सत्व, रज और तम, इन तीन गुणों से नियंत्रित होकर, परवश हुए कर्मों में प्रवृत्त किए जाते हैं। कर्म किए बिना जीवन रक्षा व शरीर का भरण पोषण भी नहीं हो सकता है।। दूसरा यदि सब कर्म करना छोड़ देंगे तो सृष्टि चक्र चलना बंद हो जाएगा। मनुष्य यदि बाह्य दृष्टि से कर्म न भी करे और विषयों में लिप्त न हो तो भी वह उनका मन से चिंतन करता है। इस प्रकार का मनुष्य मूढ़ और मिथ्या आचरण करनेवाला कहा गया है। कर्म करना मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उसके बिना शरीर का निर्वाह भी संभव नहीं है। भगवान कृष्ण स्वयं कहते हैं कि तीनों लोकों में उनका कोई भी कर्तव्य नहीं है। उन्हें कोई भी अप्राप्त वस्तु प्राप्त करनी नहीं रहती। फिर भी वे कर्म में संलग्न रहते हैं। यदि वे कर्म न करें तो मनुष्य भी उनके चलाए हुए मार्ग का अनुसरण करने से निष्क्रिय हो जाएँगे। इससे लोकस्थिति के लिए किए जानेवाले कर्मों का अभाव हो जाएगा जिसके फलस्वरूप सारी प्रजा नष्ट हो जाएगी। इसलिए आत्मज्ञानी मनुष्य को भी जो प्रकृति के बंधन से मुक्त हो चुका है, सदा कर्म करते रहना चाहिए। अज्ञानी मनुष्य जिस प्रकार फलप्राप्ति की आकांक्षा से कर्म करता है उसी प्रकार आत्मज्ञानी को लोकसंग्रह के लिए आसक्तिरहित होकर कर्म करना चाहिए। इस प्रकार आत्मज्ञान से संपन्न व्यक्ति ही गीता के अनुसार, वास्तविक रूप से कर्मयोगी हो सकता है। धर्माचरण करके पापों का क्षय करना और अपने विकास की ओर बढ़ना परन्तु "फल की आकांक्षा न रखते हुए कर्म करना" ही कर्मयोग है। कर्मयोग हमारे आत्मज्ञान को जागृत करता

है। इसके बाद हम न केवल अपने वर्तमान जीवन के उद्देश्यों को बल्कि जीवन के बाद की अपनी गति का पूर्वाभास प्राप्त कर सकते हैं। इस योग में कर्म के द्वारा ईश्वर की प्राप्ति की जाती हैं। गीता में भगवान निरंतर कर्म करने की शिक्षा देते हैं।

कर्म दो प्रकार के होते हैं– सकाम और निष्काम।

सकाम कर्म– जहाँ बंधन के कारण हैं वहीं निष्काम कर्म बंधन मुक्त करते हैं। किसी भी कामना से प्रेरित होकर जो शारीरिक या मानसिक कर्म किए जाते है, उन्हें सकाम कर्म कहते हैं। उदाहरण स्त्री, पुरुष, धन पुत्र आदि के लिए किया गया कर्म सकाम कर्म कहलाता है। कामना प्रेरित या फलाकांक्षा के वशीभूत कर्मों का शुभ या अशुभ फल भोगना पड़ता हैं। कामना या इच्छा कभी समाप्त नहीं होती मनुष्य पुनः कामना से आक्रान्त होकर कर्म करता रहता है और उनका शुभ अशुभ फल भोक्ता रहता है। इस प्रकार कर्म की अनवरत धारा चलती रहती है। इस कर्म बंधन के कारण ही मनुष्य नानायोनियों में भटकता रहता है और दुख भोगता है। श्वेताश्वेतरोपनिषद् (5/11) में सकाम कर्म को ही नानायोनियों में भ्रमण का मूल कारण बताया गया है।

निष्काम कर्म– द्वितीय प्रकार का कर्म निष्काम कर्म है। इसमें कामनाओं का सर्वथा अभाव रहता है। जिसके कारण निष्काम कर्मों से बंधन नहीं होता क्योंकि बन्धन का मूल कारण कामना या आसक्ति का यहां अभाव है है। गीता में कर्मयोग से तात्पर्य निष्काम कर्म से ही है । निष्काम कर्मतृष्णा रहित है। तृष्णा के अभाव में कर्म करता हुआ मनुष्य फल का भोगी नहीं होता। निष्काम कर्म ही गीता मेंकर्मयोग कहा गया है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा, ते सङ्गोऽस्तवकर्मणि॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 2/47)

मनुष्य का केवल कर्ममात्र में अधिकार है, कर्मफल में नहीं। इसलिए मनुष्य को कभी भी कर्मों के फल का हेतु नहीं बनना है। अर्थात् सदैव वासना से

रहित होकर कम करना है साथ ही कर्महीन भी नहीं होना है अर्थात अक्रियता में मनुष्य की आसक्ति नहीं होनी चाहिए।

गीता में कहा गया है कि मन का समत्व भाव ही योग है जिसमें मनुष्य सुख–दुःख, लाभ–हानि, जय–पराजय, संयोग–वियोग को समान भाव से चित्त में ग्रहण करता है। कर्म–फल का त्याग कर धर्मनिरपेक्ष कार्य का सम्पादन भी पूजा के समान हो जाता है। संसार का कोई कार्य ईश्वर से अलग नहीं है। इसलिए कार्य की प्रकृति कोई भी हो निष्काम कर्म सदा ईश्वर को ही समर्पित हो जाता है। पुनर्जन्म का कारण वासनाओं या अतृप्त कामनाओं का संचय है। कर्मयोगी कर्मफल के चक्कर में ही नहीं पड़ता, अतरू वासनाओं का संचय भी नहीं होता। इस प्रकार कर्मयोगी पुनर्जन्म के बन्धन से भी मुक्त हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहां गया है कि कर्म में आसक्ति का त्याग करो सिद्धि और असिद्धि में संतुलित रहो सफलता और सफलता में समभाव रखना समत्व कहलाता है और यही समत्व योग है –

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।। श्रीमद्भगवद्गीता 2.48

अर्जुन को निमित्त बनाकर भगवान संसार को उपदेश दे रहे हैं कि तू कर्म करने में ही स्वतंत्र है फल भोगने में नहीं मनुष्य के कौन–कौन से कर्म से क्या फल है और वह फल उसे किस जन्म में प्राप्त होगा, इसका ज्ञान मनुष्य को नहीं है। फल का विधान विधाता के अधीन है।

निष्काम कर्म के दो अंग है कर्तृत्व और ममत्व का त्याग एवं आसक्ति या तृष्णा का त्याग। किसी भी शारीरिक या मानसिक कर्म में कर्तापन का अभाव तथा कामना का अभाव निष्काम कर्म कहलाता है। आसक्ति एवं अहंभाव न रखते हुए कर्म करना निष्काम कर्म है। निष्काम कर्म बंधन का साधक नहीं बाधक है। जिस प्रकार बुझे हुए बीज में वपन की शक्ति नहीं होती उसी प्रकार द्वेषभाव से रहित कर्म में बंधन की शक्ति नहीं होती। इस

प्रकार के कर्म करता हुआ मनुष्य अकर्ता ही रहता है क्योंकि इनमें फलो त्पादिका शक्ति नहीं होती है ।

प्रश्न यह है कि कर्म करने के लिए तो प्रेरणा की आवश्यकता होती है। प्रेरणा के बिना तो कर्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि से असंभव है। कामना रहित कर्म तो हो ही नहीं सकता। यदि मनुष्य को कोई कामना ही नहीं है तो वह कर्म क्यों करें? इस संदर्भ में पूर्व में विचार किया जा चुका है कि निष्काम कर्म के दो अंग है कर्तापन और आसक्ति। इन दोनों का अभाव संभव है। अतः निष्काम कर्म भी संभव है। गीता में स्वयं भगवान ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है कर्तापन का अभाव तभी हो सकता है जब मनुष्य समझे कि कर्म का कर्ता मैं नहीं। कर्म तो प्रकृति के गुणों के द्वारा करवाया जाता है। अतः ज्ञानी मनुष्य सभी कर्मों को प्रकृति के गुणों के द्वारा कृत मानता है–

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 3/27)

प्रकृति के तीन गुण हैं–सत्व, रज, तम। इन तीनों से ही मन, बुद्धि, अहंकार श्रोत्रादि दस इंद्रियां, शब्दादि पांच विषय उत्पन्न होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण अंतःकरण और इंद्रियां द्वारा विषयों का ग्रहण करना आदि कार्य किए जाते हैं। अज्ञानी मनुष्य स्वयं को कर्मों का कर्ता समझता है। अतः मनुष्य में कर्तृत्व का अभिमान अज्ञान के कारण ही है।

यहां जिज्ञासा होती है फिर कर्म करते हुए कैसे कर्म के अभिमान से रहित हुआ जाए। इसका समाधान श्रीमद्भगवद्गीता में किया गया है कि आसक्ति का त्याग करने के लिए अपने किए हुए कर्म ईश्वर को समर्पित कर देने चाहिए।

मयि सर्वाणि कर्माणि सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ श्रीमद्भगवद्गीता 3.30

कर्मयोगी कर्म का त्याग नहीं करता है वह केवल कर्मफल का त्याग करता है और कर्मजनित दुःखों से मुक्त हो जाता है। उसकी स्थिति इस संसार में एक दाता के समान है जो कुछ प्राप्त करने की चिन्ता कभी नहीं करता है। वह जानता है कि वह कुछ दे रहा है और बदले में कुछ माँगता नहीं और इसीलिए वह दुःख के चंगुल में नहीं पड़ता। वह जानता है कि दुःख का बन्धन 'आसक्ति' की प्रतिक्रिया का ही फल हुआ करता है। इस प्रकार अनासक्त होकर ईश्वरार्थ कार्य करने वाले व्यक्ति को दोष नहीं लगता है और वह शुभ अशुभ फल से परे होता है –

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता 5/10)

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार जो कर्म निष्काम भाव से ईश्वर के लिए जाते हैं वे बंधन उत्पन्न नहीं करते। वे मोक्षरूप परमपद की प्राप्ति में सहायक होते हैं। इस प्रकार कर्मफल तथा आसक्ति से रहित होकर ईश्वर के लिए कर्म करना वास्तविक रूप से कर्मयोग है और इसका अनुसरण करने से मनुष्य को अभ्युदय तथा निःश्रेयस की प्राप्ति होती है।

निष्कर्ष

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार कर्मों से संन्यास लेने अथवा उनका परित्याग करने की अपेक्षा कर्मयोग अधिक श्रेयस्कर है। कर्मों का केवल परित्याग कर देने से मनुष्य सिद्धि अथवा परमपद नहीं प्राप्त करता। श्रीमद्भगवद्गीता का मुख्य वैशिष्ट्य है श्री कृष्ण के द्वारा अर्जुन को निष्काम कर्म का उपदेश। कर्म करते हुए भी कर्म के शुभ अशुभ फल के दोष से मनुष्य लिप्त न हो सके इसका सुंदर समाधान गीता निष्काम कर्मयोग के माध्यम से करती है। श्रीमद्भगवद्गीता कर्मयोग के माध्यम से मनुष्य को कर्मण्य बनाती है, मनुष्य सतत रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। यदि प्रत्येक मनुष्य अपने कर्तव्य कर्म का भली–भांति निर्वाह करता है तो एक सुंदर और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण होता है। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि फल की चिंता मत करो। यहां ध्यातव्य है कि जिस कार्य को सच्चे मन, ईमानदारी, पूर्ण

लगन और मेहनत से किया जाता हैं तो उसका परिणाम सोचने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। क्योंकि यदि मन संतुष्ट रहेगा कि हमने अपना शत प्रतिशत दिया है तो फिर परिणाम जो भी मिलेगा उस समय भी मन संतुष्ट रहेगा। साथ ही मनुष्य किसी भी परिस्थिति या असफलता में हताश निराश नहीं होगा क्योंकि केवल उसका कर्म करने पर ही अधिकार है, फल प्राप्ति विधाता के अधीन है, जिसमें बहुत सारे कारण कार्य करते हैं। कर्म योग की प्राप्ति के लिए भगवान कृष्ण कहते हैं कि मेरे लिए कर्म करो। जिन लोगों की ईश्वर में आस्था होती है वह ईश्वर को अर्पित करते हुए कर्म करते हैं तो ईश्वरार्पण भाव से कोई भी कार्य पूर्ण लगन निष्ठा और मेहनत से किया जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग का सार है कि जो भी हम कर्म करते हैं उससे मनुष्य जाति की मदद होनी चाहिए। निष्काम कर्मयोग के द्वारा मनुष्य समाज की सेवा में संलग्न हो सकता है। इस कर्मयोग के माध्यम से मनुष्य व्यक्तिगत रूप से शांत एवं सुखी रहता हुआ स्वस्थ समाज का निर्माण करता है साथ ही सम्यक रूप से कर्मयोग के पालन से वह परम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है अतः श्रीमद्भगवद्गीता का यह निष्काम कर्मयोग सभी देश काल और परिस्थितियों में सदैव प्रासंगिक है ।

सन्दर्भ

1. साधले शास्त्री, गजानन शम्भु (सम्पा), श्रीमद्भगवद्गीता (शांकररामानुजभाष्या द्येकादशटीकोपेता), परिमल पब्लिकेशन्स, 1985 , दिल्ली
2. अग्रवाल मदनमोहन (अनु.) (मधुसूदनसरस्वतीकृत गूढार्थदीपिकाव्याख्योपेता), चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 2005, दिल्ली
3. स्वामी रामसुखदास, गीता प्रबोधिनी गीता प्रेस, 2017, गोरखपुर
4. राधाकृष्णन् सर्वपल्ली, भगवद्गीता, हिंद पॉकेट बुक्स , 2004, नई दिल्ली
5. पाठक दिवाकर, भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1971, पटना
6. स्वामी किशोरदास ,भारतीय दर्शन और मुक्ति मीमांसा , स्वामी रामतीर्थ मिशन, 1998 देहरादून

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

साइबर क्राइमः चुनौतियाँ और समाधान

• आँचल नागर–**Author**

• डॉ. विनीता सिंह–**Corresponding Author**

परिचय

कंप्यूटर अपराधों में कंप्यूटर सिस्टम का उपयोग करके किए जाने वाले आपराधिक कार्य शामिल हैं, जो फिशिंग, जालसाजी, साइबर–धमकाने, अश्लील साहित्य, ई–मेल की बमबारी, स्पैम, गैरकानूनी लेखों की बिक्री आदि जैसे अपराधों को भी अंजाम देते हैं। हालांकि साइबर अपराध के अपने तरीके हैं इसका सामान्य अर्थ है 'एक कानूनी त्रुटि जिसे आपराधिक शिकायतों की सहायता से देखा जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप सजा हो सकती है'। साइबर सुरक्षा को एक ऐसे अपराध के रूप में वर्णित किया गया है जिसमें एक पीसी अपराध (पाइरेसी, फिशिंग, स्पैम) के अधीन है या अपराध करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है (बाल अश्लीलता, घृणा अपराध)। साइबर अपराधी व्यक्तिगत जानकारी, वैकल्पिक रहस्यों और तकनीकों तक पहुंच का अधिकार पाने के लिए –

• एम.ए., द्वितीय वर्ष, समाजशास्त्र, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

कंप्यूटर विज्ञान का उपयोग कर सकते हैं या दुर्भावनापूर्ण या शोषणकारी उद्देश्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं। साइबर सुरक्षा कानून साइबर–अपराध गतिविधियों में बड़े पैमाने पर होने वाली क्षति को रोकनेया कम करने में मदद करते हैं और इंटरनेट, वेबसाइटों के उपयोग के संबंध में सूचना, गोपनीयता, संचार, मानसिक संपत्ति (आईपी) और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तक पहुंच की रक्षा करते हैं। ईमेल, कंप्यूटर, सेल फोन, सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, जैसे रिकॉर्ड भंडारण उपकरण। इंटरनेट आगंतुकों में वृद्धि के कारण दुनिया भर में कानूनी मुद्दों की हिस्सेदारी बढ़ गई है। चूंकि साइबर कानूनी दिशानिर्देश क्षेत्राधिकार और देश के अनुसार भिन्न होते हैं, सॉफ्टवेयर एक उपक्रम है और क्षतिपूर्ति जुर्माने से लेकर कारावास तक होती है।

साइबर क्राइम की विशेषताएँ

1. **साइबर सुरक्षा की कमी:** साइबर अपराध में साइबर सुरक्षा की कमी एक बड़ा मुद्दा है। सब आसानी से या बेफिक्र होकर अपना कार्य कर सके, उनके लिए सुरक्षा की जानी चाहिए अपराधी को सजा देकर। उसे ऐसी सजा दी जानी चाहिए ताकि वह कोई और व्यक्ति से करने से पहले सोच और अपराध न करें।

2. **साइबर अपराधियों की बढ़ती संख्या:** साइबर अपराधों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ने से लोगों का कृप्यूटर पर ऑनलाइन कार्य करना खतरनाक हो गया। साइबर अपराध की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। सभी मनुष्य अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं।

3. **सोशल मीडिया का दुरुपयोग:** अपराध में हैकर्स सोशल मीडिया का गलत प्रयोग करते हैं। व्यक्तियों को हानि पहुंचाने, लोगों की आइडि पासवर्ड चोरी करके उसका गलत प्रयोग करके, उनका डाटा चोरी करके व्यक्ति को चोट पहुंचाते हैं। उनका कंप्यूटर और फोंस हैक करके उनके पर्सनल जानकारी हासिल करते हैं।

4. **आर्थिक नुकसानः** साइबर क्राइम से आर्थिक नुकसान हो सकता है जैसे कि ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर आतंकवाद मेरी जानकारी हासिल करना व्यक्ति को चोट पहुंचाना।

साइबर क्राइम के प्रकार

1. **जानकारी चोरी करनाः** किसी के भी कंप्यूटर से उसके पर्सनल इनफॉरमेशन निकलना जैसे कि प्रयोग करता का नाम या पासवर्ड उसका गलत उपयोग करना।

2. **जानकारी मिटानाः** किसी के भी कंप्यूटर लैपटॉप से उनके पर्सनल इनफॉरमेशन मिटाना उसकी जगह दूसरी इनफॉरमेशन डालना था कि उसको नुकसान हो सके उसे हानि पहुंचा सके।

3. **बदलाव करनाः** किसी की जानकारी में बदलाव करें उसकी जरूरत की चीजों में हेरा फेरी करना सही की जगह गलत चीजों का इस्तेमाल करना।

4. **स्पैम ईमेलः** आज के समय में अनेक प्रकार की ईमेल होते हैं जिसे कंपयूटर या फोंस को हानि पहुंच जाते हैं उन्हें इमेज से कंप्यूटर फोन में खराबी आ जाती है।

5. **हैकिंगः** वर्तमान समय में हैकिंग भी अधिक हो रही है कर सभी व्यक्तियों की आईडी हैक करके उसका गलत प्रयोग करते हैं उन्हें चोट पहुंच जाते हैं उनकी आईडी का पासवर्ड चोरी करना उसमें कुछ बदलाव करना उसका गलत प्रयोग करके उसे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाना।

6. **फर्जी बैंक कॉल्सः** वर्तमान समय में फर्जी बैंक कोर्स भी अधिक आने लगी है आपको फेक कॉल सफेद मैसेज प्राप्त होते हैं जो आपके बैंक जैसे लगे जिसमें आपसे कुछ पूछा जाए कि आपका एटीएम नंबर और पासवर्ड की आवश्यकता है और हमारे द्वारा यह जानकारी नहीं दी गई तो बोलते कि आपका अकाउंट बंद कर दिया जाएगा या इस

लिंक पर सूचना दे हमें याद करना होगा कि यह जानकारी कभी भी बैंक से नहीं दी जाती बैंक कभी कैसे जानकारी नहीं मांगता है।

7. **साइबर बुलीइंगः** वर्तमान समय में फेसबुक सोशल मीडिया जैसी नेटवर्किंग पर गलत कमेंट करना इंटरनेट पर धमकियां देना किसी की गलत बात का गलत मतलब निकालना धाम क्या देना किसी व्यक्ति को बिना वजह परेशान करना अक्सर बच्चे और लड़कियां इसका शिकार होती है इस समाज और समाज में रहने वाले व्यक्तियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है इस जीवन पर भी गलत प्रभाव पड़ता है अगर किसी बच्चे लड़की के पास धमकी वाले मैसेज या कॉल आते हैं तो मैं अपने परिवार के साथ शेयर ना करके खुद ही गलत कदम उठा लेते हैं गलत कदम उठाने से पहले एक बार परिवार के बारे में नहीं सोचते हैं इसके कारण आत्महत्या की तरह भी बढ़ती जा रही है।

साइबर अपराध और साइबर कानून

साइबर अपराध साइबरस्पेस, जिसे कभी–कभी इंटरनेट की दुनिया भी कहा जाता है, पर हमारी निर्भरता का परिणाम है। कंप्यूटर अपराध एक उपकरण, लक्ष्य या दोनों के रूप में कम्प्यूटर का उपयोग करके किए गए अवैध कार्य हैं। पहला कंपयूटर अपराध 1820 के दशक में दर्ज किया गया था। ई–कॉमर्स (ईकॉमर्स) की विस्फोटक वृद्धि और ऑनलाइन शेयरों के आदान–प्रदान के परिणामस्वरूप साइबर अपराध की घटनाओं में भारी वृद्धि हुई। साइबर दुनिया से जुड़े कानूनों और विनियमों से संबंधित प्रमुख कानून सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 है, यह अपराध जगत के बदलते और आधुनिकीकरण घटक के साथ कानून के क्षेत्र में एक कदम आगे बढ़ाता है। विनियमन का मुख्य लक्ष्य डिजिटल वाणिज्य के लिए अपराधिक मान्यता प्रदान करना और सरकार को इलेक्ट्रॉनिक रजिस्टर जमा करने की सुविधा प्रदान करना है। कंप्यूटर कानून कई लैपटॉप अपराधों को भी अपराध मानता है और गंभीर दंड (10 साल तक की जेल की सजा और 1 रुपये तक का मुआवजा) स्थापित करता है।

साइबर नैतिकता

साइबर नैतिकता इंटरनेट के कोड के अलावा और कुछ नहीं है। जब हम इन साइबर नैतिकता का पालन करते हैं तो हमारे लिए उपयुक्त और सुरक्षित तरीके से इंटरनेट का उपयोग करने की उत्कृष्ट संभावनाएँ होती हैं। नीचे उनमें से कुछ हैं:

- विभिन्न लोगों से संवाद करने और जुड़ने के लिए इंटरनेट का उपयोग करें। ईमेल और त्वरित संदेश मित्रों और परिवार के सदस्यों के साथ संपर्क में रहना, काम के सहयोगियों के साथ बात करना और शहर भर में या दुनिया भर में लोगों के साथ विचार और जानकारी साझा करना आसान बनाते हैं।
- इंटरनेट पर धमकाने वाले न बनें। इंसानों को नाम से न पुकारें, उनके बारे में झूठ न बोलें, उनकी शर्मनाक तस्वीरें न भेजें, या उन्हें नुकसान पहुंचाने का प्रयास करने के लिए कुछ और न करें।
- इंटरनेट को किसी भी कठिनाई क्षेत्र में किसी भी विषय पर तथ्यों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी के रूप में देखा जाता है, इसलिए इस जानकारी का सही और अपराधिक तरीके से उपयोग हमेशा आवश्यक होता है।
- अब दूसरों के बिलों का उपयोग उनके पासवर्ड का उपयोग करके न करें।
- कभी भी किसी भी प्रकार के मैलवेयर को दूसरों की संरचनाओं में भेजने और उन्हें भ्रष्ट बनाने का प्रयास न करें।

साइबर क्राइम को रोकने के उपाय

- साइबर क्राइम को रोकने के लिए हमें मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना चाहिए पासवर्ड को नियमित रूप से बदले।

- अपने सॉफ्टवेयर को नियमित रूप से अपडेट रखें।
- एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का उपयोग करें और अपडेट रखें।
- परवल को सक्षम करें और अपने कंप्यूटर लैपटॉप को हैक होने से बचाए।
- सुरक्षित नेटवर्क का उपयोग करें पब्लिक वाई–फाई का उसे ना करें।
- अपने डेटा को नियमित रूप से बैकअप करें और सुरक्षित रखें।
- अपनी पर्सनल जानकारी ऑनलाइन या अपने सोशल मीडिया पर शेयर ना करें।
- अपने बच्चों को इंटरनेट के प्रयोग के खतरों के बारे में शिक्षित करो और उन पर नजर रखें।
- जो वेबसाइट भरोसेमंद ना हो उसे न खोले और अनजान फाइलों से दूर रहे।
- बैंकिंग और बीते लेनदेन में सतर्क रहे।
- किसी भी अनजान व्यक्ति से पर्सनल चीज शेयर ना करें।
- सोशल मीडिया पर ज्यादा पर्सनल ना हो आपको साइबर अपराध में जागरूक रहना बहुत महत्वपूर्ण है।
- साइबर अपराध का शिकार होने पर तुरंत पुलिस को जानकारी दे कर्मचारियों को साइबर सुरक्षा के बारे में प्रशिक्षित करें।
- तब आपका ऑनलाइन कार्य हो जाए तो हमेशा लॉगआउट करें।
- साइबर अपराध की पहुंच कोई भौतिक सीमा नहीं होते अपराधी पीढ़ी तो तकनीकी ऑपशन संरचना दुनिया भर में फैली हुई है। व्यक्तिगत और उद्यम स्तर पर सुरक्षा कमजोरी का फायदा उठाने के लिए प्रतियोगिकी के उपयोग के साथ साइबर अपराध के रूप में लेता है और लगातार विकसित होता रहता है।

- साइबर अपराधों से जुड़े कुल लागत को जोखिम लगातार बढ़ रहे हैं इसलिए रोकथाम प्रणालियों और प्रौद्योगियों को लगातार लागू करने निगरानी करने और अपडेट करने की आवश्यकता अभी पढ़ रही है विदेशी विरोधियों आतंकवादियों और रोज मर के घोटाले बाजू के बीच साइबर हमले ज्यादा चालाक और ज्यादा परिक्रष्ट होते जा रहे हैं।

निष्कर्ष

साइबर क्राइम इन दिनों दुनिया भर के देशों के लिए सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। इसमें रिकॉर्ड तक अनधिकृत पहुंच और इंटरनेट का उपयोग करने वाले सभी लोगों की गोपनीयता, पासवर्ड आदि जैसी सुरक्षा का उल्लंघन शामिल है। साइबर चोरी साइबर अपराध का एक हिस्सा है, जिसमें चोरी को कंपयूटर या इंटरनेट के माध्यम से अंजाम दिया जाता है। साइबर सुरक्षा धोखाधड़ी और अपराधों की व्यापक विविधता के साथ, सरकार लोगों के हितों की रक्षा करने और उन्हें इंटरनेट पर किसी भी बुरी गतिविधियों से बचाने के लिए सूक्ष्म दिशानिर्देश विकसित कर रही है। इसके अलावा, बिचौलियों और प्रदाता वाहक (कॉर्पोरेट निकाय) के हाथों में 'गोपनीय निजी डेटा' की सुरक्षा से जुड़े सख्त कानूनी दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं, इस कारण से रिकॉर्ड सुरक्षा और गोपनीयता की गारंटी दी जाती है।

संदर्भ

1. रंजन राजीव, साइबर अपराध की दुनिया, पुस्तक महल, 2017
2. सिंह राजेंद्र, साइबर अपराध और सुरक्षा, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2018
3. कुमार संजय, साइबर सुरक्षा और अपराध, मनोज प्रकाशन, 2019
4. कुमार सुनील, साइबर अपराध और कानून, अनामिका प्रकाशन, 2020
5. शर्मा रेखा, साइबर अपराध और मीडिया, अपेक्स प्रकाशन, 2020

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

अमृत काल का भारत और भविष्य की चुनौतियां

• गौरी सिसोदिया–**Author**

• डॉ. दीप्ति वाजपेयी–**Corresponding Author**

'वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या, जिस पथ पर बिखरे शूल न हो,
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, यदि धाराएं प्रतिकूल ना हो।'

हिंदी के महान कवि जयशंकर प्रसाद जी की यह पंक्तियां भारत की आजादी के 75 वर्ष की यात्रा में पूर्णरूपेण खरी उतरती है। भारत ने जिस बलिदान, शौर्य, जोश, जुनून, सामूहिक शक्ति और सामूहिक चेतना से स्वाधीनता को प्राप्त किया था, भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने के लिए उसी उत्साह सामूहिक चेतना और मनोयोग की आवश्यकता अपेक्षित रही है। पराधीनता ने हमारे स्वाभिमान के साथ–साथ हमारे आत्मविश्वास को इतनी क्षति पहुंचाई कि हम स्वाधीनता पा तो गए, किंतु स्वाधीन होने में अपने अथक प्रयासों के बावजूद भी 75 वर्ष का लंबा समय हमें लगा। निसंदेह इन 75 वर्षों में भारत ने उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं, जो कि हम भारतीयों के लिए गर्व स्वाभिमान और आत्मविश्वास की बुलंदियों का विषय है, किंतु यह यात्रा लंबी ही नहीं कंटको से भरी हुई भी है। बहुत

• स्नातक पंचम सेमेस्टर, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.।
• प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.।

दुरूह है, किंतु भारत की सामूहिक चेतना ठान ले तो क्या नहीं हो सकता। भारत का अतीत गौरवशाली है, वर्तमान संघर्ष पूर्ण और भविष्य उज्जवल एवं दैदीप्यमान। शंखनाद तो प्रारंभ हो चुका है जिसकी ध्वनि संपूर्ण विश्व में गूंज रही है किंतु चुनौतियां अभी भी विकराल रूप में हैं। जिन पर हमने पूर्ण मनोयोग से कार्य कर लिया तो विजय श्री अवश्यंभावी है।

1. आर्थिक विषमता

स्वाधीनता के 75 वर्षों में भारत ने विकास किया है, यह स्पष्ट और सर्वमान्य तथ्य हैं। किंतु भारतीयों के मध्य आर्थिक असमानता अभी भी चिंतनीय है। किसी भी देश के लिए सही मायने में विकसित होने का अर्थ वहां के नागरिकों के मध्य यथासंभव एवं तार्किक आर्थिक समानता होनी चाहिए। विकास तो हुआ किंतु अभी भी भारत के बहुत से क्षेत्रों और वहां के नागरिकों को आर्थिक रूप से संपन्न बनाने हेतु लंबी यात्रा तय करनी है। जिस पर ध्यान दिए बिना सही मायने में विकसित राष्ट्र की संकल्पना नहीं की जा सकती है।

2. प्रकृति की लय को समझना

भारतीय संस्कृति प्रकृति की कमनीय गोद में विकसित हुई है। समस्त भारतीय दर्शन और विचारधारा प्रकृति और पुरुष के अनुकूलन पर बल देती है। विकास का मतलब प्रकृति पर विजय पाना नहीं है और इस सत्य का कोरोना काल ने संपूर्ण विश्व को अंतस तक अवबोध करा दिया है। हमें प्रकृति की लय को समझना होगा उसकी गति के साथ तालमेल बैठाकर ही हम विकास को गति दे सकते हैं, अन्यथा विनाश अटल है। प्रकृति का असीमित दोहन हमारे अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लगा रहा है ''माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्या'' का भाव धारण कर कृतज्ञ होकर प्रकृति के संरक्षण को प्राथमिकता में सर्वोपरि रखना होगा, यह भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व के अस्तित्व का मूलाधार है।

3. शैक्षिक परिदृश्य

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास की आधारशिला और सकारात्मक परिवर्तन का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। स्वाधीनता के 75 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में जितना भी कार्य किया गया है, आवश्यकता उससे अधिक की है। नई शिक्षा नीति 2020 निसंदेह भारत के उज्जवल भविष्य की अनंत संभावनाएं लेकर आई है। जिसमें युवा शक्ति को भारतीयता के गौरव बोध के साथ कुशल एवं वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित करने की संकल्पना निहित है, किंतु संकल्प से सिद्धि का मार्ग सहज नहीं है। वास्तविक चुनौती नई शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन की है। सिद्धांत को व्यावहारिक धरातल पर लाने के लिए शिक्षण संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। शिक्षकों एवं सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति से शैक्षिक परिदृश्य में व्यापक बदलाव आएंगे, इसके प्रति युवा शक्ति आशान्वित है।

4. स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तार

कोरोना काल की भयावहता से आज कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। विगत 2 वर्षों से निराशा तनाव अवसाद से कहीं ना कहीं सभी ग्रस्त हैं कमोबेश सभी के दर्द साझे है। किसी अपने की जिंदगी के लिए जूझते हुए स्वास्थ्य सेवाओं के उन्नयन की आवश्यकता सभी ने किसी न किसी स्तर पर अनुभव की है। भारत में चिकित्सा सुविधाओं में विस्तार किया जाना एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरा है। खतरा अभी पूरी तरह से टला भी नहीं है, और ना जाने इस प्रकार के कितने से खतरे अदृश्य रूप में है, जो भविष्य में दानव रूप में प्रकट होकर सृष्टि के संहार का कारण बन सकते हैं। हमें इन सब अदृश्य जीवाणुओं–विषाणुओं रूपी दानवों को भस्म करने के लिए भगवान शिव के तृतीय नेत्र के समान सतत स्वास्थ्य पर बल देने एवं चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और उच्चीकरण की आवश्यकता है।

5. भ्रष्टाचार और आतंकवाद का समूल उन्नमीलन

समावेशी एवं सतत विकास की गौरवपूर्ण गाथा में शांति, समृद्धि एवं सभी की साझेदारी सुनिश्चित करने के लिए भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसे ज्वलंत मुद्दे मानवता के प्रति अपराध है। इनके समाधान की नितांत आवश्यकता है। शांति मानव की सबसे बड़ी आवश्यकता और अधिकार भी है। संपूर्ण सृष्टि शांतिपूर्ण होनी चाहिए। प्रगति के लिए यह पहली शर्त शांति है। आतंकवाद का कोई धर्म और जाति नहीं होती। यह मानवता के लिए भयावह है। भ्रष्टाचार और आतंकवाद विगत दशकों से भारत के लिए विकराल चुनौती बना हुआ है। शांति की सुस्थापना और सावयविक वातावरण के निर्माण के लिए भ्रष्टाचार और आतंकवाद का समूल नाश भारतीय चुनौतियों में शीर्ष स्तर पर है।

6. बेरोजगारी और महंगाई

भारत द्वारा विकास की नई ऊंचाइयों को छूने के साथ–साथ, आज इस तथ्य से कोई इनकार नहीं कर सकता कि बेरोजगारी और महंगाई वर्तमान समय में भारत के लिए एक बड़ी समस्या है। सरकार आज आत्मनिर्भर भारत के लिए नई–नई योजनाएं ला रही है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी कौशल विकास पाठ्यक्रम को विशेष महत्व दिया गया है। इनोवेशन और इनक्यूबेशन केंद्र खोले जा रहे हैं। युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु नौकरी के विकल्प के रूप में स्वरोजगार की राह दिखाई जा रही है, किंतु अभी भी स्थिति चिंताजनक ही है। सैद्धांतिक रूप में बनी बहुत सारी योजनाएं व्यावहारिक रूप में सफल नहीं हो पा रही है। विशाल जनसंख्या वाले भारत देश में युवाओं को रोजगार देना स्वयं में एक बड़ी चुनौती है। निसंदेह हमें इस पर और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

रोजगार के साथ–साथ बढ़ती महंगाई पर काबू पाना दूसरी बड़ी चुनौती है। निम्न आय वर्ग के परिवारों के लिए आवश्यक आवश्यकताओं को भी पूर्ण कर पाना कठिन हो रहा है। गरीबी और बेरोजगारी से जूझते गंदी

बस्तियों में निवास करने वाले परिवारों की भोजन और वस्त्र जुटाने में ही जिंदगी निकल जाती है। शिक्षा और अन्य आवश्यकताओं के बारे में तो उनके पास विचार करने का भी वक्त नहीं है। हमें समाज के उपर्युक्त वर्ग के लिए और भी अधिक ठोस कदम उठाने होंगे, तभी विकसित भारत का सपना यथार्थ रूप ले सकता है।

7. संप्रदायवाद एवं जातिवाद से मुक्ति

कितना सुंदर होगा वह समाज जिसमें मानव को मानव के रूप में देखा जाए, न कि किसी जाति धर्म संप्रदाय के तथाकथित विभाजन के आधार पर। किसी भी उपवन की सुंदरता वहां पर खिलने वाले फूलों की विविधता पर,उनके रंग–बिरंगे मनोहारी स्वरूप पर निर्भर करती है, न कि इस बात पर कि वह गुलाब का पुष्प है, या गुड़हल का, चांदनी है, या चमेली। वह तो उपवन है जिसे इन सभी फूलों ने अपने रंग, सुगंध और रूप की विविधता के आधार पर दर्शनीय बना दिया है। इसी प्रकार भारत का हर नागरिक भारतीय है और इस भारत रूपी सुंदर बगिया को रंग बिरंगा और हृदयाकर्षक स्वरूप देने में हर धर्म जाति संप्रदाय के मानवों की महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें अपनी संकीर्ण सोच से ऊपर उठते हुए समानता और समभाव रखते हुए समावेशी समाज के निर्माण के लिए संप्रदायवाद एवं जातिवाद से मुक्त होने की नितांत आवश्यकता है। भारत में जाति और संप्रदाय की बेड़ियां बहुत मजबूत है। विगत 75 वर्षों में जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, ऊंच–नीच जैसे मानवता के शत्रुओं पर काफी हद तक विजय प्राप्त की जा चुकी है, किंतु अभी भी इसकी जड़ें मजबूत हैं। भारत को वास्तविक अर्थों में भारत बनाने के लिए, वसुधैव कुटुंबकम के भावों की पुनर्स्थापना के लिए, जातिवाद और संप्रदायवाद को जड़ से उखाड़ने और अस्तित्व विहीन करने की बड़ी चुनौती है। किंतु असंभव कुछ भी नहीं है हमें यह करना है और निसंदेह हम यह करके रहेंगे हम भारत को पुनः सामूहिक चेतना से युक्त संगठित शक्ति के रूप में स्थापित करने हेतु

कटिबद्ध है। हर भारतीय को अपने स्तर से इस पुनीत कार्य में मन वचन कर्म से अपना सहयोग देना चाहिए।

निष्कर्ष

देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। भारतीयों के लिए गौरव को अनुभव करने का समय है, उल्लास और उत्साह का समय है, साथ ही समय है संकल्प का, दृढ़ निश्चय का, प्रतिबद्धता का समभाव को जागृत करने का और सामूहिक चेतना के साथ एकीकृत हो कर भारत को पुनः विश्व पटल पर आलोकित करने का। संकल्प अगर सच्चा है, शुद्ध है, अंतरात्मा में समाहित है, तो सिद्धि अटल है। 'वयं राष्ट्रे जागृयांम पुरोहिताः'।

संदर्भ

1. अरोरा पंकज, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–रचनात्मक सुधारों की ओर, उषा शर्मा, शिप्रा पब्लिकेशन दिल्ली ।
2. कोठारी अतुल, शिक्षा नीति 2020 भारतीयता का पुनरुत्थान, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
3. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/india-@-75-major-achievements-after-independence
4. https://sablog.in/75-years-of-independence-resolutions-andchallenges/16922/
5. https://newstrack.com/country/75th-independence-day-futurechallenges-for-india-corruption-naxalism-and-terrorism-debt-crisis-unemployment-expensiveness-education-system-282973

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

महिला सशक्तिकरणः वास्तविकता या मिथक

- **नीति नागर–Author**
- **निशा नागर–Author**
- **डॉ. कविता वर्मा–Corresponding Author**

परिचय

सशक्तिकरण एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है जो की महिलाओं को उनके अधिकार व समानता की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए काम करता है हमारे ग्रंथो में भी नारी को महत्व देते हुए यह बताया गया है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता'' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वह देवता निवास करते हैं लेकिन हमारे समाज में महिलाओं के प्रति अपराध इतने बढ़ गए हैं कि आज महिला स्वयं को किसी भी स्थान पर सुरक्षित नहीं पाती है इसलिए हमें उसके सशक्तिकरण की आवश्यकता महसूस हो रही है महिला सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकारों,

- एम.ए., प्रथम वर्ष, समाजशास्त्र, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- एम.ए., प्रथम वर्ष, समाजशास्त्र, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

भागीदारी के लिए सशक्त बनाने की प्रक्रिया है। महिला सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य महिलाओं को समाज में समान अधिकार और अवसर प्रदान करना है। यह महिलाओं को उनके जीवन में निर्णय लेने की शक्ति देने, उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने, और समाज में उनकी भूमिका को महत्व देने के बारे में है। महिला सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाएं अपने जीवन को बेहतर बना सकती हैं, अपने अधिकारों के लिए लड़ सकती हैं, और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं। महिला सशक्तिकरण से हमारा समाज उन्नति व प्रगति की ओर बढ़ेगा और समाज में सकारात्मक परिवर्तन होगा इससे महिलाओं के जीवन में परिवर्तन होगा वह स्वयं को स्वतंत्र व सुरक्षित महसूस करेगी। लेकिन क्या यह वास्तव में एक वास्तविकता है या सिर्फ एक मिथक है?

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य

महिला सशक्तिकरण के कुछ मुख्य उद्देश्य हैं–

1. **महिलाओं को शिक्षा और जागरूकता प्रदान करनाः** महिला सशक्तिकरण के लिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण कदम है उन्हें शिक्षा और जागरूकता प्रदान करना। इससे वे अपने अधिकारों और समाज मेंउनकी भूमिका के बारे में जागरूक हो सकती हैं।
2. **महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनानाः** महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करना, व्यवसाय शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता देना, और आर्थिक साक्षरता के बारे में जागरूक करना आवश्यक है।
3. **महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनानाः** महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने के लिए उन्हें नेतृत्व और प्रबंधन के कौशल विकास के अवसर प्रदान करने चाहिए। इसके अलावा, उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करना और समाज में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक करना आवश्यक है।

4. **महिलाओं को सामाजिक व राजनीतिक भागीदारी के अवसर प्रदान करना:** महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक संगठनों में शामिल होने के अवसर प्रदान करने से भी उन्हें सशक्त बनाने में मदद मिल सकती है।

5. **उनको उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना:** महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। इससे वे अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं और समाज में अपनी स्थिति को बेहतर बना सकती हैं।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

भारत में महिला सशक्तिकरण के बहुत कारण सामने आए हैं। प्राचीन काल की अपेक्षा मध्यकाल में भारतीय महिलाओं के सम्मान के स्तर में काफी कमी आई है । भारत में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाना की मुद्दे पर ध्यान देने की आवश्यकता है। यह मुख्य रूप से मौजूदा सामाजिक मौजूदा सामाजिक रीति–रिवाजो के कारण है हाल के अध्ययनों से पता चला है कि परिवार में कम उम्र की लड़कियों को बोझ समझा जाता है। वर्तमान समय में बलात्कार के मामले बढ़ रहे हैं जो हमें महिला आबादी की सुरक्षा के बारे में पहल करने के लिए मजबूर करते हैं। इन्हीं सभी बातों को ध्यान में रखते हुए महिला सशक्तिकरण बहुत ही आवश्यक है।

महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता

महिला सशक्तिकरण धीरे–धीरे हकीकत बन रहा है। सरकार द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए नई–नई योजनाएं बनाई जा रही हैं, ताकि योजनाओं का लाभ उठाकर महिलाएं अपनी स्थिति में सुधार कर सकें। हमारे संविधान में भी लैंगिक रूप से सभी को समान बताया गया है। संविधान के मुताबिक पुरूष व महिलाओं को समान अधिकार दिए गए हैं

दोनों ही स्वतंत्र रूप से अपने लिए निर्णय ले सकते हैं, उन्हें अपने जीवन स्वतंत्र रूप से बिताने की आजादी है।

सरकार द्वारा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए चलाए गई कुछ योजनाएंः

1. TREAD योजना पर संबंधित उद्यमिता सहायता और विकास योजना,
2. महिला शक्ति केंद्र योजना,
3. जिला उद्यमियों के लिए महिला ई–हाट,
4. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना,
5. उज्ज्वला योजना,
6. प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना।

इन सभी योजनाओं के माध्यमों से पता चलता है कि सरकार महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए नई–नई योजनाएं बना रही है किसी और पर आर्थिक रूप से निर्भर नए रह सके।

महिला सशक्तिकरण के लिए कई अधिकार दिए गए हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैंः

- **समान वेतन का अधिकारः** समान पारिश्रमिक अधिनियम के अनुसार, लिंग के आधार पर वेतन में कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता है।
- **कार्य–स्थल में उत्पीड़न के खिलाफ कानूनः** यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत, वर्किंग प्लेस पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने का पूरा हक है।
- **कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकारः** गर्भाधान और प्रसव से पूर्व पहचान करने की तकनीक लिंग चयन पर रोक अधिनियम (PCPNDT) कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार देता है।

- **संपत्ति पर अधिकारः** हिंदू उत्तराधिकारी अधिनियम के तहत, पुश्तैनी संपत्ति पर महिला और पुरुष दोनों का बराबर हक है।

आज की महिलाएं जागरूक हो गई है वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई हैं। बाहर जाकर पढ़ने ओर नौकरी करने की स्वतंत्रता प्राप्त है, महिलाएं–पुरुष से आज कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। आज के समय में महिलाएं सभी क्षेत्रों में पुरुषो से आगे निकल रही हैं चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, खेल हो, व्यापार हो, राजनीति हो आदि। आज महिलाएं स्वयं अपने सभी निर्णय ले रही हैं। वह आत्मनिर्भर बन रही है और स्वयं अपनी जिम्मेदारी उठा रही है।

महिला सशक्तिकरण मिथक

हमारे समाज में यह मिथ्या बनाई हुई है कि स्त्रियां पुरुषों से कमजोर होती हैं। परिवार में लड़कियों एवं लड़कों के बीच भेदभाव किया जाता है पोषक आहार, स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं शिक्षा से उन्हें दूर रखा जाता है। महिलाओं को हमेशा उपभोक्ता ही माना जाता रहा है। हर जगह महिलाओं के खिलाफ अपराध व घरेलू हिंसा एक आम बात हो गई है।

महिलाओं के प्रति बढ़ती हुई कुछ हिंसाएं व अपराध– महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों की एक लंबी सूची है, जिनमें से कुछ सबसे गंभीर और चिंताजनक हैं–

1. महिला भ्रूण एवं शिशु हत्याः महिला भ्रूण और शिशु हत्या एक ऐसा अपराध है जिसमें गर्भ में ही लड़कियों को मार दिया जाता है या जन्म के बाद उन्हें मार दिया जाता है, क्योंकि समाज में लड़कों को अधिक महत्व दिया जाता है।
2. घरेलू हिंसाः घरेलू हिंसा एक और गंभीर समस्या है जिसमें महिलाएं अपने ही परिवार के सदस्यों द्वारा शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न का सामना करती हैं।

3. इच्छा के विरुद्ध विवाहः इच्छा के विरुद्ध विवाह भी एक ऐसी समस्या है जिसमें महिलाओं को उनकी मर्जी के बिना विवाह करने के लिए मजबूर किया जाता है

4. बलात्कारः बलात्कार एक ऐसा अपराध है जिसमें महिलाओं की इच्छा के विरुद्ध उनके साथ यौन संबंध बनाए जाते हैं।

5. वेश्यावृत्ति के लिए बल प्रयोगः वेश्यावृत्ति के लिए बल प्रयोग करना भी एक गंभीर अपराध है जिसमें महिलाओं को वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है।

6. एसिड हमलेः एसिड हमले एक ऐसा अपराध है जिसमें महिलाओं पर एसिड से हमला किया जाता है, जिससे उनका चेहरा और शरीर क्षतिग्रस्त हो जाता है।

ये अपराध महिलाओं के जीवन को पूरी तरह से बदल देते हैं और उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से पीड़ित करते हैं। हमारा समाज चाहे कितनी भी उन्नति कर ले लेकिन महिलाओं के प्रति हिंसा एवं अपराध कभी काम नहीं होंगे। हमेशा महिला और पुरुष के बीच भेदभाव किया जाता रहा है और होता रहेगा यह वास्तविकता है। हमारे समाज में अभी भी महिलाएं बहुत कम शिक्षित एवं जागरूक हैं वह इतनी सशक्त नहीं है। वे अपने निर्णय स्वयं नहीं ले सकती हैं और ना ही अपनी जिम्मेदारी स्वयं उठा पा रही हैं। महिलाएं अभी भी अपने पिता एवं पतियों पर ही आर्थिक रूप से निर्भर हैं, उनकी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से हमने यह निष्कर्ष निकला है कि महिला सशक्तिकरण एक वास्तविकता और मिथक दोनों है हमने कई प्रयास किए हैं लेकिन अभी भी बहुत काम करने बाकी हैं। हमें मिलकर इस पर काम करना होगा, ताकि महिलाएं अपने अधिकारो और समानता की दिशा में आगे बढ़ सके महिला सशक्तिकरण पूरी तरह से न ही वास्तविकता है और न हीं मिथक। इन –

अपराधों को रोकने के लिए समाज में जागरूकता फैलाना, कानूनी प्रावधान करना, और पीड़ित महिलाओं को समर्थन देना आवश्यक है। हमें महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए और उन्हें समाज में समान दर्जा दिलाने के लिए काम करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. मिश्रा, डॉ. मृदुला, महिला सशक्तिकरण के मुद्दे, मनोज पब्लिकेशन्स, 2016
2. शर्मा, डॉ. रीता, महिला सशक्तिकरण की राहें, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2017
3. शर्मा, डॉ. शशि, महिला सशक्तिकरणरू चुनौतियाँ और अवसर, राजपाल एंड सन्ज, 2018
4. कुमार, डॉ. विनोद, महिला सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, रावत पब्लिकेशन्स, 2019
5. कुमार, डॉ. प्रमोदः महिला सशक्तिकरण और समाज परिवर्तन, ग्रन्थम पब्लिकेशन्स, 2020

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

शास्त्रीय संगीत की धरोहर किशोरी आमोनकर और कौशिकी चक्रवर्तीः एक समीक्षा

• गौरी सिंह–**Author**

• डॉ. बबली अरूण–**Corresponding Author**

परिचय

संगीत किसी के लिए साधना है तो किसी के लिए आनंद का माध्यम,किसी के लिए मनोरंजन का साधन है, तो किसी के लिए प्रेरणा है, किसी के लिए चेतना और इन विभिन्न रूपों में संगीत हम सभी के जीवन में विद्यमान है। संगीत के क्षेत्र में भारतीय शास्त्रीय संगीत को संरक्षित करने तथा निरंतर अभ्यास, अध्यन, आविष्कार व प्रदर्शन द्वारा इसकी गरिमा व खूबसूरती को बनाया रखने का कार्य शास्त्रीय गायक व गायकों पर निर्भर है। अपने उत्कृष्ट संगीत प्रदर्शन के माध्यम से शास्त्रीय संगीतकारों ने जन जन के मन में संगीत के प्रति श्रद्धा और रुचि को कायम रखा है।

• स्नातक, षष्ठ सेमेस्टर, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

किशोरी आमोनकर

जब भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की बात की जाती है तब अनेक रत्न रूप कलाकारों का स्मरण हो आता है। इन अनमोल शास्त्रीय संगीतकारों में से एक रही हैं किशोरी आमोनकर जी (10 अप्रैल 1934–03 अप्रैल 2017) जिन्होंने संगीत को दिव्य के साथ संवाद मान कर जिया।

किशोरी आमोनकर का जन्म 10 अप्रैल 1934 को बॉम्बे (मुंबई), महाराष्ट्र में हुआ। बचपन में इनके पिता के देहांत के बाद इनका भरण पोषण इनकी माता मोघुबाई कुद्रीकार ने किया ।

संगीत का प्रारंभिक प्रशिक्षण इन्होंने अपनी माता से प्राप्त किया। अपनी मां से जयपुर घराने की तकनीकों और बारीकियों की शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवा आमोनकर ने अंजना बाई मालपेकर (भेंडी बाजार घराने से संबंधित) से संगीत की शिक्षा ली और 1950 के दशक में अपने संगीत करियर की शुरुआत की। उनकी संगीत शिक्षा ने उन्हें असाधारण बनाया। उनके गायन में सभी घरानों की बारीकियों को देखा जा सकता था। आमोनकर ने इस विचार आलोचना की है कि संगीत के स्कूल या घराने एक गायक की तकनीक को प्रभावित करते हैं।

किशोरी आमोनकर ने अपने जीवन में कभी भी अपनी परिस्थितियों और अपने जीवन की कठिनाइयों को अपने संगीत पर हावी नहीं होने दिया।

उनके करियर के शुरुआती समय में एक समय ऐसा था जब उनका संगीत करियर को पूरी तेरह बंद हो सकता था। एक बीमारी के कारण उनकी आवाज चली गई। जिसके कारण उन्हें करीब नौ साल तक संगीत प्रस्तुतियों से दूर रहना पड़ा लेकिन यह भी किशोरी को संगीत से दूर नहीं कर पाया उन्होंने इस अंतराल का उपयोग अपने खुद की गायन शैली पर विचार कर उसे विकसित करने में किया। जो शास्त्रीय संगीत से परे थी इस अंतराल के बाद उन्होंने फिर से अपने करियर में वापसी की और प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका के रूप में मशहूर हुई। उन्होंने अपनी प्रस्तुतियों में पारंपरिक राग जैसे– जौनपुरी, तिलक कामोद, अहीर भैरव, पुरिया धनाश्री,

कौनसी कनाडा के साथ साथ अर्ध शास्त्रीय गायन शैली जैसे ठुमरी, खयाल, भजन, और गजल को शामिल किया। 1964 में 'गीत गया पत्थरों ने' और 1990 में फिल्म दृष्टि के साउंड ट्रेक में भी योगदान दिया। फिर उन्होंने फिल्म उद्योग में आगे न बढ़कर शास्त्रीय संगीत गायन में रहना ही पसंद किया।

ऊर्जा और लावण्य से अनुप्राणित आमोनकर की प्रस्तुतियां संगीत के विद्यार्थियों के लिए सदैव प्रेरणादायक रही। वे एक प्रसिद्ध गायिका होने के साथ एक लोक प्रिय वक्ता भी थी। उन्होंने पूरे भारत में यात्रा करके व्याख्यान दिए और रस सिद्धांत पर प्रमुख व्याख्यान दिए।

किशोरी का संगीत आध्यात्म से भरा हुआ है और साधना से पैदा हुआ है। उन्होंने सदैव संगीत की गहराइयों में उतरने का प्रयास किया उन्होंने प्राचीन संगीत ग्रंथों पर विस्तृत शोध किया इसलिए उन्हें संगीत की इतनी गहरी समझ थी। आमोनकर मानना था कि संगीत प्रदर्शन के समय संगीतकार को स्वरों के माध्यम से भाव सफलता पूर्वक प्रकट करने आना अनिवार्य है। जिसे श्रोता उस भाव को समझ सके।

देश–विदेश में अविस्मरणीय प्रस्तुतियों एवं संगीत में कुशल योगदान द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत परंपरा को लोकप्रिय और उत्कृष्ठ बनाने के लिए 1987 में देश के तीसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म भूषण से और 2002 में देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। इसके अलावा 2010 में वे संगीत नाटक अकादमी (भारतीय राष्ट्रीय संगीत कला नृत्य अकादमी) की फैलो बनी। जो आजीवन नियुक्ति है। जो देश के केवल कुछ दर्जन व्यक्तियों को ही प्राप्त होती है।

किशोरी आमोनकर के प्रेरणादायक संगीत सफर पर 'भिन्न शदज' नाम से डॉक्यूमेंट्री बनाई गई। इसका निर्देशन अमोल पालेकर और संध्या गोखले ने किया। अपना संपूर्ण जीवन संगीत साधना को समर्पित कर संगीत के इतिहास में अपने लिए एक विशेष स्थान प्राप्त किया। 84 वर्ष की आयु में एल.एन.जे. भीलवाड़ा द्वारा आयोजित भीलवाड़ा सुर संगम 2017 समारोह में

गान सरस्वती किशोरी आमोनकर जी ने अदभुत प्रस्तुति दी। इस समारोह में अपनी मधुर आवाज में इन्होंने राग पुरिया धनाश्री और कौनसी कनाडा पर आधारित रचनाएं प्रस्तुत कर सभी संगीत विद्यार्थियों और संगीत के रसिकों को लाभान्वित किया। दुर्भाग्यवश 3 अप्रैल 2017 को इनका निधन हो गया और यह इनकी आखिरी प्रस्तुति कहलाई।

आज शास्त्रीय संगीत की परंपरा को आगे बढ़ाने और जन जन के मन में इसके प्रति श्रद्धा और रूचि को कायम रखने का कार्य आज के भावी संगीतकार निपुणता से कर रहे हैं।

कौशिकी चक्रवर्ती

किसी को मानसिक रूप से खुद को रूप के साथ संरक्षित करना होता है. ..मेरे प्रशिक्षण ने मुझे संगीत के प्रतिभा दृष्टिकोण सिखाइए हैं–संगीत करना या संगीत बन जाना। दूसरा तरीका आपको रूप से परे जाने और उसके साथ एकाकार होने की तरलता देता है ।

ये सुंदर शब्द है भारत की युवा शास्त्रीय गायिका कौशिकी चक्रवर्ती के, जो अपनी असाधारण व अनूठी गायन शैली के लिए जानी जाती हैं। वे अपने बेहद खूबसूरत, प्रभावपूर्ण व सफल गायकी के बल पर अनेक उपलब्धियां प्राप्त कर चुकी हैं। उनके गायन में अर्ध शास्त्रीय गायन शैली जैसे खयाल ठुमरी तथा दक्षिण भारतीय शास्त्रीय गायन शामिल है।

विदुषी कौशीकी चक्रवर्ती का जन्म 24 अक्टूबर 1980 को कोलकाता के एक प्रसिद्ध परिवार में हुआ। वह चंदन चक्रवर्ती तथा पद्म भूषण से सम्मानित पंडित अजय चक्रवर्ती की बेटी हैं। संगीतमय वातावरण में पली बड़ी कौशिकी चक्रवर्ती को बचपन से ही संगीत सीखने में रुचि थी। उन्होंने अपना पहला सार्वजनिक गीत, तराना सात वर्ष की उम्र में कोलकाता रोइंग क्लब में गाया। अपने माता–पिता की देखरेख में दस वर्ष की आयु तक संगीत का प्रशिक्षण लेती रही। फिर उन्होंने श्री ज्ञान प्रकाश घोष जी (पद्म भूषण से सम्मानित) से भारतीय पारंपरिक संगीत सीखना प्रारंभ किया। ज्ञान

प्रकाश घोष जो की अजय चक्रवर्ती के भी गुरु थे आगे चलकर उन्होंने ही कौशिकी चक्रवर्ती को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी बाद में कौशिकी आइ. टी. सी. संगीत रिसर्च अकादमी में शामिल हो गई जहां उन्होंने 2004 में सनातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने प्रसिद्ध विद्वान बाल मुरली कृष्ण से कर्नाटक संगीत भी सीखा।

कौशिकी ने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगीत समारोह और सम्मेलनों में संगीत प्रदर्शन किया है। डॉवर लाने संगीत सम्मेलन में, पुणे में किशोरी आमोनकर स्मारक संगीत कार्यक्रम, राष्ट्रीय कला केंद्र, कोक स्टूडियो एम टी वी सीजन, दरबार महोत्सव सीजन, आई.टी.सी. संगीत सम्मेलन, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (इस प्रस्तुति में उनके पति पार्थ देसीकन ने भी साथ दिया) तथा कल्याणी उस्ताह (2024) में इन्होंने अपने श्रेष्ठ प्रस्तुतियों दी हैं।

कैलिफोर्निया में संगीत का वसंत उत्सव, सवाई गंधर्व भीमसेन संगीत महोत्सव, लॉस एंजेलिस में परंपरा महोत्सव कुछ ऐसे मंच हैं जहां कौशीकी ने अद्वितीय प्रदर्शन किया है और शास्त्रीय संगीत की अपनी कला विशिष्टता के लिए सराहना प्राप्त की है।

कौशिकी मुख्य रूप से पटियाला घराने की गई हैं। कौशिकी की गायन में ठुमरी और खयाल मुख्य है। अपने गायन में साढ़े तीन ऑक्टव की तानें गाना उनके गायन की विशेषता है। कौशिकी की ठुमरी गायन की प्रशंसक स्वयं कंठ कोकिला लता मंगेशकर जी रही हैं।

कौशिकी चक्रवर्ती ने शास्त्रीय गायन के साथ पार्श्व गायन भी किया है। अब तक वे अपने 27 म्यूजिक एल्बम जारी कर चुकी हैं। कौशिकी ने स्त्रीत्व का उत्सव मनाने के लिए छह महिलाओं के म्यूजिक बैंड 'सखी' का भी गठन किया। इस बैंड की सभी महिलाएं संगीत के प्रसिद्ध घरानों से हैं। कौशिक को 'सखी' के लिए प्रेरणा जाकिर हुसैन से मिली थी। महिलाओं द्वारा तालवादन के अनूठे विचार ने रूढ़िवादिता को तोड़ा और महिला कलाकारों के व्यक्तिव को रेखांकित किया।

वर्ष 2020 में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर राम नाथ कोविंद ने कौशीकी चक्रवर्ती को नारी शक्ति पुरस्कारों से सम्मानित किया तथा वे बी.बी.सी. पुरस्कार 2005 की युवा प्राप्तकर्ता हैं (उस समय कौशिकी चक्रवर्ती 25 वर्ष की थी)। उसके बाद 2010 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा उस्ताद बिस्मिल्लाह खान पुरस्कार, 2013 में आदित्य बिरला कला किरण पुरस्कार, 2017 में ए बी पी आनंद द्वारा "शेरा बंगला सम्मान" और जादू भट्ट पुरस्कार से 1995 में सम्मानित किया गया।

वर्ष 2012 में मिर्ची म्यूजिक अवार्ड्स में कौशीली चक्रवर्ती के एल्बम यात्रा को एल्बम ऑफ द इयर चुना गया और बेस्ट फीमेल वोकलिस्ट का अवार्ड मिला 2012 में उन्हें जी.आई.एम.ए. अवार्ड भी मिला। कौशीकी चक्रवर्ती गायिका होने के साथ एक शिक्षिका भी है। कौशिकी ने अपने संगीत करियर की शुरुआत अपने पिता अजय चक्रवर्ती के साथ की थी। अब तक उन्हें इस करियर में तीस साल पूरे हो चुके हैं। वे विभिन्न कार्यक्रम में उत्कृष्ठ संगीत प्रदर्शन कर भारतीय संगीत की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दे रही हैं।

संदर्भ

1. झा मोहनानंद, भारत के महान संगीतज्ञ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. गर्ग लक्ष्मी नारायण, राग विषारद, संगीत कार्यालय, दिल्ली।
3. चौधरी अमित ,राग की खोज, आकाश इंडिगो प्रकाशन, दिल्ली।
4. यादव आर. एस., बाबा तेरी सोन चिरैया, प्रकाशक लता दीनानाथ मंगेशकर ग्रामोफोन रिकॉर्ड संग्रहालय।
5. देव सुजाता, रूपहेले पर्दे की सुनहरी आवाज, ओम बुक्स दिल्ली।

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

ऑटिज्म से पीड़ित छात्रों की शैक्षिक चुनौतियाँ और समाधानः राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 के संदर्भ में

• साक्षी शर्मा–Author

• दीपक कुमार शर्मा–Corresponding Author

परिचय

ऑटिज्म को हिंदी में आत्मविमोह भी कहते हैं। मेडिकल भाषा में इसे ASD (Autism Spectrum Disorder) भी कहते हैं। ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे विशेष माने जाते हैं। यह एक न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर है, अर्थात विकास से जुड़ी हुई एक गंभीर बीमारी है। इस डिसऑर्डर से पीड़ित बच्चे को कई तरह की परेशानियां होती हैं। हालांकि इससे पीड़ित बच्चे भी कई तरह की प्रतिभाएं रखते हैं। इससे पीड़ित व्यक्ति को बातचीत करने में, पढ़ने–लिखने में, समाज के साथ पारस्परिक संबंध बनाने में परेशानियां आती है। ऑटिज्म कई प्रकार के हो सकते हैं जिसमें कुछ ऐसे पीड़ित बच्चे जिनका पढ़ने–लिखने में दिमाग बहुत तेज होगा, लेकिन कुछ बच्चे

• बी०एड० द्वितीय वर्ष, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• असिस्टेंट प्रोफेसर अध्यापक–शिक्षा विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

ऐसे भी मिलेंगे जिनका पढ़ने–लिखने में दिमाग बहुत कम मिलेगा, लेकिन वह कुछ कौशलों को बहुत अच्छे से सीख सकते हैं। इससे पीड़ित बच्चों को ऑटोस्टिक (Autistic) भी कहते हैं।

प्रत्येक वर्ष विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस 2 अप्रैल को मनाया जाता है। वर्ष 2007 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इसका प्रस्ताव दिया था और 18 दिसंबर 2007 को इसे अपनाया था। इस दिवस को ऑटिज्म से पीड़ित लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए, पीड़ित लोगों को समाज से जोड़ने हेतु जागरूकता फैलाने और पीड़ित लोगों को शिक्षित कर उन्हें सशक्त बनाने के लिए मनाया जाता है।

लक्षण

सामान्यतः इस बीमारी के लक्षण बच्चों में 12 से 18 माह की आयु में दिखाई पड़ते हैं, जो सामान्य से लेकर गंभीर तक हो सकते हैं। इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। यह बीमारी जीवनभर के लिए भी रह सकती है। ऑटिज्म से प्रभावित बच्चों में पाए जाने वाले लक्षण निम्न है–

- ऐसे बच्चे दूसरे बच्चों से मिलने से बचते हैं।
- ऐसे बच्चे खेल–कूद में कोई रुचि नहीं दिखाते हैं।
- इन्हें अकेला रहना ज्यादा पसंद होता है।
- ऐसे बच्चे किसी भी स्थान पर घंटों तक अकेले बैठे हुए चुपचाप देखते रहते हैं, किसी वस्तु पर एक ही जगह ध्यान रखते हैं और कोई एक ही काम को बार–बार करते हैं।

- इनका व्यवहार गुस्सैल, बेचौन, अशांत और तोड़फोड़ मचाने जैसा रहता है।
- यह किसी भी बातचीत के दौरान या किसी भी शब्द को एक से ज्यादा बार दोहराते रहते हैं।
- ये किसी भी बात पर किसी के प्रति अजीबोगरीब प्रतिक्रिया देते हैं।

अतः इस प्रकार से इन बच्चों में इस तरह के कई प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं।

ऑटोस्टिक बच्चों की शैक्षिक चुनौतियां

ऑटोस्टिक बच्चों की शैक्षिक चुनौतियों पर चर्चा करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऑटिज्म एक विकासात्मक विकार है। ऑटोस्टिक बच्चे अलग–अलग तरह की कठिनाइयों का सामना करते हैं, जिनका असर उनके सीखने की क्षमता पर पड़ता है। हालांकि यह ध्यान रखना जरूरी है कि ऑटिज्म के स्पेक्ट्रम पर हर बच्चे की जरूरत है और क्षमता अलग–अलग होती है, इसलिए चुनौतियां भी विभिन्न हो सकती हैं, जिन्हें हम निम्न बिंदुओं द्वारा जानेंगे–

8. सम्प्रेषण संबंधी चुनौतियां

ऑटोस्टिक बच्चों को अकसर सम्प्रेषण में कठिनाइयां होती है। यह बच्चे कभी–कभी शब्दों का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाते या उन्हें अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने में कठिनाई होती है। इसका असर उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर पड़ता है, क्योंकि वह अपने सवालों को सही तरीके से पूछ नहीं पाते या शिक्षक द्वारा दी गई जानकारी को ठीक से समझ नहीं पाते हैं। कुछ ऑटोस्टिक बच्चों में भाषण–कौशल विकसित नहीं हो पाता है, जिस कारण उन्हें कक्षा में सक्रिय भागीदारी में मुश्किल होती है।

9. सामाजिक संपर्क में कठिनाई

ऑटोस्टिक बच्चों के लिए सामाजिक संपर्क अकसर चुनौतीपूर्ण होता है। उन्हें सहपाठियों और शिक्षकों के साथ सामान्य रूप से बातचीत करने में कठिनाई होती है। उन्हें यह समझने में परेशानी होती कि दूसरे लोग क्या सोच रहे हैं या महसूस कर रहे हैं, जिसे सामाजिक संकट या 'थ्योरी ऑफ माइंड' कहा जाता है। इस कारण उन्हें समूह गतिविधियों, सहपाठियों के साथ खेल या समूह चर्चा में भाग लेने में समस्या होती है।

अधिकांश शिक्षण–विधियों में समूह कार्य या सामूहिक रूप से सीखने पर जोर दिया जाता है, जो ऑटिस्टिक बच्चों के लिए कठिन हो सकता है। ऐसे बालक व्यक्तिगत तौर पर काम करने में बेहतर हो सकते हैं लेकिन टीमवर्क और सहयोगी गतिविधियों में भाग लेना उनके लिए बेहद मुश्किल साबित हो सकता है। इसके कारण वह कभी–कभी सामाजिक रूप से अलग–थलग महसूस कर सकते हैं जो उनके आत्मसम्मान और शैक्षिक सफलता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

10. संवेदी संवेदनशीलता (Sensory Sensitivity)

ऑटिस्टिक बच्चों में संवेदी संवेदनशीलता आम होती है, जिसमें उन्हें शोर, उजाले, भीड़ या अन्य संवेदी इनपुट से परेशानी हो सकती है। चूंकि कक्षा का माहौल जहां शोरगुल और गतिविधियों से परिपूर्ण होता है अतः उनके लिए असुविधाजनक और विचलित करने वाला हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक ऑटिस्टिक बच्चा सामान्य रूप से होने वाले शोर से ज्यादा परेशान हो सकता हैय जैसे पंखे की आवाज या बहुत सारे बच्चों के साथ बोलने की ध्वनि।

11. पाठ्यक्रम और शिक्षक पद्धतियां

सामान्य शैक्षिक प्रणाली में उपयोग होने वाले पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धतियां ऑटिस्टिक बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती हैं। इन्हें अक्सर

अधिक दृश्य और व्यावहारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है, क्योंकि वे मौखिक निर्देशों को समझने में कठिनाई महसूस करते हैं। कई ऑटिस्टिक बच्चे विवरणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन वे बड़ी तस्वीर को समझने में संघर्ष कर सकते हैं। इसलिए, जब विषय या अवधारणाएं सारगर्भित हों, तो उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त समय सीमा के भीतर कार्य पूरा करना या परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करना भी उनके लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

12. मोटर स्किल्स और कार्यकारी क्रिया

कुछ ऑटिस्टिक बच्चों को मोटर स्किल्स (जैसे लिखने, काटने या पकड़ने) में कठिनाई होती है। यह समस्या उनकी शारीरिक गतिविधियों को प्रभावित करती है और उनके शिक्षा में बाधा बन सकती है। इसके अलावा, कार्यकारी क्रियाएं (Executive Functions) जैसे योजना बनाना, ध्यान केंद्रित करना और कार्य को पूरा करना उनके लिए चुनौती पूर्ण हो सकता है। कार्यकारी क्रियाओं में कमजोरी के कारण ऑटिस्टिक बच्चों को किसी भी कार्य को समय पर पूरा करने में मुश्किल होती है। वह व्यवस्थित रूप से काम करने के बजाय अक्सर उलझन में रहते हैं और उनका काम अधूरा रह जाता है।

ऑटिस्टिक बच्चों की शैक्षिक चुनौतियां का समाधान

ऑटिज्म जैसी विकासात्मक विकलांगताओं से पीड़ित बच्चों की संख्या में वृद्धि हो रही है। भारत में हर 500 बच्चों में से 1 बच्चा इससे पीड़ित होता है। इंडियन जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक्स के मुताबिक भारत में ऑटिज्म का अनुमानित प्रसार 68 बच्चों में से एक है। लड़कों में ऑटिज्म होने की संभावना लड़कियों की तुलना में चार गुना अधिक है।

ऑटिस्टिक बच्चों में सीखने की क्षमता कम पाई जाती है, लेकिन वे किसी न किसी कला से निपुण होते हैं। ऑटिस्टिक बच्चों की शैक्षिक चुनौतियों को कम करने के लिए शैक्षिक संस्थानों में समावेशी शिक्षा (Inclusive

Education) की आवश्यकता होती है। समावेशी शिक्षा का अर्थ है कि विशेष बच्चे या मानसिक रूप से पीड़ित बच्चे या विकलांग बच्चे या ऑटिस्टिक बच्चों को उनकी विशेष जरूरत के आधार पर सहायता प्रदान की जाए। इसके लिए शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण देना जरूरी है, ताकि वे इन बच्चों की जरूरत को समझ सके और उनके लिए एक अनुकूल शिक्षा का वातावरण बना सके।

ऑटिस्टिक बच्चों की चुनौतियों का समाधान करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अंतर्गत कुछ प्रमुख समाधान निम्न प्रकार दिए गए हैं–

13. समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) को बढ़ावा

NEP–2020 में समावेशी शिक्षा का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। जिसमें ऑटिस्टिक और विशेष जरूरत वाले बच्चों को मुख्याधारा की शिक्षा में शामिल करने का जोर दिया गया है। इसमें सभी बच्चों को समान अवसर और संसाधन उपलब्ध कराने की बात कही गई है ।

14. विशेष शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

NEP–2020 के तहत विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति और प्रशिक्षण पर ध्यान दिया गया है। इसमें विशेष शिक्षा की जरूरत को समझने वाले शिक्षकों के लिए समर्पित प्रशिक्षण कार्यक्रम जरूर शुरू किए गए हैं ताकि वह ऑटिस्टिक बच्चों की विशेष चुनौतियों का सही ढंग से समाधान कर सके।

15. वैयक्तिकृत शिक्षा कार्यक्रम (Individualised Education Program & IEP)

IEP एक कानूनी दस्तावेज है जो विशेष शिक्षा सेवाओं और सुविधाओं को निर्दिष्ट करता है ताकि छात्रों की विशिष्ट जरूरतों को पूरा किया जा सके और उन्हें शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिल सके। NEP–2020

में वैयक्तिकृत शिक्षा कार्यक्रम की अनुशंसा की गई है। यह योजनाएं प्रत्येक बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप बनाई गई है जिससे ऑटिस्टिक बच्चों को उनकी व्यक्तिगत जरूरत के अनुसार शिक्षा मिले।

16. तकनीकी और डिजिटल सहायता

ऑटिस्टिक बच्चों या अन्य मानसिक रूप से पीड़ित या विकलांग बच्चों के लिए NEP–2020 में तकनीकी और डिजिटल उपकरणों के उपयोग को बढ़ावा दिया गया है। विशेष रूप से डिजाइन किए गए एप्स, गेम्स और अन्य डिजिटल संसाधनों को शिक्षा में शामिल करने की बात कही गई है, जिससे उनका शैक्षिक अनुभव बेहतर हो सके।

17. संवेदी अनुकूल शैक्षिक माहौल

इसके अंतर्गत स्कूलों में संवेदी अनुकूल शिक्षक माहौल बनाने की दिशा में कदम उठाए गए हैं। इसका उद्देश्य ऑटिस्टिक बच्चों को उनकी संवेदन जरूरत के अनुसार एक शांतिपूर्ण और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है।

18. मल्टी–डिसीप्लिनरी टीम का सहयोग

NEP-2020 में मल्टी डिसीप्लिनरी टीम के सहयोग से ऑटिस्टिक बच्चों की शैक्षिक–प्रगति पर ध्यान देने की बात कही गई है। इसमें चिकित्सक, विशेष शिक्षक, मनोवैज्ञानिक और अन्य पेशेवर शामिल होते हैं, जो बच्चों की विशेष जरूरत को समझ कर उन्हें व्यक्तिगत सहायता प्रदान करते हैं।

19. समान अवसर और करियर विकास

ऑटिस्टिक बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ व्यावसायिक कौशल और करियर विकास के अवसर देने पर भी NEP–2020 में जोर दिया गया है ताकि वह अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो सके।

निष्कर्ष

ऑटिस्टिक बालक एक विशेष बालक होता है, जिसे विशेष रूप से शिक्षा मिलनी चाहिए। जिसके लिए सरकार ने विशेष स्कूलों और NEP–2020 ने समावेशी स्कूलों के निर्माण करने की व्यवस्था की है। जिससे बच्चे की जरूरत को पूर्ण किया जा सके और उनको मनोवैज्ञानिक रूप से समझा जा सके। जिससे बच्चों को उनके अनुकूल शैक्षिक वातावरण मिल सके। कक्षा में ऑटिस्टिक बच्चों की विशेष जरूरत को ध्यान में रखते हुए कुछ समायोजन किया जा सकते हैं जैसे कि एक शांतिपूर्ण माहौल तैयार करना, दृश्य–श्रव्य शिक्षण सामग्री का उपयोग करना। इसके साथ ही सहपाठियों को भी संवेदनशील बनाना जरूरी है ताकि वे इन बच्चों के साथ सहानुभूति और समझदारी के साथ व्यवहार कर सके।

संदर्भ

1. "Autism Spectrum Disorder." Indian Journal of Pediatrics, vol. 87, no. 8, 2020, pp. 619-624. SpringerLink, doi:10.1007/s12098-020-03336-6.
2. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार, https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_Hindi.pdfi
3. Sharma, Ramesh, and Pooja Verma. "Understanding Autism Spectrum Disorder in Children: Challenges and Interventions." Journal of Special Education, vol. 15, no. 2, 2022, pp. 78-95.
4. सिंह, अंजलि, ऑटिस्टिक बच्चों और शिक्षाः बाधाएं और अवसर, भारतीय शिक्षा जर्नल, वॉल्यूम11, अंक 1, 2021, पृष्ठ 35–42।
5. संयुक्त राष्ट्र महासभा, विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस, संयुक्त राष्ट्र, 18 दिसंबर 2007, www.un.org/en/observances/autism-day

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

महिलाओं पर स्वयं सहायता समूह का प्रभाव

- सोनिका–**Author**
- डॉ. अनीता–**Corresponding Author**

परिचय

स्वयं सहायता समूह को एक ''सुरक्षित समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है जो मानवीय सहायता को उन समस्याओं को बदलने या सुधारने के साधन के रूप में महत्व देता है। जिन्हें इसके प्रतिभागियों द्वारा परिवर्तनीय दबावपूर्ण और व्यक्तिगत माना जाता है।'' एक स्वयं सहायता समूह में 10 या 20 सदस्य होते हैं जो अपेक्षाकृत सामान्य आर्थिक वर्ग (जैसे गरीब) से चुने जाते हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण निर्धनों का एक छोटा समूह होता है। जिसके सदस्यों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति लगभग समान होती है। यह सामूहिक प्रयास से अपने जीवन दशा को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण निर्धनों का एक छोटा समूह होता है। जिनके सदस्यों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति लगभग समान होती है यह समूह प्रयास से अपने जीवन दशा में बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं।

- एम.ए. द्वितीय वर्ष, समाजशास्त्र, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
- असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

यह स्वप्रेरणा से बचत के लिए बनाया गया समूह होता है। इसके सदस्य समूह को संस्थागत रूप देने के लिए हर सप्ताह या 15 दिन में समूह द्वारा निश्चित धनराशि जमा करके एक साधारण निधि का निर्माण करते हैं जो आगे चलकर समूह की शक्ति बन जाती है।

स्वयं सहायता समूह की उत्पत्ति और अवधारणा

स्वयं सहायता समूह गरीब लोगों को गरीबी से उभरने के लिए आवश्यक ऋण प्रदान करता है। भारत में SHG की उत्पत्ति 1972 में स्वरोजगार महिला संगठन (SEWA) की स्थापना से मानी जाती है। 1993 में नाबार्ड ने भारतीय रिजर्व बैंक के साथ मिलकर SHG को बैंकों में बचत खाता खोलने की अनुमति दी। स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह की भूमिका महिला सशक्तिकरण के बारे में जानने के लिए कि गया है। इसके अंतर्गत यह प्रमुख प्रमुख रूप से एक गांव को सम्मिलित किया गया है इस गांव में कार्यरत कर स्वयं सहायता समूहके आठ महिला उत्तरदाताओं का अध्ययन किया गया है।

स्वयं सहायता समूह का इतिहास

1983 में ग्रामीण बैंक की स्थापना करके मोहम्मद यूनुस ने आसान शर्तों पर ऋण के माध्यम से सबसे गरीब लोगों के लिए आत्मनिर्भरता के अपने सपने को साकार करने की कोशिश की। भारत में सग मॉडल प्रोफेसर यूनुस के ग्रामीण बैंक मॉडल से प्रेरित होकर वर्ष 1984 में प्रस्तुत किया गया था। स्वरोजगार महिला संगठन की स्थापना 1972 में हुई, जिसके परिणाम स्वरुप भारत में स्वयं सहायता समूह का उदय हुआ। इससे पहले स्वयं संगठन की दशा में एक छोटा सा प्रयास किया गया था जैसे की अहमदाबाद में कपड़ा मजदूर संघ ने 1954 में अपनी महिला शाखा बने ताकि पुरुष शरीर को के परिवारों की महिलाएं सिलाई, बुनाई आदि जैसे कौशल सीख सके। स्वरोजगार महिला संघ सेवा की स्थापना इलाहाबाद

द्वारा स्वरोजगार वाली महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए की गई थी, जो कुम्हार, फेरीवाले, बुनकर और अन्य असंगठित क्षेत्र में काम करती थी।

स्वयं सहायता समूह बैंक लीकेज परियोजना के एक भाग के रूप में जो 1992 में विश्व की सबसे बड़ी माइक्रोफाइनेंस परियोजना बन गई, नाबार्ड ने एससीजी बैंक लिकेज परियोजना की स्थापना की। नाबार्ड और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 1993 में स्वयं सहायता समूह के लिए बैंक कार्य में बचत बैंक खाता खोलने की अनुमति दी गई। भारत सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना शुरू की गई बाद में 2011 में यह राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के रूप में विकसित हुआ।

स्वयं सहायता समूह की विशेषताएं

- समूह के सदस्यों की संख्या 10 से 20 तक होती है, परिवार का कोई एक सदस्य पुरुष या सभी स्वयं सहायता समूह का सदस्य बन सकता है।
- सदस्यों की उम्र 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए और उन्हें मानसिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए।
- समूह के सदस्यों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति लगभग समान होती है।
- समूह में गरीबी रेखा के नीचे तथा गरीबी रेखा के ऊपर दोनों स्तर के सदस्य होते हैं।
- समूह के सभी सदस्य नियमित रूप से थोड़ी–थोड़ी बचत कर सामूहिक निधि में जमा करते हैं। समूह के सदस्य एक ही गांव, मोहल्ले के होते हैं।
- समूह के सदस्य हफ्ते, 15 दिन या महीने में एक बैठक कर विभिन्न विषयों पर चर्चा कर एक दूसरे की सामाजिक– आर्थिक समस्याओं

का समाधान करते हैं। इसी बैठक के दौरान बचत राशि को जमा, ऋण लेन–देन लेखा जोखा आदि धर्मो का संपादन किया जाता है।

- स्वयं सहायता समूह द्वारा समूह के बचत खाते की राशि का समूह के अंतर्गत सदस्यों को ऋण प्रदान करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
- स्वयं सहायता समूह को कर्ज देने के लिए 50,000/– तक के ऋण द्वारा कोई भी मार्जिन और प्रतिभूति मानदंड नहीं रखा जाता है।

स्वयं सहायता समूह के कार्य

- वे रोजगार और आय– सृजन गतिविधियों के क्षेत्र में समाज के गरीब और हासिय पर पड़े वर्गों की कार्यात्मक क्षमता का निर्माण करने का प्रयास करते हैं।
- वे ऐसे लोगों को बिना किसी जमानत के ऋण उपलब्ध कराते हैं जिन्हें आमतौर पर बैंकों से ऋण प्राप्त करने में कठिनाई होती है।
- वह आपकी विचार– विमर्श और सामूहिक नेतृत्व के माध्यम से संघर्षों का समाधान करते हैं।
- वह गरीबों में बचत की आदत को भी प्रोत्साहित करते हैं।

स्वयं सहायता समूह के लाभ

- स्वयं सहायता समूह के सामाजिक बुराइयों जैसे दहेज, शराबखोरी, कम उम्र में विवाह आदि को खत्म करने में मदद करते हैं।
- महिला स्वयं सहायता समूह को सशक्त बनाकर राष्ट्र को सच्ची लैंगिक समानता की ओर ले जाने में मदद मिलती है।

- स्वयं सहायता समूह लोगों को बचत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- एसएचजी ने समाज के कम प्रतिनिधित्व वाले और आवाज हीन वर्गों को आवाज दी है।
- स्वयं सहायता समूह व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर लोगों को आजीविका कमाने में मदद करते हैं।

स्वयं सहायता समूह एवं बैंक लिंकेज कार्यक्रम

स्वयं सहायता समूह बैंक लिंकेज परियोजना वर्ष 1992 में नाबार्ड द्वारा शुरू की गई थी और अब यह विश्व की सबसे बड़ी माइक्रोफाइनेंस परियोजना बन गई है। इस कार्यक्रम के तहत बैंकों को समूह के लिए बचत खाता खोलने की अनुमति दी गई है। एसएचजी बैंक लिंकेज प्रोग्राम, एक गेम चेंजर के रूप में स्थापित हुआ जिसमें लगभग 97.5% SHG के अब बैंक खाते हैं। यह मजबूत बैंकिंग संबंध समय पर शरण पहुंच को सक्षम बनाता है जो आर्थिक मूल्य वर्धन के लिए महत्वपूर्ण है कम ब्याज दरों पर इष्टतम फंड के साथ SHG रूकावटो पर नियंत्रण कर अपनी पूरी मार्केटिंग क्षमता का उपयोग करते हैं। अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का SHG पोर्टफोलियो अब लगभग दो ट्रिलियन का है।

शोध पद्धति

शोध पद्धति का अर्थ है, शोध करने का तरीका यानी शोध किस तरह, किस आधार पर किस विषय पर किया जा सकता है। शोध पद्धति शोध को वैधानिकता प्रदान करती है, और वैज्ञानिक रूप से ठोस निष्कर्ष प्रदान करती है यह शोधकर्ताओं को ट्रैक पर रखने में मदद करती है।

शोध क्षेत्र

प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी के द्वारा स्वयं सहायता समूहके अध्ययन के लिए धूम मानिकपुर गांव का अध्ययन किया गया है।

निदर्शन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में चार स्वयं सहायता समूहों से 8 महिला उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

यंत्र एवं तकनीक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों के संकलन के स्रोत

आंकड़ों के संकलन के स्रोतों के रूप में प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में सर्वेक्षण साक्षात्कार प्रश्नावली आदि का प्रयोग किया गया है, जबकि द्वितीय स्रोतों के रूप में पत्र पुस्तक, जनरल, प्रकाशित पुस्तक आदि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक और अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप को सम्मिलित किया गया है।

स्वयं सहायता समूह का महिला उत्तरदाताओं पर प्रभाव

समूह के प्रभाव को समझने के लिए निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है–

- **आर्थिक प्रभाव**– पांच महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि उनकी आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जबकि तीन महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।

- **सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव**– कुल आठ महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि परिवार में इनका सम्मान पहले से ज्यादा होने लगा है तथा उनकी सामाजिक स्थिति भी पहले से बेहतर हो गई है।

- **आय पर अधिकार**– कुल आठ महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि वह अपनी आय का प्रयोग अपने और अपने परिवार के लिए करती है आय पर इन महिलाओं का स्वयं का अधिकार है।

- **निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव**– कुल आठ महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके निर्णय लेने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है जैसे की वे अपनी मर्जी से बाहर आने जाने लगी है।

निष्कर्ष

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद महिलाएं आत्मनिर्भर हो गई है, जैसे कि ऊपर स्पष्ट किया गया है इसे महिलाओं को आत्मनिर्भर होने में मदद मिली है। सरकार को ऐसे कार्यक्रमों को और बढ़ावा देना चाहिए जिससे कि महिलाएं आर्थिक,राजनीतिक सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं में नेतृत्व कौशल का भी विकास हुआ है।

संदर्भ

1. महाजन धर्मवीर, महाजन कमलेश, समाजशास्त्र की आधुनिक पद्धति–विवेक प्रकाशन, दिल्ली।
2. https:// shodhganga. inflibnet.ac .in
3. https://byjus.com
4. https:// www. drishtiias.com
5. https://hi.vikaspedia.in

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

शहरी अलगाव भारतीय शहरों में छिपा मानसिक संकट

• यशवी शर्मा–Author
• डॉ. विनीता सिंह–Corresponding Author

परिचय

आज के समय में भारत में शहरीकरण बहुत तेजी से बढ़ रहा लोग बेहतर जीवन शैली रोजगार और सुविधाओं की तलाश में गांव और छोटे शहरों से बड़े शहरों में पलायन कर रहे हैं मुंबई दिल्ली बेंगलुरु जैसे महानगरों में लोग अपने सपनों को पूरा करने के लिए यहां पर आते हैं हालांकि इन शहर की चकाचौंध मैं एक अदृश्य समस्या भी है सहरियाल का एक ऐसी मानसिक और सामाजिक स्थिति है जहां लोग भले ही भौतिक रूप से दूसरे के पास रहते हैं लेकिन वह मानसिक और भावनात्मक रूप से खुद को अकेला महसूस करते हैं। शहरी अलगाव एक ऐसा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अवधारणा है, जिसमें शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोग सामाजिक संपर्क और समुदायिक समर्थन से कट जाते हैं। यह विशेष रूप से बड़े और घनी आबादी वाले शहरों में पाया जाता है, जहां लोग भले ही भौतिक

• बी.ए. पंचम सेमेस्टर, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

रूप से एक–दूसरे के करीब होते हैं, लेकिन मानसिक और भावनात्मक रूप से अलगाव का अनुभव करते हैं। इसका इतिहास शहरीकरण की प्रक्रिया से गहराई से जुड़ा हुआ है।

शहरी अलगाव का इतिहास समझने के लिए हमें शहरीकरण की विभिन्न चरणों और इसके सामाजिक प्रभावों को देखना होगा।

प्रारंभिक शहरीकरण और समुदाय

प्राचीन समय में, जब शहर छोटे थे और लोगों के बीच घनिष्ठ सामाजिक संबंध थे, शहरी अलगाव का अस्तित्व कम था। अधिकांश प्राचीन नगर जैसे कि मेसोपोटामिया, मिस्र, सिंधु घाटी आदि सभ्यताओं में लोग एक–दूसरे को पहचानते थे और सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेते थे। ग्रामीण समाज में भी लोग आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े रहते थे, और छोटे शहरी केंद्रों में यह प्रवृत्ति बनी रही। लेकिन जैसे–जैसे शहरों का आकार और जनसंख्या बढ़ी, समुदायिक समर्थन प्रणाली कमजोर होने लगी।

औद्योगिक क्रांति और शहरी अलगाव का उदय

औद्योगिक क्रांति (18वीं और 19वीं सदी) ने शहरी अलगाव की समस्या को और बढ़ा दिया। इस समय तेजी से शहरीकरण हुआ, और गाँवों से लोग रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे। यह अचानक हुई जनसंख्या वृद्धि शहरों में अव्यवस्था, भीड़भाड़, और सामाजिक ढांचे में बदलाव का कारण बनी।

➢ अव्यवस्थित शहरीकरण

लोग औद्योगिक शहरों में तो आ गए, लेकिन वहाँ के सामाजिक ढाँचे पहले से तैयार नहीं थे। लोग अपने पारिवारिक और सामाजिक समर्थन से दूर हो गए, जिससे वे एकाकी महसूस करने लगे। छोटे–छोटे मकानों में लोगों का घनत्व बढ़ा, जिससे समाज में आपसी संपर्क और संवाद घट गया।

➢ सामाजिक असमानता और अलगाव

औद्योगिक समाज में अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ी। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीब मजदूरों को आवास और सेवाओं की कमी का सामना करना पड़ा, जबकि अमीर वर्ग शहरी जीवन का आनंद ले रहे थे। यह आर्थिक असमानता सामाजिक अलगाव का एक बड़ा कारण बनी।

➢ नया कार्यसंस्कृति और व्यक्तिगतता

औद्योगिक शहरों में लोग एक दूसरे से परिचित होने के बजाय अपने व्यक्तिगत कामों में लगे रहते थे। कार्यस्थल पर भी आपसी संबंध व्यवसायिक तक सीमित थे। इसने पारंपरिक समाजिक संबंधों को कमजोर कर दिया, और लोग मानसिक रूप से एकाकी हो गए।

20वीं सदी का शहरीकरण और आधुनिक शहरी अलगाव

20वीं सदी में, विशेषकर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, दुनिया भर में शहरीकरण की गति और तेज हुई। बड़े पैमाने पर मकानों और अपार्टमेंट्स का निर्माण हुआ। इस शहरी विस्तार के साथ ही शहरी अलगाव भी बढ़ता गया।

➢ उच्च वृद्धि वाले अपार्टमेंट और अलगाव

आधुनिक शहरीकरण ने ऊंची इमारतों और बड़े अपार्टमेंटों का निर्माण किया। इन अपार्टमेंटों में लोग एक ही इमारत में रहते तो थे, लेकिन एक–दूसरे से अजनबी की तरह। इस प्रकार की आवासीय संरचनाओं ने समुदायिक जीवन को कमजोर कर दिया और लोगों के बीच सामाजिक संपर्क कम कर दिया।

➢ आधुनिक जीवनशैली और अलगाव

20वीं सदी के उत्तरार्ध में आधुनिक जीवनशैली, तकनीकी विकास, और व्यक्तिगतता के बढ़ते प्रभाव ने शहरी अलगाव को और गहरा किया। लोग

अपने–अपने व्यक्तिगत जीवन में अधिक ध्यान केंद्रित करने लगे और सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी कम हो गई।

➢ प्रवासी श्रमिक और सांस्कृतिक अलगाव

वैश्वीकरण के कारण दुनिया भर के शहरों में प्रवासी श्रमिकों की संख्या बढ़ी। ये प्रवासी अपने घर–परिवार से दूर होते हैं, और अक्सर सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक रूप से शहर की मुख्यधारा से कट जाते हैं। यह प्रवासी समुदायों के भीतर और शहरी समाज में अलगाव का एक प्रमुख कारण बनता है।

तकनीकी युग और डिजिटल युग में शहरी अलगाव

21वीं सदी में तकनीकी प्रगति और डिजिटल युग के आगमन ने शहरी अलगाव को एक नए स्तर पर पहुंचा दिया है। आजकल लोग एक ही शहर में रहते हुए भी आपस में व्यक्तिगत रूप से कम और डिजिटल माध्यमों से अधिक संपर्क में रहते हैं।

➢ सोशल मीडिया और आभासी दुनिया

आज के समय में लोग सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से भले ही दुनिया भर से जुड़े हों, लेकिन यह संपर्क अक्सर सतही और अस्थाई होता है। वास्तविक जीवन में सामाजिक संपर्क की कमी और डिजिटल दुनिया की अति–निर्भरता ने शहरी अलगाव को और बढ़ाया है।

➢ कार्य संस्कृति में परिवर्तन

हाल के वर्षों में, विशेषकर कोविड–19 महामारी के बाद, जब श्वर्क फ्रॉम होमश (घर से काम) का प्रचलन बढ़ा, तब लोगों के आपसी संपर्क और सामाजिक जीवन में गिरावट आई। अब लोग अपने घरों में ही बंद रहते हैं और शारीरिक रूप से अलगाव का अनुभव करते हैं।

शहरी अलगाववाद के विभिन्न आयाम

शहरी अलगाववाद एक जटिल और बहुस्तरीय मुद्दा है, जिसमें कई पहलू शामिल हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं का विवरण हैरू

1. **सामाजिक आयामः** शहरी अलगाववाद के सामाजिक पहलू में समुदायों के बीच संबंधों की कमी, सामाजिक एकता की कमी और सामुदायिक पहचान की कमी शामिल है।

2. **आर्थिक आयामः** शहरी अलगाववाद के आर्थिक पहलू में आर्थिक असमानता, रोजगार की कमी, और संसाधनों की कमी शामिल है।

3. **सांस्कृतिक आयामः** शहरी अलगाववाद के सांस्कृतिक पहलू में सांस्कृतिक पहचान की कमी, सांस्कृतिक विविधता की कमी और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की कमी शामिल है।

4. **राजनीतिक आयामः** शहरी अलगाववाद के राजनीतिक पहलू में राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी, राजनीतिक भागीदारी की कमी और राजनीतिक शक्ति की असमानता शामिल है।

5. **शैक्षिक आयामः** शहरी अलगाववाद के शैक्षिक पहलू में शिक्षा की कमी, शिक्षा की गुणवत्ता में कमी और शिक्षा के अवसरों में असमानता शामिल है।

6. **स्वास्थ्य आयामः** शहरी अलगाववाद के स्वास्थ्य पहलू में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में कमी और स्वास्थ्य संबंधी असमानता शामिल है।

7. **पर्यावरण आयामः** शहरी अलगाववाद के पर्यावरण पहलू में पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण असमानता और पर्यावरण संरक्षण में कमी शामिल है।

8. **तकनीकी आयामः** शहरी अलगाववाद के तकनीकी पहलू में तकनीकी पहुंच की कमी, तकनीकी शिक्षा की कमी और तकनीकी संसाधनों की कमी शामिल है।

शहरी अलगाववाद के प्रभाव

- शहरी अलगाववाद से सामाजिक संबंधों में कमी आती है, जिससे सामाजिक अस्थिरता बढ़ती है।
- शहरी अलगाववाद से आर्थिक विकास में बाधा आती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच आर्थिक संबंधों में कमी आती है।
- शहरी अलगाववाद से सांस्कृतिक विविधता में कमी आती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान में कमी आती है।
- शहरी अलगाववाद से राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच राजनीतिक मतभेदों में वृद्धि होती है।
- शहरी अलगाववाद से शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में कमी आती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच संसाधनों की कमी होती है।
- शहरी अलगाववाद से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि होती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच पर्यावरण संरक्षण में कमी आती है।
- शहरी अलगाववाद से तकनीकी पिछड़ेपन में वृद्धि होती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच तकनीकी संसाधनों की कमी होती है।

- शहरी अलगाववाद से मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती हैं, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में कमी आती है।
- शहरी अलगाववाद से अपराध और हिंसा में वृद्धि होती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच सामाजिक और आर्थिक मतभेदों में वृद्धि होती है।
- शहरी अलगाववाद से शहरी विकास में बाधा आती है, क्योंकि अलग–अलग समुदायों के बीच सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मतभेदों में वृद्धि होती है।
- शहरी अलगाव के कारण लोग अकेलेपन, अवसाद और मानसिक तनाव का अनुभव करने लगते हैं। बिना समाजिक समर्थन के लोग अधिक मानसिक तनाव का सामना करते हैं।
- शहरी क्षेत्रों में समुदायिक भावना की कमी होती जा रही है। लोग एक ही जगह रहते हुए भी एक–दूसरे से अपरिचित रहते हैं और आपसी सहयोग की भावना कमजोर हो गई है।
- शहरी अलगाव का एक और प्रभाव अपराध दर में वृद्धि है। जब लोग सामाजिक रूप से अलग–थलग हो जाते हैं, तब अपराध और असामाजिक गतिविधियों में वृद्धि की संभावना बढ़ जाती है।

समाधान और उपाय

- **सामुदायिक कार्यक्रमः** शहरों में सामुदायिक कार्यक्रम और आयोजनों को बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग एक दूसरे से मिल सके और सामाजिक संबंध बना सकें। सामुदायिक कार्यक्रमों का आयोजन करके अलग–अलग समुदायों के बीच सामाजिक संबंधों में वृद्धि की जा सकती है।

- **शहर योजना में सुधारः** शहरी नियोजन को ऐसे ढंग से किया जाना चाहिए लोग अधिक से अधिक एक दूसरे से जुड़ सके जैसे सामुदायिक पार्क सार्वजनिक स्थान जहां लोग समय बिता सके और मिलजुल कर रह सके।

- **सोशल मीडिया का सीमित प्रयोगः** सोशल मीडिया व डिजिटल दुनिया से दूरी बनाकर लोग वास्तविक जीवन में अधिक सामाजिक संपर्क बना सकते हैं इसलिए डिजिटल डिटॉक्स और ऑनलाइन समय की सीमा तय करना महत्वपूर्ण है।

- **आर्थिक विकास के लिए नीतियों का निर्माणः** आर्थिक विकास के लिए नीतियों का निर्माण करके अलग–अलग समुदायों के बीच आर्थिक संबंधों में वृद्धि की जा सकती है।

- **सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमः** सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन करके अलग–अलग समुदायों के बीच सांस्कृतिक विविधता में वृद्धि की जा सकती है।

निष्कर्ष

शहरी अलगाव शहरीकरण की एक अवांछित उपज है, जिसने समाजिक संबंधों और समुदायिक जीवन को कमजोर कर दिया है। यह प्रवृत्ति हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि कैसे हम शहरी जीवन में सामूहिकता और आपसी संबंधों को फिर से मजबूत कर सकते हैं। इसके समाधान के लिए हमें ऐसी शहरी योजनाओं की आवश्यकता है जो न केवल भौतिक संरचनाओं का निर्माण करें, बल्कि समाजिक संरचना को भी ध्यान में रखें, ताकि लोग शहरी जीवन में भी एक सामुदायिक भावना का अनुभव कर सकें। शहरी अलगाव का अनुभव विशेष रूप से बड़े शहरों में होता है, जहां लोग अक्सर अपने व्यक्तिगत जीवन में व्यस्त रहते हैं और सामुदायिक संबंधों में कमी महसूस करते हैं। यह सामाजिक संपर्क की कमी, एकाकीपन, और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का कारण बनता है। इस विषय

का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें यह समझने में मदद करता है कि कैसे तेजी से बदलते समाज में हम सामाजिक संबंधों को मजबूत कर सकते हैं और एक सामूहिक भावना को बढ़ावा दे सकते हैं। शहरी अलगाव के प्रभाव और इसके समाधान की तलाश में एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, ताकि हम एक स्वस्थ और संतुलित समाज का निर्माण कर सकें।

सन्दर्भ

1. शर्मा रीता, शहरी अलगाव और शहरी योजना, अग्रवाल पब्लिशर्स, 2016
2. भारद्वाज संगीता, शहरी अलगाव और सामुदायिक विकास, रावत पब्लिकेशन्स, 2018
3. कुमार प्रमोद, शहरी अलगाव के सामाजिक और आर्थिक पहलू, ग्रन्थम पब्लिकेशन्स, 2019
4. जोशी रामशरण, शहरी अलगाव, एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, राजपाल एंड सन्ज, 2019
5. मिश्रा मृदुला, शहरी अलगाव और सामाजिक न्याय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2020

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

लता मंगेशकर और मोहमद रफी : एक सुनहरा युग

• तनु विकल–**Author**

• डॉ. बबली अरुण–**Corresponding Author**

लता मंगेशकर

प्रत्येक संगीत प्रेमियों के दिलों में छाई रहने वाली आदरणीय लता जी भारत की सबसे लोकप्रिय व प्रतिष्ठित गायिका है। वह एक पार्श्व गायिका होने के साथ–साथ संगीत निर्देशक व फिल्म निर्माता भी रही है। इसके अलावा उन्होंने कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया। लता जी को स्वर साम्राज्ञी, राष्ट्र की आवाज, भारत कोकिला, और स्वर कोकिला जैसे नाम से भी जाना जाता है लता जी ने 36 भाषाओं में गाने गए हैं। जिनमे हिंदी, बंगाली और मराठी भाषाएं प्रमुख रही हैं।

लता जी का जन्म 26 सितंबर 1929 इंदौर में हुआ था। इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में पंडित दीनानाथ जी के घर में हुआ था। पंडित दीनानाथ जी बच्चों को संगीत की शिक्षा दिया करते थे, एवं थिएटर में कार्य करते थे। लता मंगेशकर जी का बचपन का नाम हेमा था। उनके पिता ने अपने एक

• बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.
• असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

नाटक, 'भाव बंधन' के एक चरित्र 'लतिका' के नाम पर लता रखा। लता मंगेशकर केवल एक दिन स्कूल गई वहां पर छोटी बहन आशा को लाने से मना करने के कारण विद्यालय छोड़ दिया। लता मंगेशकर ने 6 साल की उम्र से संगीत शिक्षा लेना प्रारंभ की। लता जी के बाल्यकाल को लेकर एक कहानी प्रचलित है कि उनके पिता जब बच्चों को संगीत सिखा रहे थे, तब उनके पिता की अनुपस्थिति में एक बच्चा राग गायन गलत करने लगा, तो लता उस बच्चे को ठीक करने लगी इस बीच उनके पिता पीछे खड़े होकर यह सब देख रहे थे। और उसी दिन से उनके पिता दीनानाथ जी ने उन्हें संगीत शिक्षा देनी प्रारंभ कर दी। वह लता को अपने साथ संगीत समारोह में गायन के लिए भी ले जाते थे। लता जब केवल 13 साल की थी, जब उनके पिता का ह्रदय रोग के कारण निधन हो गया। घर में बड़ी बेटी होने के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारियां उनके कंधों पर आ गई।

प्रत्येक संगीत प्रेमियों के दिलों में छाई रहने वाली आदरणीय लता जी भारत की सबसे लोकप्रिय व प्रतिष्ठित गायिका है। वह एक पार्श्व गायिका होने के साथ–साथ संगीत निर्देशक व फिल्म निर्माता भी रही है। इसके अलावा उन्होंने कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया। लता जी को स्वर साम्राज्ञी, राष्ट्र की आवाज, भारत कोकिला, और स्वर कोकिला जैसे नाम से भी जाना जाता है लता जी ने 36 भाषाओं में गाने गए हैं। जिनमे हिंदी, बंगाली और मराठी भाषाएं प्रमुख रही हैं।

लता जी का जन्म 26 सितंबर 1929 इंदौर में हुआ था। इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में पंडित दीनानाथ जी के घर में हुआ था। पंडित दीनानाथ जी बच्चों को संगीत की शिक्षा दिया करते थे, एवं थिएटर में कार्य करते थे। लता मंगेशकर जी का बचपन का नाम हेमा था। उनके पिता ने अपने एक नाटक, 'भाव बंधन' के एक चरित्र 'लतिका' के नाम पर लता रखा। लता मंगेशकर केवल एक दिन स्कूल गई वहां पर छोटी बहन आशा को लाने से मना करने के कारण विद्यालय छोड़ दिया। लता मंगेशकर ने 6 साल की उम्र से संगीत शिक्षा लेना प्रारंभ की। लता जी के बाल्यकाल को लेकर

एक कहानी प्रचलित है कि उनके पिता जब बच्चों को संगीत सिखा रहे थे, तब उनके पिता की अनुपस्थिति में एक बच्चा राग गायन गलत करने लगा, तो लता उस बच्चे को ठीक करने लगी इस बीच उनके पिता पीछे खड़े होकर यह सब देख रहे थे। और उसी दिन से उनके पिता दीनानाथ जी ने उन्हें संगीत शिक्षा देनी प्रारंभ कर दी। वह लता को अपने साथ संगीत समारोह में गायन के लिए भी ले जाते थे। लता जब केवल 13 साल की थी, जब उनके पिता का हृदय रोग के कारण निधन हो गया। घर में बड़ी बेटी होने के कारण परिवार की सारी जिम्मेदारियां उनके कंधों पर आ गई।

पिता की मृत्यु के बाद पैसों की कमी व परिवार की जिम्मेदारी के कारण लता जी ने फिल्मों में अभिनय भी किया। उनको अभिनय बिल्कुल पसंद नहीं था। उनकी पहली फिल्म 'पाहिली मगलागौर' जो की 1942 में आई। 1943 में मांझे बाल, चिमुकला संसार, 1944 में गजभाऊ, 1945 में बड़ी मां, 1946 में जीवन यात्रा, 1948 में मंद और 1952 में छत्रपति शिवाजी फिल्मों में काम किया। लता जी का पहला गाना 'नाचू या गाडे खेलूं सारी मनी होश भारी' आज तक रिलीज नहीं हुआ। यह गाना सदाशिव राव नेवरेकर ने मराठी फिल्म किट्टी हसल के लिए 1942 में कंपोज किया था। यह गाना लता की आवाज में रिकॉर्ड तो हुआ लेकिन फिल्म से काट दिया गया। 1946 में लता मंगेशकर जी ने 'आपकी सेवा में' फिल्म के लिए 'पा लूंगा कर जोरी' गीत गया। जिसे गाने के बाद लता मंगेशकर की खूब चर्चा हुई। 1948 में लता जी ने 'मजबूर' फिल्म के गाने 'अंग्रेजी छोरा चला गया' और 'दिल मेरा तोड़ा हाय मुझे कहीं का नहीं छोडा तेरे प्यार ने' से अधिक प्रसिद्धि पाई। 1948 में लता जी ने फिल्म 'महल' के लिए 'आएगा आने वाला' गीत गया जो कि उनके कैरियर का पहला सुपर डुपर हिट गाना था। जिस से लता को बहुत अधिक प्रसिद्धि मिली और फिर उन्होंने अपने कैरियर में कभी भी मुड़ कर नहीं देखा और इसके बाद उन्होंने एक से एक सुपरहिट गाने गाये। लता मंगेशकर ने गायन के साथ–साथ फिल्म निर्माण भी किया। 1953 वाडाल (मराठी), झांझर (हिंदी), 1955 कंचन गंगा (हिंदी), और 1991 लेकिन (हिंदी) फिल्मों का निर्माण किया।

लता मंगेशकर ने छोटी सी उम्र से परिवार की जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने 13 साल की उम्र से ही परिवार की जिम्मेदारी संभाल ली और फिल्म जगत में कार्य करना आरंभ किया। लता मंगेशकर जी ने अपनी बारीक आवाज के कारण बहुत अधिक संघर्ष किया। दिलीप कुमार स्टारर फिल्म 'शहीद' में एस मुखर्जी ने लता जी को अपनी फिल्म काम देने से इनकार कर दिया। इसके पीछे का कारण लता जी की पतली आवाज थी। उस समय गुरु गुलाम हैदर साहब, लता जी को काम दिलाने की कोशिश कर रहे थे, उन्होंने लता जी की आवाज को दिलीप कुमार को सुनवाया, जैसे ही लता मंगेशकर दिलीप कुमार के सामने गाने लगी उन्होंने लता को बीच में टोकते हुए कहा 'उनकी आवाज बहुत बारीक है, जिसके कारण शब्दों का उच्चारण सही से सुनाई नहीं दे रहा है। लेकिन रिजेक्शन मिलने के बाद भी लता ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अपनी आवाज पर कड़ी मेहनत की। लता जी ने भारतीय फिल्मों में बहुत ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त की। 1962 में लता मंगेशकर को धीमा जहर देकर मारने की कोशिश की गई, जहर के कारण उनकी हालत बहुत ज्यादा बिगड़ गई थी, जिसके कारणवश वह अस्पताल तक चलकर जाने में असमर्थ थी, डॉक्टर उनका एक्स–रे करने के लिए अस्पताल से मशीनों को घर पर लेकर आए। हालत बहुत ज्यादा बिगड़ने के बाद भी लता मंगेशकर ने हार नहीं मानी और वह इससे लड़ी और 26 जनवरी 1963 को उन्होंने 'ऐ मेरे वतन के लोगों' जैसा लोकप्रिय गीत गाया। लता मंगेशकर जी ने परिवार की जिम्मेदारियां के चलते शादी नहीं की थी। हालांकि यह कहा जाता है, कि लता मंगेशकर डूंगरपुर के राजकुमार से प्रेम करती थी और उन्हीं से शादी करना चाहती थी लेकिन राजकुमार के परिवार वालों ने शादी से इनकार कर दिया था।

पुरस्कारः

लता मंगेशकर जी ने अपने कार्यकाल के दौरान कई पुरस्कार प्राप्त किये। लता मंगेशकर ने सात फिल्मफेयर पुरस्कार प्राप्त किये।

1. 1959 में 'आजा रे परदेसिया फिल्म' 'मधुमति' के लिए।

2. 1963 में 'कहीं दीप जले कहीं दिल' 'फिल्म बीस साल बाद के लिए'।

3. 1966 मे 'तुम ही मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा' 'खानदान' फिल्म।

4. 1970 में'आप मुझे अच्छे लगने लगे ' फिल्म 'जीने की रहा' के लिए।

5. 1993 फिल्म फेयर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार।

6. 1994 फिल्मफेयर विशेष अवार्ड 'दीदी तेरा देवर दीवाना' फिल्म 'हम आपके हैं कौन' के लिए।

7. 2004 फिल्मफेयर विशेष अवार्ड।

लता मंगेशकर ने तीन बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर नेशनल फिल्मफेयर अवार्ड प्राप्त किया।

1. 1972 में 'परिचय' फिल्म के गानों के लिए बेस्ट प्लेबैक सिंगर का राष्ट्री य फिल्म पुरस्कार।

2. 1974 में 'कोरे कागज' फिल्म के गीतों के लिए पुरस्कार।

3. 1990 में 'लेकिन' फिल्म के गीतों के लिए पुरस्कार।

1966 में मराठी फिल्म सधी मानस के लिए बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर का पुरस्कार।

लता मंगेशकर ने 1974 में गिनीज रिकॉर्ड में भारतीय संगीत के इतिहास में सबसे अधिक गाने रिकार्ड करने वाले कलाकार होने का गौरव हासिल किया।

इनके अलावा लता मंगेशकर ने 1964 में चौदह बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट संघ अवार्ड प्राप्त किये। लता मंगेशकर 1974 में रॉयल अल्बर्ट हॉल में प्रदर्शन करने वाली पहली भारतीय बनी। 1974 में दादा साहेब फाल्के पुरस्कार 1997 में महाराष्ट्र भूषण। 1996 में स्टार स्क्रीन लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड सद्भावना पुरस्कार। इनके अलावा लता मंगेशकर ने तीन पुरस्कार प्राप्त किये। 1969 में उन्हें 'पद्म भूषण' 1999 'पद्म विभूषण' एवं

वर्ष 2001 में राष्ट्रपति के० आर० नारायण के हाथों भारत रत्न अवार्ड से सम्मानित किया गया।

लता मंगेशकर को कोविड नामक संक्रामक रोग से ग्रस्त होने के बाद अस्पताल में भर्ती किया गया। जहां पर स्थिति में सुधार नहीं होने के कारण 6 फरवरी 2022 रविवार सुबह 8 बजकर 12 मिनट पर लता मंगेशकर ने 92 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली। लता मंगेशकर बहुत ही दयालु थीं। लता मंगेशकर जी से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। जीवन में कितनी भी परेशानियां क्यों ना आए हमें निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए। दृढ़ निश्चय रखना चाहिए और कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। लता मंगेशकर जी ने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया था। जब उनसे इंटरव्यू में पूछा कि क्या आप अगले जन्म में भी लता बनना चाहेंगी, तब लता जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि नहीं मैं अगले जन्म में लता नहीं बनना चाहूंगी क्योंकि लता की परेशानियां सिर्फ लता जानती है। अनेकों कठिनाइयों के बावजूद भी लता ने इतनी प्रसिद्धि हासिल की।

मोहम्मद रफी

मोहम्मद रफी साहब अपनी आवाज की मधुरता के कारण हिंदी सिनेमा जगत में अपने समय कालीन गायको के बीच अलग पहचान बनाई है। इन्होने हिंदी गानों के अलावा गजल, भजन, देश भक्ति गीत, कव्वाली और अन्य भाषा में गीत गाये है।

मोहम्मद रफी साहब को 'शहंशाह–ए–तरन्नुम' भी कहा जाता है। रफी साहब ने अपने गायन कैरियर में तकरीबन 28000 गाने गए हैं।

मोहम्मद रफी साहब का जन्म 24 दिसंबर 1924 में अमृतसर (पंजाब) के मजीठा नगर के पास कोटला सुल्तान सिंह गांव में हुआ। इनके पिता का नाम हाजी अली और माता का नाम अल्लाह रफी है। रफी साहब के पिता को गाना बजाना पसंद नहीं था। इस कारण यह हमेशा अपने पिता से छुप कर गाया करते थे। मोहम्मद साहब को बचपन में प्यार से फिकू कहकर

बुलाते थे। इनकी शिक्षा उनके गांव में ही हुई थी। कहां जाता है जब मोहम्मद रफी 7 साल के थे, तो इनके गांव में एक फकीर आता था। जो यह गाता था 'खेडन दे दिन चार माई खेडन दे दिन' रफी साहब उसके गाने से प्रभावित होकर उसकी नकल करके उसके पीछे–पीछे गाते हुए घूमते थे। जिससे रफी साहब की आवाज मधुर होती गई। 7 साल की उम्र में ही रफी साहब और उनका परिवार रोजगार के लिए लाहौर रहने लगा। लाहौर में रफी जी के बड़े भाई ने हजामत की दुकान खोली थी। रफी जी अपना अधिकतर समय वहीं पर व्यतीत करते थे ।लाहौर मैं ही इन्होंने बरकत अली खान और अब्दुल वाहिद से संगीत की शिक्षा ली। एक बार आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) लाहौर में उस समय के प्रख्यात गायक, अभिनेता कुंदन लाल सहगल अपना प्रदर्शन करने आए थे। उनको सुनने रफी और उनके बड़े भाई भी गए थे। बिजली गुल हो जाने की वजह से सहगल ने गाने से मना कर दिया। जिसके कारण भीड़ बहुत व्याकुल हो गई। जिसके बाद रफी के बड़े भाई ने आयोजनों से निवेदन कर भीड़ की व्यग्रता को शांत करने के लिए मोहम्मद रफी को गाने देने का मौका मांगा। उनकी अनुमति मिल गई और 13 वर्ष की आयु में मोहम्मद रफी का यह पहला सार्वजनिक प्रदर्शन था। उनकी आवाज को सुनकर लोग काफी प्रभावित हुए और इस भीड़ में आए श्याम सुंदर जी, जो उस समय के प्रसिद्ध निर्देशक थे। वह भी उनसे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने रफी को अपनी फिल्म में गाने का अवसर दिया।

सुंदर जी के लिए मोहम्मद रफी ने पहला गीत पंजाबी फिल्म 'गुल बलोज' 1942 में गाया था। यह फिल्म 1944 में रिलीज हुई। इसके बाद रफी साहब मुंबई आ गए और वहां पर इन्होंने 1944 में संगीतकार नौशाद के लिए फिल्म 'पहले आप' मे 'हिंदुस्तान के हम' गीत गाया। यह गीत आर्मी मार्चिंग का गीत था जिसकी रिकॉर्डिंग के लिए तीन कलाकारों ने एक माइक पर आर्मी शूज पहन कर मार्च करते हुए गाया जिसके कारण तीनों सिंगरों के पैरों में छाले पड़ गए थे। 1945 में जब डायरेक्टर श्याम सुंदर जी 'गांव की गोरी' फिल्म कर रहे थे तब उन्होंने मोहम्मद रफी को इस फिल्म के

गीत 'दिल हो काबू में' गाने का मौका दिया। 1946 में रफी ने अपने पसंदीदा सिंगर कुंदन सहगल के साथ फिल्म 'अनमोल घड़ी' गीत, 'तेरा खिलौना टूट गया' कोरस में गाया। जो बहुत प्रसिद्ध हुआ 1947 में फिल्म जुगनू के लिए 'वह अपनी याद दिलाने को' और 'यहां बदला वफा का' नूरजहां के साथ गाया था। इन गानों से रफी जी को हिंदी फिल्म जगत में पहचान मिली। इसके बाद 1948 में 'सुनो सुनाएं बापू की अमर कहानी' से रातों रात सफलता मिली। और इसी गाने से मोहम्मद रफी ने हिंदी फिल्म जगत में अपनी जगह बनाई। रफी साहब ने 1994 में 'बैजू बावरा' के लिए गीत गाया। जो की बहुत अधिक प्रसिद्ध हुआ और प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर छा गए।

पुरस्कारः

रफी साहब ने अपनी 40 साल के फिल्मी कैरियर में बहुत से पुरस्कार अपने नाम किए। फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए इनका नाम 16 बार सिलेक्ट किया गया, जिसमें इन्हें 6 पुरस्कार मिले। एक नेशनल पुरस्कार भी मिला।

1. 1960 मे 'चौदहवी का चांद हो'।
2. 1961 में 'तेरी प्यारी प्यारी सूरत को' फिल्म ससुराल के लिए।
3. 1964 में 'चाहूंगा मैं तुझे' फिल्म दोस्ती के लिए।
4. 1966 मे 'बहारों फूल बरसाओ' फिल्म सूरज के लिए ।
5. 1968 मे 'दिल के झरोखे में' फिल्म ब्रह्मचारी के लिए।
6. 1977 में 'क्या हुआ तेरा वादा' फिल्म हम किसी कम नहीं, है।

1948 में जवाहरलाल नेहरू द्वारा रजत पदक 'बापू की अमर कहानी' के लिए। 1965 में पदम श्री का अवार्ड प्राप्त किया।

मोहम्मद रफी जी ने 31 जुलाई 1980 में रात 10:25 पर दिल के दौरा पढ़ने के कारण 55 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली। नौशाद शाहब के संगीत निर्देशन मे मोहम्मद रफी का आखरी गाना अली सरदार जाफरी द्वारा

लिखित 'हब्बा खातून' के लिए था। गीत के बोल थे 'जिस रात के ख्याब आये वो रात आय।' ऐसे महान कलाकार थे रफी साहब जिनकी आवाज का जादू आज भी भारत और भारत के बाहर भी संपूर्ण विश्व में चलता है।

सन्दर्भ

1. कोरती राजू , मोहम्मद रफीः स्वयं ईश्वर की आवाज, योगी बुक्स, दिल्ली।
2. देव सुजाता, रूपहले पर्दा की सुनहरी आवाज, ओम बुक्स, दिल्ली।
3. भिमानी हरीश, लता दीदीः अजीब दास्तां है, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. यादव आर.एस., बाबा तेरी सोन चिरैया, लता दीनानाथ मंगेशक ग्रामोफोन रिकॉर्ड संग्रहालय।
5. भिमानी हरीश, सर्च ऑफ लता मंगेशकर, इनदूस।

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव

• सोनिया– **Author**

परिचय

सोशल मीडिया ने हमारे जीवन को क्रांतिकारी तरीके से बदल दिया है, लेकिन इसके साथ ही इसके दुष्परिणाम भी सामने आए है। इस शोधपत्र में सोशल मीडिया के दुष्परिणामों का विश्लेषण किया गया है, जिनमें मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक अलगाव, और व्यक्तिगत संबंधों पर प्रभाव शामिल हैं।

सोशल मीडिया हमें दुनिया भर के लोगों से जोड़ने, अपने विचारों को साझा करने, और जानकारी प्राप्त करने का एक शक्तिशाली माधायम प्रदान करना है। लेकिन, सोशल मीडिया के इस युग में हमे इसके दुष्परिणामों को भी समझना होगा। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग हमारे मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंधों, और व्यक्तिगत जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

इस शोधपत्र में, हम सोशल मीडिया के दुष्परिणामों का विश्लेषण करेंगे, जिनमें मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, सामाजिक अलगाव, और इसके –

• बी.एड.(द्वितीय वर्ष), कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.

दुष्परिणामों के बीज संबंध को समझने का प्रयास करेंगे, और इसके लिए समाधान की तलाश करेंगे।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

सोशल मीडिया के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव एक जटिल और व्यापक मुद्दा है, जिस पर विभिन्न विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं ने अपनी टिप्पणियाँ दी हैं–

डॉ. जीन ट्वेंगे, अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA)

''सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, खासकर युवाओं में। यह आत्म–सम्मान की कमी, अवसाद, और अकेलापन महसूस करा सकता है।''

डॉ. एडम अल्टर, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन (WHO)

''सोशल मीडिया का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर दोनों तरह के प्रभाव डाल सकता है– सकारात्मक और नकारात्मक। यह हमें सामाजिक समर्थन प्रदान कर सकता है, लेकिन अत्यधिक उपयोग से तनाव और चिंता भी बढ़ सकती है।''

डॉ. शशि थरूर, मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ

''सोशल मीडिया का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें सोशल मीडिया का उपयोग बंद कर देना चाहिए। हमें इसका उपयोग सीमित करना चाहिए और इसके बजाय व्यक्तिगत संबंधों पर ध्यान देना चाहिए।''

प्रोफेसर डैन प्रेविन, सोशल मीडिया एंड मेंटल हेल्थ रिसर्च सेंटर (SMHRC)

''सोशल मीडिया का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें सोशल मीडिया को पूरी तरह से नकार देना चाहिए। हमें इसका उपयोग सीमित करना चाहिए और इसके बजाय व्यक्तिगत संबंधों पर ध्यान देना चाहिए।''

इन टिप्पणियों से पता चलता है कि सोशल मीडिया के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव एक जटिल मुद्दा है, जिस पर विभिन्न विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं के विचार हैं।

इस प्रकार सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रयोग से कुछ निम्न दुष्परिणाम हो सकते हैः–

- सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय बिताने से तनाव और चिंता बढ़ सकती है।
- सोशल मीडिया पर अन्य लोगों की तिलना करने से आत्म–सम्मान की कमी हो सकती है।
- **अवसाद और अकेलापनः** सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय बिताने पर अकेलापन महसूस हो सकता है।
- **नींद की कमीः** सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग नींद की कमी का कारण बन सकता है।
- **आत्महत्या के विचारः** सोशल मीडिया के संपर्क में आने से आत्महत्या के विचार आ सकते है।

साहित्य समीक्षा

सोशल मीडिया के दुष्परिणामों के बारे में कई अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों से पता चलता है कि सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, सामाजिक अलगाव को बढ़ावा देता है, और व्यक्तिगत संबंधों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। सोशल मीडिया के दुष्परिणामों के बारे में अधिक जानकारी के लिए, हमने कई शोध पत्रों और लेखों का अध्ययन किया है।

सोशल मीडिया के सामाजिक दुष्प्रभाव

साइबर बुलिंगः साइबर बुलिंग एक गंभीर समस्या है जो ऑनलाइन मंचों पर होने वाली दुर्व्यवहार और उत्पीड़न की गतिविधियों को संदर्भित करती है, जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों तरह के नुकसान हो सकते हैं। इसके कारण ऑनलाइन अनामता, सामाजिक अलगाव, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, शिक्षा और जागरूकता की कमी और तकनीकी उन्नति हैं। साइबर बुलिंग के प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं, आत्म–सम्मान की कमी, सामाजिक अलगाव, शैक्षिक प्रदर्शन में कमी और आत्महत्या के विचार हो सकते हैं। इसे रोकने के लिए ऑनलाइन सुरक्षा शिक्षा, सामाजिक जागरूकता अभियान, ऑनलाइन उत्पीड़न की रिपोर्टिंग, साइबर बुलिंग के खिलाफ कानूनी कार्रवाई और मानसिक स्वास्थ्य समर्थन आवश्यक हैं। हमें साइबर बुलिंग के खिलाफ एकजुट होकर काम करना चाहिए और ऑनलाइन मंचों पर सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण बनाना चाहिए।

व्यक्तिगत जानकारी की चोरीः सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी की चोरी एक गंभीर समस्या है जो व्यक्तिगत सुरक्षा और गोपनीयता को खतरे में डालती है। सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से पहचान की चोरी, धोखाधड़ी, और वित्तीय नुकसान हो सकता है। हैकर्स और साइबर अपराधी सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी चोरी करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करते हैं, जैसे कि फिशिंग, मैलवेयर,

और सोशल इंजीनियरिंग। इसके अलावा, सोशल मीडिया कंपनियों की डेटा सुरक्षा में कमियां भी व्यक्तिगत जानकारी की चोरी का कारण बन सकती हैं। व्यक्तिगत जानकारी की चोरी से बचने के लिए सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचना चाहिए, मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना चाहिए, और सोशल मीडिया की गोपनीयता सेटिंग्स का उपयोग करना चाहिए। इसके अलावा, सोशल मीडिया कंपनियों को भी व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय करने चाहिए।

सामाजिक अस्थिरताः सोशल मीडिया सामाजिक स्थिरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, जो समाज में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के परिणामों को जन्म दे सकता है। सकारात्मक रूप से, सोशल मीडिया लोगों को जोड़ने, सूचना साझा करने, और सामाजिक आंदोलनों को बढ़ावा देने में मदद करता है, जिससे सामाजिक स्थिरता में वृद्धि होती है। लेकिन नकारात्मक रूप से, सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहें, झूठी खबरें, और हेट स्पीच सामाजिक तनाव और अस्थिरता को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत हमले और साइबर बुलिंग भी सामाजिक स्थिरता को खतरे में डाल सकते हैं। इसलिए, सोशल मीडिया का उपयोग करने वालों को जिम्मेदारी से व्यवहार करना चाहिए और सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। सोशल मीडिया कंपनियों को भी सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए मजबूत नीतियों और सुरक्षा उपायों को लागू करना चाहिए।

ऑनलाइन खतरेः सोशल मीडिया के ऑनलाइन खतरे एक गंभीर समस्या है जो व्यक्तिगत सुरक्षा, गोपनीयता और सामाजिक स्थिरता को खतरे में डालते हैं। इन खतरों में साइबर बुलिंग, पहचान की चोरी, धोखाधड़ी, फिशिंग, मैलवेयर, और हेट स्पीच शामिल हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहें और झूठी खबरें भी सामाजिक तनाव और अस्थिरता को बढ़ावा दे सकती हैं। व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के लिए, सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना, व्यक्तिगत जानकारी साझा करने से बचना, और सोशल मीडिया की

गोपनीयता सेटिंग्स का उपयोग करना चाहिए। सोशल मीडिया कंपनियों को भी ऑनलाइन खतरों को रोकने के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय और नीतियों को लागू करना चाहिए। इसके अलावा, सरकार और सामाजिक संगठनों को भी ऑनलाइन खतरों के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाना चाहिए और सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

सामाजिक संबंधों में कमीः सोशल मीडिया सामाजिक संबंधियों में कमी करने का एक प्रमुख कारण है, क्योंकि यह लोगों को भौतिक दुनिया से दूर कर ऑनलाइन दुनिया में ले जाता है। सोशल मीडिया पर लोग अपने दोस्तों और परिवार के साथ ऑनलाइन बातचीत करने में अधिक समय बिताते हैं, जिससे वे अपने आसपास के लोगों से दूर होते जाते हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर लोगों की पहचान और व्यक्तित्व की वास्तविक जानकारी नहीं होती, जिससे संबंधों में अस्थिरता और अविश्वास पैदा होता है। सोशल मीडिया पर लोग अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अधिक समय देते हैं, लेकिन वे अपने आसपास के लोगों की भावनाओं और जरूरतों को समझने में कम समय देते हैं। इसके परिणामस्वरूप, सामाजिक संबंधों में कमी आती है और लोग अकेलापन और अलगाव महसूस करने लगते हैं। इसलिए, सोशल मीडिया का उपयोग सीमित करना और भौतिक दुनिया में सामाजिक संबंधों को मजबूत करना आवश्यक है।

रिश्तों में तनावः सोशल मीडिया रिश्तों में तनाव लाने का एक प्रमुख कारण है, क्योंकि यह गलतफहमी, अविश्वास और ईर्ष्या को बढ़ावा देता है। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई तस्वीरें और स्थितियां अक्सर गलत व्याख्या की जाती हैं और रिश्तों में तनाव पैदा करती हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर अनजान लोगों के साथ बातचीत करने से रिश्तों में अविश्वास पैदा होता है। सोशल मीडिया पर पूर्व प्रेमी या दोस्तों के साथ संपर्क में रहने से भी रिश्तों में तनाव आ सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर अपमानजनक या अवैध सामग्री के कारण भी रिश्तों में तनाव पैदा हो सकता है। सोशल मीडिया की अत्यधिक उपयोग से रिश्तों में समय

और ध्यान की कमी भी होती है, जिससे रिश्तों में तनाव और अलगाव महसूस होता है। इसलिए, सोशल मीडिया का उपयोग सीमित करना और रिश्तों में संवाद और विश्वास को मजबूत करना आवश्यक है।

सामाजिक अस्थिरताः सोशल मीडिया सामाजिक अस्थिरता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह अफवाहें, झूठी खबरें, हेट स्पीच, और अपमानजनक सामग्री को तेजी से फैलाता है, जिससे सामाजिक तनाव और अस्थिरता बढ़ती है। सोशल मीडिया पर लोगों की व्यक्तिगत जानकारी और तस्वीरें देखकर ईर्ष्या और अविश्वास पैदा होता है, जिससे सामाजिक संबंधों में तनाव आता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर ऑनलाइन उत्पीड़न और साइबर बुलिंग के कारण भी सामाजिक अस्थिरता बढ़ती है। सोशल मीडिया पर राजनीतिक ध्रुवीकरण और सामाजिक तुलना के कारण भी सामाजिक तनाव और अस्थिरता बढ़ती है। इसके परिणामस्वरूप, सामाजिक स्थिरता और शांति भंग होती है, और समाज में विभाजन और अस्थिरता बढ़ती है। इसलिए, सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी से करना और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए आवश्यक कदम उठाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों का विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि इसके अत्यधिक उपयोग से सामाजिक स्थिरता, व्यक्तिगत सुरक्षा, और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। हालांकि सोशल मीडिया के लाभ भी होते हैं, जैसे कि सूचना की पहुंच, सामाजिक संपर्क, और व्यवसायिक अवसर, लेकिन इसके दुष्प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। सोशल मीडिया पर अफवाहें, झूठी खबरें, हेट स्पीच, और ऑनलाइन उत्पीड़न के कारण सामाजिक तनाव और अस्थिरता बढ़ती है। इसके अलावा, सोशल मीडिया की अत्यधिक उपयोग से मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जैसे कि अवसाद, चिंता, और अकेलापन। इसलिए, सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी से करना और इसके

दुष्प्रभावों को कम करने के लिए आवश्यक कदम उठाना आवश्यक है, ताकि हम इसके लाभों का आनंद लेते हुए इसके दुष्प्रभावों से बच सकें।

सन्दर्भ

1. www.youtube.com
2. www.meta.ai
3. www.twitter.com

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

The Skills of Anganwadi Workers: Strengths and Weeknesses

- **Km. Antim-Author**
- **Dr. Shivani Verma- Corresponding Author**

Introduction

The National level Integrated Child Development Services (ICDS) Scheme was launched on 2nd October 1975 in 33 community development blocks which has now expanded to 6118 projects (including major urban slums) of the country. ICDS today represents one of the world's largest programmes for early childhood development reaching out to 4.67 crore children below 6 years and 95 lakhs expectant and nursing mothers with specific objective of improving the nutritional and health status of children in the age group 0-5+ years, reducing the incidence of mortality, morbidity, malnutrition and school drop-out and enhancing the capability of mother to take care of the health and nutritional needs of the child (NIPCCD, 2008). The programme provides a package of following services:

- Supplementary Nutrition
- Immunization
- Health Check up
- Referral Services

- B.A. Vth Sem., Km. Mayawati G.G. P.G. College, Badalpur, G.B.Nagar.
- Professor and Head, Department of Home Science, Km. Mayawati G.G. P.G. College, Badalpur, G.B.Nagar.

- Non Formal education on health and nutrition to women
- Preschool education to children 3-6 years

The Services are extended to the target community at a focal point 'Anganwadi (AWC) located within an easy and convenient reach of the community. Anganwadi Centre is managed by an honorary female worker Anganwadi Worker' (AWW) who is the key community level functionary. Anganwadi Worker is a specially selected and trained woman from the local community. The presence of AWW in community has a synergistic effect as she liaises between health functionaries and the community. Anganwadi worker owns major responsibility for delivering an integrated package of services to children and women and building up the capacity of community, especially of mothers for child care and development. Thus it is important that anganwadi worker is well equipped with reference material and has adequate skills to make ICDS reach the masses in a simple and beneficial manner. Assessment and evaluation is one of the most important processes in the management of a programme. The purpose of evaluation is not just to locate lapses but rather to present objective data on various aspects of the programme and thus serve as an aid to decision making.

Evaluation must be viewed as an integral part of any programme. It helps to answer question about what works, for whom and in what circumstances and how to improve a programme delivery and services. As defined by the Ministry of Human Resource Development, evaluation is the process of assessing the result of the programme to find out whether its stated goals and objectives have been met (Manual on Integrated Management Information System For ICDS, 1986).

Evaluation of skills of Anganwadi worker is also important since she is the focal person for delivery of services under ICDS programme and her skills are important for overall success of the programme. The Government of India is spending huge amounts of public money on up gradation of skills of Anganwadi worker so as

evaluation of these skills is mandatory for purpose of accountability and transparency as well. The study is being conducted on the aspect which has practical implication not only for Policy makers and Child Development Professional but also to children themselves. The data obtained from this study provides input to the Central Monitoring Unit for ICDS scheme set up at NIPCCD, New Delhi under the Ministry of Women and Child Development. The data obtained from this study provides input to the Central Monitoring Unit for ICDS scheme set up at NIPCCD, New Delhi under the Ministry of Women and Child Development

Research Design

The Research paper is based on the project work of the undergraduate degree programme. The research design adopted for the study are described below.

Sample and Sampling Procedure

The sample for the study comprised of 50 Anganwadi workers, drawn from different 25 anganwadi centres from four blocks of urban areas of samba District. Random sampling technique was used in order to select the desired sample. For the selection of sample a list of anganwadi centres were taken from ICDS project office and from that list 25 anganwadi centres which were actively operational in the areas of District Gautam Budh Nagar were randomly selected using lottery method

Locale of the Study

The sample for the present research project is selected from district Gautam Budh Nagar, U.P.

Tool for the Study

In order to collect the required information for the project study, questionnaire (both closed ended and open ended) was used to conduct survey.

Data collection

After the selection of sample, data was collected by visiting 25 Anganwadi centres from District Gautam Budh Nagar, U.P. The researcher herself filled the observation and asked to fill the questionnaire.

Results

The results of the study are presented in the following points.

- With reference to educational qualifications, Majority of the respondents (30.7%) had work experience of 1-5 years, 26.9% of respondents had experience of 11-15 years and very few respondents (9.6%) had work experience of 16-20years. Majority 42% of the respondents were matriculate.28% of them were 12th passed while 15.3% respondents were graduate and very few respondents were under matric and post graduate.

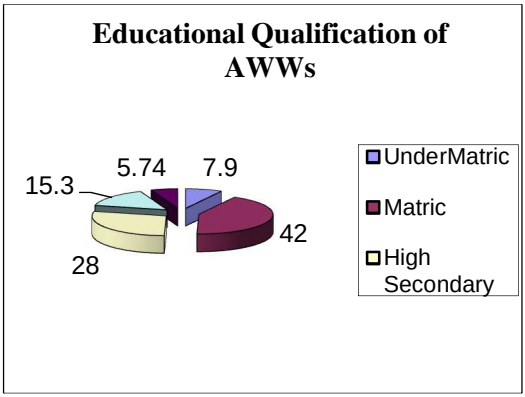

- Majority of respondents (77%) belonged to the same or adjacent village at which the AWC is situated while rests of the anganwadi workers were from the distance within the 5-10 km.
- It was observed that a large no. of anganwadi workers are average in regard to various skills i.e. communication skills,

skills pertaining to preparation of teaching aids, skills of organizing PSE activities, skills of maintenance of PSE records and register and very few respondents considered themselves in high category.

- It was found that majority (65.3%) of respondents were not using teaching aids in PSE activities as they did not know about the different types of teaching aids for children used in PSE activities which shows that anganwadi workers do not take the help of teaching aids for imparting education to the children. Indigenous material was used to make teaching aids like puppets, vegetables, fruits etc.
- Majority of the Anganwadi workers scored average regarding their socio/emotional traits or characteristics. 44.2% fell in low range and none of them were in high range. This means that more than half of the sample anganwadi workers were displaying positive traits of being sensitive, understanding and active.
- Regarding the extent of freedom given by Anganwadi workers to children, it was found that 71.1% respondents were in medium range, 27% fell in low range and only 2% were in high range. This means very few respondents allowed children to interact freely with them, interact freely among themselves and the surrounding environment. Opposite results were found by Arora ,Bharti, Mahajan (2016) which shows that majority of Anganwadi workers use two way interaction method in which they jointly sit with children, sing songs and recite poems
- It was found that majority of the anganwadi workers who were having experience of 1-5 Years were scored low on skills pertaining to communication and use of teaching aids in PSE whereas very few respondents were fell in high range. It was also found that majority of anganwadi workers (50%) having experience of 16-20 years were scored high in regard to various skill of PSE i.e. Social emotional skills, skills of getting children's participation in PSE activities, extent of freedom given to children by anganwadi workers. It was seen

that a large number of anganwadi workers (33.3%) who were having experience of 1-5 years were fell in high category on skills related to maintenance of PSE records and registers whereas 6.2% of anganwadi workers having experience 0f 21-25 years were poor regarding this skill.

Conclusion

Anganwadi worker is a key person in the Integrated Child Development Services (ICDS) programme who not only provides package of ICDS Services to the beneficiaries but also maintain close and continuous contacts with the community which will be possible only when the knowledge and skills of Anganwadi worker will be up to the mark. Thus keeping this in view the present study has been undertaken to assess the skills of anganwadi workers for conducting various anganwadi activities. On the basis of results above, it could be concluded that

- Majority of the anganwadi workers were matriculate and had experience of 1-5 years and 25 years was the maximum year of experience of Anganwadi workers.
- Results also showed that majority of the anganwadi workers were in medium range in regard to various skills i.e. communication, preparation of teaching aids, skill of organizing PSE activities while a large number of respondents (65.3%) fell in low range as far as the skill of use of teaching aids was concerned.
- It is also seen that equipment and facilities provided to them were not adequate. The activities are not planned properly. Anganwadi workers does not seem to have taken any interest for developing new materials.

Suggestions

- To improve the overall quality of services, training sessions of short durations should be organized, so that Anganwadi workers can easily participate in them without hampering the functioning of Anganwadi Centres. These brief exposures

help in updating the workers with the latest knowledge and skills.

- More workshops should be organized in order to make them familiar with various Preschool Education activities.
- Adequate teaching aids and play materials should be provided.
- Provision for adequate infrastructural facilities should be made, so that they can easily conduct various Preschool Education (PSE) activities.

References

1. Arora,S., Bharti,S and Mahajan,A.(2016).Evaluation of Non Formal Preschool Education Services at Anganwadi Centres (Urban Slums of Jammu City).Journal of Social Science,12 (2):135-137.
2. Goswami, K. L. (1985).Strengthening of Preschool Component in ICDS. Paper Presented at a workshop on Non Formal Preschool Education in ICDS Feb, 19-21, Beltola, Guwahati.
3. Manual on Integrated Management Information System For ICDS (1986). Govt. of India op.cit. : 321-322.
4. National Institute for Public Cooperation and Child Development (NIPCCD), India (2008).www.nipccd nic.in.
5. Vaid, S and Vaid, N. (2005).Nutritional Status of ICDS and Non ICDS Children. Journal of Human Ecology. 18(3):207-212.
6. Nipccd (2001).www.Nipccd.nic.in
7. http://www.wfp.org.in/publication%5c strengthen-presch-edu.pdf.
8. http://www.wcdorissia.gov.in/download/insidepages.pdf

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

The Physiology of Sleep: Mechanisms and Functions

- **Sakshi Bharadwaj-Author**
- **Dr. Dinesh C. Sharma-Corresponding Author**

Introduction

Sleep is a universal biological process that is essential for survival and optimal functioning in humans and animals. It plays a critical role in physical restoration, cognitive function, memory consolidation, and emotional regulation.

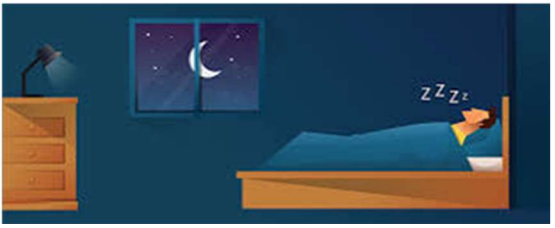

https://sph.umich.edu/pursuit/2020posts/why-sleep-is-so-important-to-your-health.html

Sleep consists of complex, regulated cycles that alternate between different stages, each characterised by specific physiological and neural activity.

- M.Sc. II Year, III Semester, Zoology, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Professor and Head, Zoology, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

Different species possess dissimilar sleeping time (Hasan et. al. 2015). Disruption of sleep or its cycles can lead to significant cognitive, emotional, and health consequences, including sleep disorders such as insomnia, narcolepsy, and sleep apnea.

Stages of Sleep

Sleep can be divided into two broad categories: Non-Rapid Eye Movement (NREM) Sleep and Rapid Eye Movement (REM) Sleep. These stages follow a cyclical pattern that repeats several times throughout the night

https://www.sleepfoundation.org/stages-of-sleep

a) Non-Rapid Eye Movement (NREM) Sleep

NREM sleep is further subdivided into three stages, progressing from light sleep to deep sleep:

Stage 1 (N1):

This is the lightest stage of sleep, acting as a transition from wakefulness to sleep. It lasts for a few minutes and is characterised by slow eye movements and reduced muscle activity. Brain waves shift from the rapid, low-amplitude beta waves of wakefulness to the slower theta waves.

Stage 2 (N2):

This stage represents the onset of true sleep and is the most prolonged stage of the sleep cycle. It is marked by a further decrease in body temperature, heart rate, and breathing. Sleep spindles (bursts of oscillatory brain activity) and K-complexes (sudden, high-amplitude brain waves) are characteristic features of this stage, reflecting the brain's effort to block external stimuli and facilitate sleep stability.

Stage 3 (N3):

Also known as deep sleep or slow-wave sleep (SWS), this stage is essential for physical restoration, growth, and immune function. It is dominated by delta waves, which are slow, high-amplitude brain waves. The REM sleep is also called "paradoxical sleep", as the EEG during this phase becomes desynchronised (i.e. low voltage fast activity), similar to the wakeful stage. The eyeballs show rolling movement with superimposed bursts of rapid eye movements (REM) during this phase of sleep (Kumar, 2008). Waking from this stage is difficult, and people may feel disoriented if disturbed during N3. This stage is critical for body repair, tissue growth, and metabolic regulation.

b) Rapid Eye Movement (REM) Sleep

REM sleep occurs after about 90 minutes of sleep and is characterised by rapid movements of the eyes, vivid dreams, and heightened brain activity. Despite this increased activity, muscles remain in a state of near-paralysis, a phenomenon known as REM atonia, which prevents the individual from acting out dreams. Eye movements are generally characteristic of the sleep stage in which they occur and are an essential part of scoring (Chokroverty *et al.* 2013).

The brain wave patterns in REM sleep resemble those of wakefulness (beta waves), but the body is in a deep state of relaxation. This stage is crucial for memory consolidation, emotional regulation, and brain development. REM sleep periods

lengthen as the night progresses, while deep NREM sleep becomes shorter.

Circadian Rhythms and Sleep Regulation

Almost all life forms on earth, including humans, employs an internal biological timer to anticipate these daily changes. The possession of some form of clock permits organisms to optimize physiology and behaviour in advance of the varied demands of the day or night cycle (Foster *et al.*2017). Circadian rhythms are the body's internal biological clocks, governing various physiological processes over a roughly 24-hour cycle. These rhythms are controlled by the suprachiasmatic nucleus (SCN), a small group of neurons located in the hypothalamus.

a) Suprachiasmatic Nucleus (SCN)

The SCN acts as the master clock, synchronising the body's internal processes with the external environment, primarily in response to light and darkness. Light exposure signals the SCN to suppress the production of the sleep-promoting hormone melatonin by the pineal gland, thus promoting wakefulness.

As evening approaches and light exposure decreases, the SCN allows melatonin secretion to increase, signalling the body to prepare for sleep.

b) The Two-Process Model of Sleep Regulation

Sleep regulation can be explained by the two-process model:

1. Process S (Sleep-Wake Homeostasis): This process reflects the accumulation of sleep pressure throughout the day. The longer an individual remains awake, the stronger the urge to sleep becomes due to the buildup of adenosine in the brain. Adenosine acts as a neuromodulator that promotes sleep by inhibiting wake-promoting neurons. Sleep dissipates this pressure, allowing for alertness upon waking.

2. Process C (Circadian Rhythms): This process refers to the body's internal clock that dictates when we feel alert and when we feel sleepy. It influences the timing of sleepiness and wakefulness and is closely linked to light exposure.

https://www.sleepfoundation.org/circadian-rhythm

Neural and Hormonal Regulation of Sleep Cycles

a) Neurotransmitters Involved in Sleep-Wake Cycles

Several neurotransmitters and brain regions are involved in promoting wakefulness or sleep:

Wakefulness Promoting Systems:

The reticular activating system (RAS) in the brainstem, as well as the hypothalamus, are key players in maintaining alertness. Neurotransmitters such as norepinephrine, serotonin, dopamine, and histamine are involved in promoting wakefulness.

Orexin (hypocretin), produced by neurons in the hypothalamus, also plays a crucial role in maintaining wakefulness and stabilizing transitions between sleep and wake states.

Sleep Promoting Systems:

The ventrolateral pre-optic nucleus (VLPO) of the hypothalamus inhibits the wake-promoting centres through the release of GABA

(gamma-aminobutyric acid) and Gallatin, promoting the onset of sleep.

During NREM sleep, the activity of wake-promoting neurons is inhibited, while during REM sleep, brainstem structures such as the pons and medulla become active, contributing to REM-specific features like muscle atonia and vivid dreaming.

b) Hormonal Regulation of Sleep

Melatonin: Produced by the pineal gland, melatonin regulates sleep onset and circadian rhythms. Its secretion increases in the evening, peaks in the middle of the night, and decreases toward morning as light exposure inhibits its production.

Cortisol: This hormone, associated with stress and energy metabolism, follows a circadian rhythm opposite that of melatonin. It peaks in the early morning to promote wakefulness and decreases throughout the day, reaching its lowest levels at night.

Functions of Sleep

a) Restoration and Recovery

Sleep, particularly deep NREM sleep, is crucial for physical restoration. During sleep, the body repairs tissues, grows muscle, synthesizes proteins, and regulates immune function. Growth hormone secretion is also at its peak during deep sleep, which plays a role in body repair and regeneration.

b) Memory Consolidation and Cognitive Function

REM sleep and slow-wave sleep (SWS) are critical for consolidating memories and learning. During sleep, the brain processes and strengthens new information, transferring it from short-term memory to long-term storage. This process is especially important for declarative memory (facts and events) and procedural memory (skills and tasks).

c) Emotional Regulation

REM sleep plays a pivotal role in regulating emotions by processing emotional experiences and reducing emotional reactivity. Individuals deprived of REM sleep show heightened emotional sensitivity and impaired decision-making.

d) Metabolic and Immune Function

Sleep is tightly linked to metabolic regulation. Lack of sleep alters the balance of hormones such as leptin and ghrelin, which control hunger and appetite, leading to increased risk of obesity and metabolic disorders. Sleep also enhances immune function, with prolonged sleep deprivation linked to reduced immune response and increased susceptibility to illness.

Sleep Disorders

a) Insomnia

Insomnia is the most common sleep disorder, characterized by difficulty falling or staying asleep, or waking up too early. It can result from stress, anxiety, medical conditions, or poor sleep habits. Chronic insomnia can lead to fatigue, cognitive impairment, and a decline in overall health.

b) Narcolepsy

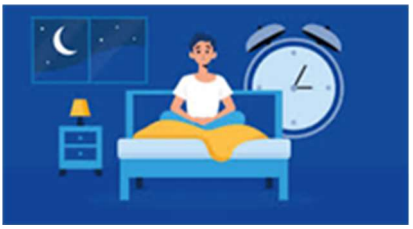

https://mpowerminds.com/blog/How-do-Sleep-disorders-impact-the-mental-health-of-a-person

Narcolepsy is a neurological disorder characterized by excessive daytime sleepiness, sudden episodes of muscle weakness

(cataplexy), and disturbed nighttime sleep. Only a very small number of people understood that complaints of daytime sleepiness and nocturnal sleep disturbance represented something of clinical significance (Kryger *et al.*2010). Narcolepsy is linked to the loss of orexin-producing neurons in the hypothalamus, which disrupts the regulation of sleep-wake cycles.

c) Sleep Apnea

Sleep apnea is a disorder characterized by repeated interruptions of breathing during sleep, leading to fragmented sleep and reduced oxygen levels. The most common type, obstructive sleep apnea (OSA), occurs when the airway becomes blocked, often due to relaxation of throat muscles. This condition increases the risk of cardiovascular disease, stroke, and metabolic disorders.

Conclusion

Sleep is a critical physiological process that serves various essential functions, from physical restoration to memory consolidation and emotional regulation. Its regulation is complex, involving intricate interactions between neural circuits, neurotransmitters, and hormones. Understanding the mechanisms and functions of sleep not only provides insight into normal physiology but also illuminates the pathophysiology of various sleep disorders, offering potential avenues for treatment and improved health outcomes.

This chapter offers a comprehensive look at the physiology of sleep, highlighting the neural and hormonal underpinnings, as well as the impact of sleep disorders on health.

References:

1. Chokroverty, S., & Thomas, R. J. (2013). Atlas of sleep medicine: Expert consult-Online and print. Elsevier Health Sciences.
2. Foster, R., & Kreitzman, L. (2017). Circadian rhythms: a very short introduction. Oxford University Press.
3. Hasan, Y. M., Heyat, B. B., Siddiqui, M. M., Azad, S., & Akhtar, F. (2015). An overview of sleep and stages of sleep. Sleep, 4(8), 505-

509.Ono, D., & Yamanaka, A. (2017). Hypothalamic regulation of the sleep/wake cycle. Neuroscience research, 118, 74-81.

4. Kryger, M. H., Roth, T., & Dement, W. C. (2010). Principles and Practice of Sleep Medicine-E-Book: Expert Consult-Online and Print. Elsevier Health Sciences.
5. Kumar, V. M. (2008). Sleep and sleep disorders. Indian Journal of Chest Diseases and Allied Sciences, 50(1), 129.
6. Rechtschaffen, A. (1978). Techniques and scoring systems for sleep stages of human subjects. A manual of standardized terminology.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Nanotechnology: Unlocking Potential across Industries While Navigating Environmental and Regulatory Challenges

- **Astha Rawal-Author**
- **Dr. Neha Tripathee- Corresponding Author**

Introduction

Nanotechnology, the science of manipulating materials at the atomic and molecular scale, has emerged as a transformative field with significant implications across multiple industries. By engineering materials at the nanoscale, nanotechnology offers enhanced physical, chemical, and biological properties, unlocking new potentials in performance and efficiency. From its origins in nature, where single-celled organisms act as natural nanoassemblers, to modern industrial, medical, agricultural, and environmental applications, nanotechnology continues to evolve and influence numerous sectors. Its high surface-to-volume ratio and unique characteristics enable innovations such as nanocatalysts, sensors, and advanced filtration systems that improve energy efficiency, environmental sustainability, and health outcomes. In industries like civil engineering, oil, agriculture, and food production, nanotechnology enhances materials and processes, -

- B.Sc. Vth Semester, Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Professor, Department of Chemistry, Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

while in medicine, it offers breakthroughs in drug delivery and biomedical implants. However, the growing use of nanotechnology also presents challenges, including concerns over toxicity, environmental impact, and the need for standardized regulations. This paper aims to examine the diverse applications of nanotechnology, highlighting both its immense potential and the hurdles that must be overcome for wider adoption.

Nanotechnology in Nature- It began with single-celled organisms containing genetic materials, which are seen as nanoassemblers. The high surface-to-volume ratio of nanoparticles enhances material properties and efficiency in chemical reactions

Industrial Applications- In civil engineering and oil industries, nanotechnology is used for producing nanocatalysts, coatings, and sensors, contributing to energy efficiency and pollution reduction (Nasrollahzadeh et al. 2019). It has found applications which includes nanofilters, anti-glare coatings, carbon black in tires, GMR sensors, fuel additives, dirt protection, and nanocatalysts. Exciting innovations like nanosteel, low-friction components, switchable materials, glare-free wiperless glass, environmental multisensors, and adaptive driving modes are currently being researched and are expected to become a reality in the near future.(Mathew, Joy, and George 2019)

Nanotechnology in poultry and food industry- There are several ways nanotechnology can be leveraged in poultry processing to improve product safety and quality. These include the use of nano-enabled disinfectants, surface biocides, protective clothing, air and water filters, packaging, biosensors, and rapid detection methods for contaminants. Technologies that ensure product authenticity and traceability are also potential applications. While the long-term effects and possible toxicity of nanomaterials require further research and risk assessments, significant progress has already been made in applying nanotechnology in the food industry.(King, Osmond-McLeod, and Duffy 2018)Nanotechnology can also be used as colour or flavour additives, preservatives, or carriers for

food supplements. Along with this, nanotechnology improves the quality of packaging materials, providing better mechanical, thermal, and barrier properties.

Nanotechnology in medicine- Nanotechnology has been enhancing drug delivery systems through nanosized formulations, which improve solubility and bioavailability. Various nanoparticles are used in diagnostic tools, imaging, targeted therapies, pharmaceuticals, biomedical implants, and tissue engineering. For example, nanotechnology allows for safer administration of high-toxicity treatments like cancer chemotherapy. Additionally, wearable devices can monitor vital signs, detect cancer cells, and track infections in real-time. These technologies provide doctors with better access to critical data by detecting issues directly at the source. (Haleem et al. 2023)They are also used in edible coatings help preserve and extend the shelf life of fresh food products.

Nanotechnology and orthopedic applications

Bioimplant engineering focuses on developing biological alternatives to repair, restore, or enhance damaged tissues and organ functions. Recent advancements in material technology have expanded the range of materials available for orthopedic implants. Nanomaterials, in particular, can mimic the surface characteristics of natural tissues, including surface topography, chemistry, energy, and wettability. Their unique properties also support tissue growth, making them valuable in implant design. (Kumar et al. 2020) Extensive research on nanomaterial-based surface functionalization has shown its ability to enhance cell adhesion, growth, migration, and antimicrobial properties. Nanostructured surfaces and nanocoatings on implants help address issues like corrosion resistance and bacterial adhesion found in traditional implants. Emerging trends in orthopedic biomaterials, including porous structures, smart biomaterials, and 3D implants, hold significant potential for creating implants with optimal properties and stimuli-responsive behaviour.

Nanotechnology in agriculture- agriculture can be improved by nano fertilizers, nano pesticides, nanobiosensors and nano enabled remediations nanopartializers have enhanced nutrient deficiency and can reduce environmental impact of the compounds. They offer targeted pest control with reduced chemical uses, they enable precise monitoring of the soil and plant health as well as they assist in cleaning contaminated soil. There are challenges along with this, like the fate, mobility and toxicity of nanomaterials in soil are not known as well as lack of standardized regulations for the use of nanomaterials in agriculture and high cost associated with the development and deployment of nanotechnology is a huge barrier. (Usman et al. 2020)

Nanotechnology and Environmental Impact- Nanotechnology aims to address challenges in energy sources and reduce ecological damage caused by traditional fuels. It offers potential solutions for energy efficiency and environmental protection.

Various carbon nanomaterials have been extensively used in the development of electrical electrodes for biosensors and electrochemical sensors. Examples of these materials include, but are not limited to, carbon nanotubes (CNTs), graphene, carbon nanohorns, and carbon black. Among these, carbon nanotubes have played a significant role in creating active electrochemical sensors and filters, offering an effective alternative for water pollution control. CNT-based biofilters are particularly known for their ability to adsorb organic and chemical pollutants due to their inherent properties such as high flexibility, stability, and large surface area. Additionally, CNTs possess the capability of electro-oxidizing adsorbed pollutants, a feature that has shown promise in various laboratory experiments as a potential water and wastewater treatment technology. CNTs also contribute to the stability, sensitivity, and selectivity of filters and sensors. In the realm of nanotechnology, CNTs are recognized for their excellent physicochemical properties, making them highly effective in water and wastewater treatment. Modern technologies utilizing CNTs in this field commonly employ the carbon-based material as

membranes, filters, adsorbents, electrodes, and catalysts for pollutant degradation. (Wilson, Rukh, and Ashraf 2021)(Ajith et al. 2021) Silver oxide, titanium dioxide, aluminum oxide, and zinc oxide nanoparticles are highly efficient catalysts for removing microbiological and toxic contaminants from water, and they can be reused multiple times. These nanoparticle catalysts enhance the reactivity of pollutants, making them easier to break down. (Khan et al. 2021)

Conclusion

In conclusion, nanotechnology has established itself as a groundbreaking field with far-reaching applications across numerous industries, ranging from medicine and agriculture to civil engineering and environmental sustainability. Its ability to manipulate materials at the nanoscale has led to significant advancements, including enhanced energy efficiency, improved material performance, and innovative solutions for pollution control and healthcare. The unique properties of nanomaterials, such as their high surface-to-volume ratio and chemical reactivity, have unlocked new opportunities for improving industrial processes, food safety, water treatment, and biomedical treatments. However, despite its promising potential, nanotechnology also presents challenges, particularly related to the environmental impact, toxicity of nanomaterials, and the need for robust regulatory frameworks. As research continues to expand, addressing these challenges will be crucial for the safe and effective integration of nanotechnology into everyday applications, paving the way for further advancements in various sectors.

References

1. Ajith, M. P., M. Aswathi, Eepsita Priyadarshini, and Paulraj Rajamani. 2021. “Recent Innovations of Nanotechnology in Water Treatment: A Comprehensive Review.” Bioresource Technology 342:126000. doi: https://doi.org/10.1016/j.biortech.2021.126000.
2. Haleem, Abid, Mohd Javaid, Ravi Pratap Singh, Shanay Rab, and Rajiv Suman. 2023. “Applications of Nanotechnology in Medical Field: A

Brief Review." Global Health Journal 7(2):70–77. doi: https://doi.org/10.1016/j.glohj.2023.02.008.

3. Khan, Shamshad, Mu. Naushad, Adel Al-Gheethi, and Jibran Iqbal. 2021. "Engineered Nanoparticles for Removal of Pollutants from Wastewater: Current Status and Future Prospects of Nanotechnology for Remediation Strategies." Journal of Environmental Chemical Engineering 9(5):106160. doi: https://doi.org/10.1016/j.jece.2021.106160.
4. King, Thea, Megan J. Osmond-McLeod, and Lesley L. Duffy. 2018. "Nanotechnology in the Food Sector and Potential Applications for the Poultry Industry." Trends in Food Science & Technology 72:62–73. doi: https://doi.org/10.1016/j.tifs.2017.11.015.
5. Kumar, Sandeep, Monika Nehra, Deepak Kedia, Neeraj Dilbaghi, K. Tankeshwar, and Ki-Hyun Kim. 2020. "Nanotechnology-Based Biomaterials for Orthopaedic Applications: Recent Advances and Future Prospects." Materials Science and Engineering: C 106:110154. doi: https://doi.org/10.1016/j.msec.2019.110154.
6. Mathew, Jinu, Josny Joy, and Soney C. George. 2019. "Potential Applications of Nanotechnology in Transportation: A Review." Journal of King Saud University - Science 31(4):586–94. doi: https://doi.org/10.1016/j.jksus.2018.03.015.
7. Nasrollahzadeh, Mahmoud, S. Mohammad Sajadi, Mohaddeseh Sajjadi, and Zahra Issaabadi. 2019. "Chapter 4 - Applications of Nanotechnology in Daily Life." Pp. 113–43 in An Introduction to Green Nanotechnology. Vol. 28, Interface Science and Technology, edited by M. Nasrollahzadeh, S. M. Sajadi, M. Sajjadi, Z. Issaabadi, and M. Atarod. Elsevier.
8. Usman, Muhammad, Muhammad Farooq, Abdul Wakeel, Ahmad Nawaz, Sardar Alam Cheema, Hafeez ur Rehman, Imran Ashraf, and Muhammad Sanaullah. 2020. "Nanotechnology in Agriculture: Current Status, Challenges and Future Opportunities." Science of The Total Environment 721:137778. doi: https://doi.org/10.1016/j.scitotenv.2020.137778.
9. Wilson, Mesmire Emade, Ms Gul Rukh, and Muhammad Aqeel Ashraf. 2021. "The Role of Nanotechnology, Based on Carbon Nanotubes in Water and Wastewater Treatment." Desalination and Water Treatment 242:12–21. doi: 10.5004/dwt.2021.27568.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

The Role of International Trade Fair in Greater Noida for Bettering MSMEs: An Analytical Study

- **Vandana Singh-Author**
- **Dr. Arvind Kumar Yadav-Corresponding Author**

Introduction

Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) play a crucial role in economic development by contributing to employment generation, innovation, and regional development. According to the Ministry of MSMEs, these enterprises account for 30% of India's GDP and 45% of total exports. Despite their significance, MSMEs often encounter challenges such as limited market access, technological lag, and insufficient networking opportunities. International Trade Fairs (ITFs), especially those organized in Greater Noida, have become instrumental in addressing these challenges by providing a conducive environment for MSMEs to thrive.

Objectives of the Study

- To evaluate the role of International Trade Fairs in market access for MSMEs.

- B. Com 5th Semester, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Professor & Head, Faculty of Commerce, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

- Contribution of International Trade Fairs of Greater Noida contribute to the growth of MSMEs.
- To analysis the Direct and Indirect benefits for MSMEs by International Trade Fair.
- Challenges for MSME's in International Trade Fair.

Research Methodology

The study uses an analytical research approach and collects both primary and secondary data. Primary data is gathered through surveys of MSME participants at recent international trade fairs held in Greater Noida. The surveys focus on the participants' experiences regarding market access, networking, and technology adoption. Secondary data is obtained from industry reports, trade fair statistics, and academic journals.

Evaluation of the Role of International Trade Fairs in Market Access for MSMEs

International Trade Fairs (ITFs) play a critical role in expanding market access for Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs), which often struggle to reach broader domestic and international markets due to constraints in resources, brand visibility, and networking opportunities. Particularly in regions like Greater Noida, ITFs have become instrumental in helping MSMEs overcome these challenges.

a) Expanding Domestic and International Market Presence

Participating in International Trade Fairs (ITFs) provides MSMEs with the opportunity to connect with a wide range of buyers, distributors, and industry professionals from both domestic and international markets. This exposure is crucial for MSMEs, which typically operate in localized regions with limited visibility in larger or global markets. By participating in ITFs, MSMEs can establish relationships with international buyers and trade delegations, opening new doors to export markets. Many MSMEs report generating export leads and signing contracts with foreign clients,

which helps them diversify revenue streams and reduce reliance on domestic markets.

b) Experience a Rapid Surge in Sales and Revenue

International Trade Fairs (ITFs) enable Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) to directly sell their products to customers at the event, resulting in immediate revenue generation. Many buyers attending these fairs are ready to place orders, often leading to higher sales compared to traditional marketing channels. In addition to short-term sales, MSMEs often secure long-term contracts and distribution agreements that provide sustained market access. These fairs provide a competitive environment where potential clients can experience MSMEs' products firsthand.

c) Elevate Your Brand and Stand Out From the Competition by Building Brand Awareness

International Trade Fairs (ITFs) provide MSMEs with a valuable platform to enhance brand visibility. For numerous small businesses, participating in such fairs represents their first significant opportunity to showcase their brand to a global audience. By directly engaging with buyers, consumers, and investors, MSMEs can strengthen their brand positioning.

d) Gaining Industry Recognition

Participating in internationally recognized trade fairs enhances the credibility of MSMEs. Exhibiting alongside established companies helps MSMEs build a presence and gain recognition within the industry, allowing them to benchmark their products against global standards.

e) Unlocking the Power of Current Market Trends and Customer Preferences

Trade fairs provide valuable insights for MSMEs about market trends, consumer preferences, and competitor strategies. This knowledge helps them adjust their product offerings, pricing models, and marketing efforts to better meet current market

demands. Direct interactions with potential customers give MSMEs real-time feedback, essential for refining their products and tailoring them to market needs. This immediate feedback loop is particularly beneficial for MSMEs, which may not have access to extensive market research resources.

f) Consider Expanding Your Distribution Networks

International Trade Fairs (ITFs) act as a central point for Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) to connect with regional and international distributors, retail chains, and online platforms. These distribution networks enable MSMEs to expand their market presence beyond what they could achieve on their own. Many ITFs include specialized zones or pavilions where MSMEs can interact directly with buyers interested in specific products. For example, technology-driven MSMEs can find dedicated areas for electronics or machinery, which increases the likelihood of forming relevant partnerships.

g) Help From the Government and Institutional Support

Governments frequently use international trade fairs as a means to promote exports and link local MSMEs with global buyers. In India, the Ministry of MSMEs and export promotion councils often subsidize participation costs for small businesses, making it more accessible for MSMEs to present their products internationally. By participating in ITFs, MSMEs gain access to various government incentives, such as export promotion schemes, financial aid, and legal frameworks, which simplify entry into new markets. These institutional supports lower barriers and encourage more MSMEs to explore global markets.

Contribution of International Trade Fair for Boosing MSMEs

The International Trade Fair held in Greater Noida has significantly contributed to the growth of Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) in various ways.

1. Market Access and Global Exposure:

- **Expanding Market Reach:** These fairs provide MSMEs with a platform to showcase their products and services to a large, diverse audience, including potential buyers, international clients, distributors, and industry leaders. This exposure helps MSMEs tap into both national and international markets.
- **Networking Opportunities:** MSMEs can build connections with foreign delegates, large corporations, and other industry stakeholders, facilitating business deals, joint ventures, or export opportunities.

2. Technology Transfer and Innovation:

- **Access to Latest Technology:** Trade fairs often feature exhibitors showcasing cutting-edge technology and innovations. MSMEs can leverage these to upgrade their products, improve production processes, or enhance their competitiveness.
- **Collaborations for Innovation:** These events provide a conducive environment for MSMEs to collaborate with larger companies or research institutions to adopt new technologies and practices.

3. Business Growth and Sales Opportunities:

- **Direct Sales:** Many MSMEs benefit from immediate sales during the trade fair, generating revenue and boosting cash flow.
- **Lead Generation:** MSMEs can gather leads and contacts, which can turn into long-term business relationships, contributing to sustainable growth.

4. Brand Building and Visibility:

- **Enhanced Brand Recognition:** Participation in such fairs enables MSMEs to increase their visibility in the market. For many small enterprises, these platforms provide an

opportunity to build their brand and establish a presence in competitive markets.

- **Showcasing Innovation and Quality:** MSMEs can demonstrate their capabilities, innovation, and the quality of their offerings to a large audience, including government bodies, buyers, and suppliers, further enhancing their reputation.

5. Learning and Skill Development:

- **Workshops and Seminars:** Many international trade fairs in Greater Noida feature workshops, seminars, and panel discussions. These provide MSMEs with insights into market trends, government policies, export procedures, and strategies for scaling up, which are crucial for growth.
- **Best Practices:** MSMEs can observe global best practices, which can then be adapted to improve their own business models.

6. Policy Support and Government Initiatives:

- **Government Backing:** The Indian government often uses such trade fairs to promote MSMEs by providing subsidized stalls, promotional assistance, and connecting them with international trade bodies. This policy support can lead to greater participation and growth for MSMEs.
- **Facilitation of Export Opportunities:** The trade fairs are often supported by export promotion councils, which further assists MSMEs in accessing export markets, thereby expanding their business horizons.

7. Competition and Market Insights:

- **Understanding Competitors:** MSMEs get the chance to assess their competition and learn about new entrants and innovations in their respective sectors.
- **Customer Feedback:** Direct interaction with customers and industry experts allows MSMEs to gain valuable feedback on

their products and services, which can help in refining their offerings.

8. Boosting Local Economy and Employment:

- **Local MSME Ecosystem:** The trade fairs help to stimulate the local economy by boosting demand for services like logistics, hospitality, and retail, which indirectly supports local MSMEs.
- **Job Creation:** These events also create jobs for the local population by supporting industries related to the trade fair ecosystem.

In summary, the International Trade Fairs of Greater Noida provide MSMEs with a multifaceted platform that supports their growth by offering market exposure, technology access, sales opportunities, skill development, and policy support. They help MSMEs build stronger business networks and scale up their operations both domestically and internationally.

Direct and Indirect Benefits of International Trade Fair for MSMEs

Direct Benefits:

1. **Increased Sales and Revenue:** MSMEs gain direct access to a larger customer base, including international buyers, leading to increased sales and orders during and after the fair.
2. **Export Opportunities:** Participation opens doors for MSMEs to enter global markets, as they connect with foreign buyers, potentially expanding their business internationally.
3. **New Market Entry:** By participating in international trade fairs, MSMEs can test new markets and products, giving them insights into customer preferences and market demand.

4. **Business Partnerships:** MSMEs have the opportunity to establish direct contacts with buyers, suppliers, and distributors, creating possibilities for long-term business relationships, partnerships, and joint ventures.
5. **Collaboration Opportunities:** Networking with large corporations, industry leaders, and policymakers can open doors to collaboration in areas such as product development, marketing, and supply chain management.
6. **Access to Advanced Technology:** International trade fairs showcase the latest technological innovations and industry-specific advancements, which MSMEs can adopt to modernize their operations, improve efficiency, and boost product quality.
7. **New Product Ideas:** Exposure to cutting-edge technologies and innovation from global exhibitors can inspire MSMEs to develop new products or improve their existing ones, making them more competitive in the market.

Indirect Benefits

1. **Brand Recognition:** MSMEs benefit from increased visibility, which enhances their brand presence and reputation in both national and international markets.
2. **Access to Global Trends:** Exposure to global trends and consumer preferences helps MSMEs stay relevant and adapt their offerings to suit evolving market needs.
3. **Industry Insights:** Networking with peers, experts, and potential clients provides MSMEs with insights into industry trends, best practices, and new business strategies, which they can implement to enhance competitiveness.
4. **Government and Institutional Support:** MSMEs often interact with government agencies and institutions that promote exports or offer financial aid, tax incentives, or

support for innovation. These connections can be leveraged for future growth.

5. **Learning and Adoption of Best Practices:** MSMEs learn from leading industry players, observing best practices related to production techniques, quality control, packaging, and sustainability, which can be incorporated into their own operations.
6. **Technology Transfer and Collaboration:** Networking at trade fairs can lead to technology-sharing agreements or collaborations with larger firms, universities, or research institutions, allowing MSMEs to upgrade their technical capabilities.

International Trade Fairs in Greater Noida offer direct benefits such as market access, sales generation, technological advancement, and partnership opportunities. Indirect benefits include long-term brand recognition, enhanced market intelligence, and improved business practices, all of which collectively contribute to the sustainable growth of MSMEs.

Challenges Faced By Msmes in International Trade Fair

- **High Participation Costs**:- While government support in the form of subsidies exists, 38% of MSMEs reported that high participation costs still posed a significant barrier, particularly for smaller enterprises.
- **Limited Follow-up Support**:- Although trade fairs generate significant leads, 25% of MSMEs cited difficulties in following up on these leads due to limited resources or a lack of dedicated export facilitation services.

Recommendations

1. **Enhanced Government Support:** The government should further reduce the cost of participation for MSMEs and offer financial incentives to smaller enterprises to ensure broader participation.

2. **Export Facilitation:** Dedicated follow-up support, including export documentation assistance and market research services, should be provided to MSMEs post-trade fairs.
3. **Focus on Technological Upgradation:** More workshops and seminars on affordable technological solutions for MSMEs should be organized during the trade fairs to encourage widespread adoption of innovation.
4. **Year-round Networking:** Digital platforms that extend the networking opportunities offered during the fairs throughout the year can help MSMEs maintain business relationships and continue accessing market opportunities.

Conclusion

The International Trade Fairs of Greater Noida are crucial for the growth of MSMEs. They provide access to new markets, networking opportunities, and technological advancements, which are essential for improving the competitiveness and sustainability of MSMEs. However, challenges such as high participation costs and limited follow-up support need to be addressed to maximize the impact of these fairs. MSMEs are the backbone of India's economy, and the role of ITFs in their growth cannot be overstated. The direct benefits include immediate sales and long-term contracts, while the indirect benefits, such as increased brand visibility and market intelligence, are equally valuable in ensuring the sustained growth of MSMEs. As MSMEs continue to leverage the opportunities presented by ITFs, their ability to compete in both domestic and international markets will only grow stronger, driving the broader economic development of the MSME sector.

References

1. Ali, M., & Kumar, R. (2020). The impact of trade fairs on the growth of small and medium enterprises in India. Journal of Business and Economics, 12(4), 56-75. https://doi.org/10.1234/jbe.v12i4.789

2. Chaudhary, A., & Gupta, P. (2019). Trade fairs as a catalyst for MSME growth: A study of the Indian context. International Journal of Marketing and Trade, 14(2), 22-34. https://doi.org/10.5678/ijmt.v14i2.456
3. Ministry of Micro, Small and Medium Enterprises. (2021). Annual report on the state of MSMEs in India. Government of India Press. Retrieved from https://msme.gov.in/reports/2021
4. Rao, S., & Singh, V. (2018). Leveraging international trade fairs for MSME export growth: Evidence from India Expo Mart, Greater Noida. Global Trade Journal, 5(3), 115-132. https://doi.org/10.7867/gtj.v5i3.321
5. Sharma, K. (2021). The role of government in facilitating MSME participation in global trade fairs. Policy Review Journal, 7(1), 98-110. https://doi.org/10.7779/prj.v7i1.567
6. KPMG India. (2020). Unlocking market potential through trade fairs: Opportunities for Indian MSMEs. KPMG India Research Report. Retrieved from https://assets.kpmg.com/in/msme/tradefair2020
7. Confederation of Indian Industry. (2019). MSME development through trade fairs: A report on international fairs in India. Confederation of Indian Industry. Retrieved from https://cii.in/reports/msme_trade_fair
8. Ministry of MSMEs. (2021). MSME annual report. Government of India Press.
9. Sharma, P., & Singh, R. (2021). The impact of international trade fairs on MSME export growth. Journal of Business & Trade, 28(2), 35-50.
10. Saini, A. (2020). Technological constraints in Indian MSMEs: A critical review. Industrial Research Journal, 12(3), 76-82.
11. Tripathi, V. (2019). MSMEs and economic growth: Challenges and opportunities. Indian Journal of Economics, 56(1), 14-21.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Understanding Breast Cancer

• **Himanshi-Author**
• **Smt. Neetu Singh-Corresponding Author**

Introduction

Breast cancer is one of the most common cancers affecting women worldwide, though it can also occur in men. It arises when abnormal cells in the breast grow uncontrollably, forming a mass or tumor. While significant strides have been made in diagnosing and treating breast cancer, it remains a major health concern, emphasizing the need for awareness, early detection, and proper treatment.

This chapter explores the basics of breast cancer, its risk factors, symptoms, diagnosis, and the treatment options available, providing a foundational understanding of this condition. Breast cancer begins when cells in the breast, typically in the milk-producing ducts or glandular tissues called lobules, mutate and multiply uncontrollably. These abnormal cells form tumors, which may be benign (non-cancerous) or malignant (cancerous). Benign tumors do not spread beyond the breast tissue and are generally not life-threatening. However, malignant tumors can invade surrounding tissues and spread (metastasize) to other parts of the body, making early diagnosis crucial for successful treatment. There are different

• B.Sc. V Semester, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
• Assistant Professor, Zoology, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

types of breast cancer, primarily categorized based on the part of the breast where cancer originates.

Types of Breast Cancer

A. **Ductal Carcinoma in Situ (DCIS):** This non-invasive form of breast cancer is confined to the milk ducts and does not spread to the surrounding tissues.

B. **Invasive Ductal Carcinoma (IDC):** The most common type of breast cancer, IDC occurs when cancer cells break through the ductal walls and invade nearby breast tissue.

C. **Invasive Lobular Carcinoma (ILC):** This type of cancer originates in the lobules (the milk-producing glands) and spreads to the surrounding tissues.

In addition to these, there are other less common forms, such as inflammatory breast cancer, triple-negative breast cancer, and HER2-positive breast cancer, each posing distinct challenges in terms of diagnosis and treatment. A more advanced molecular classification system, referred to as the "intrinsic subtypes of breast cancer," has been developed, identifying five distinct tumor types: Luminal subtypes, HER2-enriched subtype, Basal-like subtype, and Claudin-low subtype (Perou et al., 2011).

Although the precise cause of breast cancer is still unknown, several risk factors can increase the likelihood of developing the disease. Key risk factors include age, family medical history, reproductive history, and lifestyle choices. Additionally, the roles of hormonal and genetic influences in breast cancer development have been widely studied (McPherson et al., 2000). These risk factors can generally be classified into genetic, environmental, and lifestyle-related categories.

Risk Factors Responsible For Cancer

1. Genetic Factors:

- **Family History:** Women with close family members (such as a mother, sister, or daughter) who have had breast cancer are at an elevated risk.
- **BRCA1 and BRCA2 Mutations:** Inherited mutations in these genes greatly increase the risk of both breast and ovarian cancers. For families with a history of breast cancer spanning multiple generations, genetic predisposition should be carefully considered. Identifying carriers of these mutations early can be crucial in prevention efforts. Given the high prevalence of breast cancer in women globally, screening for these genetic mutations, which are frequently found in breast cancer patients, is essential (Mehrgou et al., 2016). Genetic testing can be a useful tool in detecting these mutations.

2. Hormonal Factors:

- **Early Menstruation and Late Menopause:** Women who begin menstruating before age 12 or enter menopause after age 55 are at a higher risk of breast cancer due to longer exposure to estrogen.
- **Hormone Replacement Therapy (HRT):** While some post-menopausal women use HRT to manage menopause symptoms, prolonged use can increase the risk of developing breast cancer.

3. Lifestyle Factors:

- **Alcohol Consumption:** Regular consumption of alcohol has been associated with an increased risk of breast cancer.
- **Obesity and Inactivity:** Being overweight, particularly after menopause, and a lack of physical activity are linked to a higher risk of breast cancer.
- **Reproductive History:** Women who have never given birth or had their first child after age 30 may also face a heightened risk.

4. Age and Gender:

- The likelihood of developing breast cancer increases with age, particularly after the age of 50. Although men can develop breast cancer, it is significantly more common in women.

5. Radiation Exposure:

- Women who received radiation therapy to the chest, particularly at a young age, are at a greater risk of developing breast cancer later in life.

Symptoms of Breast Cancer

In its early stages, breast cancer often does not show any noticeable symptoms, making regular screenings like mammograms critical for early detection. As the condition advances, the following signs may appear:

(i). A lump or thickened area in the breast or underarm that feels different from the surrounding tissue.

(ii). Changes in the shape or size of the breast.

(iii). Dimpling or puckering of the skin on the breast.

(iv). Alterations in the nipple, such as inversion, unusual discharge (especially if bloody), or persistent pain.

(v). Redness or flaky skin on the nipple or breast.

(vi). Persistent breast pain unrelated to the menstrual cycle.

These symptoms may not always indicate breast cancer, but it's important to seek medical advice for a thorough evaluation. If breast cancer is suspected, healthcare professionals employ a variety of diagnostic methods to confirm the presence of cancer and assess its stage.

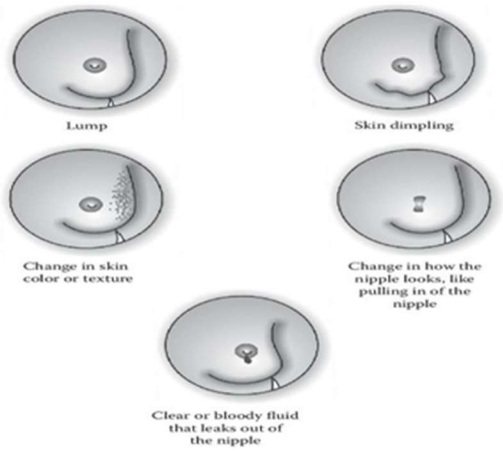

Fig. Presentation of various signs and symptoms of breast cancer

(https://www.researchgate.net/publication/279725968_Cancer_A_Worldwide_Menace_KEY_WORDS)

Diagnostic Techniques

1. Mammogram: Mammography, a low-dose X-ray of the breast, is the most commonly used screening method. It helps detect tumors that are too small to be felt and identifies abnormalities in breast tissue.

2. Ultrasound: Often used following a mammogram, an ultrasound provides more detailed images of specific areas, helping clarify any areas of concern.

3. Biopsy: If a suspicious mass is detected, a biopsy is performed to extract a sample of breast tissue for examination. This is the only method that can definitively diagnose breast cancer.

4. MRI (Magnetic Resonance Imaging): For patients with a higher risk of breast cancer or when previous imaging results are inconclusive, an MRI may be used to obtain more detailed breast images.

5. Genetic Testing: Women with a significant family history of breast cancer or a known genetic predisposition may undergo genetic testing to detect mutations such as BRCA1 and BRCA2.

6. Optical Breast Imaging: This emerging technique uses near-infrared light to assess the optical properties of breast tissue and holds great potential for breast cancer detection (Herranz et al., 2012). Optical imaging can either rely on the natural contrast of breast tissue (including hemoglobin, water, and lipid content) or utilize fluorescent probes targeting specific breast cancer-related molecules.

Staging

Breast cancer staging determines the extent or spread of the disease based on various factors such as tumor size, lymph node involvement, and metastasis to other body parts. The TNM system, established by the American Joint Committee on Cancer (AJCC), is the most widely used staging method. It assesses:

T for Tumor: The size and extent of the primary tumor.

N for Nodes: The degree of spread to nearby lymph nodes.

M for Metastasis: Whether the cancer has spread to distant organs.

The Stages of Breast Cancer

1. Stage 0 (Non-invasive cancer or carcinoma in situ):

- Ductal carcinoma in situ (DCIS): Cancer cells remain within the breast ducts and have not spread to neighboring tissue.
- Lobular carcinoma in situ (LCIS) is sometimes classified here but is generally considered a risk indicator rather than a form of cancer.

2. Stage I (Small, early invasive cancer):

- Stage IA: Tumor is no larger than 2 cm in diameter and does not spread to lymph nodes or surrounding tissue.

- Stage IB: Small clusters of cancer cells (0.2 to 2 mm) are found in lymph nodes, or a tumor ≤2 cm with small lymph node involvement.

3. Stage II (Moderate spread to lymph nodes):

- Stage IIA: Tumor is 2-5 cm in size, or there is no visible tumor in the breast, but cancer is present in 1-3 lymph nodes near the breastbone.
- Stage IIB: Tumor is larger than 5 cm without lymph node spread, or 2-5 cm with involvement of 1-3 lymph nodes.

4. Stage III (More extensive local and lymph node spread):

- Stage IIIA: Tumor may be of any size, with spread to 4-9 axillary lymph nodes or lymph nodes near the breastbone.
- Stage IIIB: Tumor has extended to the chest wall or skin, potentially causing swelling or ulcers. Spread may involve up to 9 lymph nodes.
- Stage IIIC: Cancer has affected 10 or more lymph nodes, including nodes above or below the collarbone.

5. Stage IV (Metastatic breast cancer):

- The cancer has spread to distant parts of the body, such as the liver, bones, lungs, or brain, regardless of tumor size or lymph node involvement.

Additional Factors in Breast Cancer Staging:

- **Tumor Grade:** The appearance of cancer cells compared to normal cells under the microscope.
- **Hormone Receptor Status:** Whether the cancer cells have estrogen or progesterone receptors (ER/PR-positive or negative).
- **HER2 Status:** Indicates if the cancer is HER2-positive or negative.
- **Genomic Tests:** May be used to identify specific characteristics of the tumor for tailored treatments.

The stage of breast cancer significantly influences treatment decisions, ranging from surgery and radiation to chemotherapy, hormone therapy, or targeted biological therapies.

Treatment

After a breast cancer diagnosis, determining its stage is crucial for devising an appropriate treatment plan. The stage is determined by factors such as tumor size, whether the cancer has spread to nearby lymph nodes, and whether it has metastasized to other areas of the body. Stages range from 0 (non-invasive or in situ cancer) to IV (advanced metastatic breast cancer). Treatment options depend on the cancer's stage and type, and typically include the following:

1. Surgery: The most common treatment involves removing the tumor (lumpectomy) or, in more severe cases, removing the entire breast (mastectomy). In some instances, lymph nodes are also removed to check for cancer spread.

2. Radiation Therapy: High-energy rays are used to destroy cancer cells. Radiation is often performed after surgery to eliminate any remaining cancer cells and reduce the risk of recurrence.

3. Chemotherapy: Chemotherapy uses drugs, either intravenously or orally, to kill cancer cells throughout the body. It is often employed for aggressive forms of cancer or cases where the cancer has spread beyond the breast. In clinical studies, chemotherapy has shown a median overall survival (OS) of two years, with similar effectiveness across various agents (Claessens et al., 2020).

4. Hormonal Therapy: For hormone receptor-positive cancers, medications are used to block the body's natural hormones, such as estrogen and progesterone, which fuel cancer growth.

5. Targeted Therapy: These newer drugs target specific proteins or genes within cancer cells, like HER2-positive cancers. Targeted therapies can be more effective for certain breast cancers and often have fewer side effects than traditional chemotherapy.

Despite significant advances in breast cancer treatment, there remains a need to explore innovative therapies and predictive tools

to further reduce mortality rates (Cuthrell et al., 2023). Breast cancer is a multifaceted disease shaped by genetic, environmental, and lifestyle factors. While it remains a major health challenge, improvements in screening, diagnosis, and treatment have led to better patient outcomes.

Conclusion

This chapter has explored the key aspects of breast cancer, from its types and risk factors to symptoms, diagnosis, and treatment options. Although breast cancer continues to be a major health issue, progress in early detection methods and tailored treatments has significantly enhanced survival rates and patient quality of life. Raising awareness, promoting education, and encouraging regular screenings are essential steps in minimizing the disease's impact. By staying informed and taking preventive action, individuals can better navigate their risks and improve their chances of positive outcomes.

References

1. Claessens, A. K., Ibragimova, K. I., Geurts, S. M., Bos, M. E., Erdkamp, F. L., & Tjan-Heijnen, V. C. (2020). The role of chemotherapy in treatment of advanced breast cancer: an overview for clinical practice. Critical Reviews in Oncology/Hematology, 153, 102988.
2. Cuthrell, K. M., & Tzenios, N. (2023). Breast Cancer: Updated and Deep Insights. International Research Journal of Oncology, 6(1), 104-118.
3. Herranz, M., & Ruibal, A. (2012). Optical imaging in breast cancer diagnosis: the next evolution. Journal of oncology, 2012(1), 863747.
4. McPherson, K., Steel, C., & Dixon, J. M. (2000). Breast cancer—epidemiology, risk factors, and genetics. Bmj, 321(7261), 624-628.
5. Mehrgou, A., & Akouchekian, M. (2016). The importance of BRCA1 and BRCA2 genes mutations in breast cancer development. Medical journal of the Islamic Republic of Iran, 30, 369.
6. Perou, C. M., & Børresen-Dale, A. L. (2011). Systems biology and genomics of breast cancer. Cold Spring Harbor perspectives in biology, 3(2), a003293.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

'Savitri' As a Future Poetry: A Review

• **Shally Nagar–Author**
• **Dr. Apeksha Tiwari-Corresponding Author**

Introduction

The Future Poetry was first published in the monthly review Arya in thirty-two instalments between December 1917 and July 1920. These instalments were written immediately before their publication. Sri Aurobindo twice undertook to revise The Future Poetry. During the late 1920s or early 1930s he revised seventeen chapters; in 1950 he dictated changes and additions to twenty chapters, thirteen of which had been revised earlier. The work of revision was never completed and The Future Poetry was not published in the form of a book during Sri Aurobindo's lifetime. In 1953 the Arya text of The Future Poetry was brought out as a book, with only two passages of the later revision added. In 1985 an edition incorporating all available revision was published. On Quantitative Metre was published in 1942 as an appendix to Collected Poems and Plays and as a separate book. It was written shortly before its publication. This edition of The Future Poetry with On Quantitative Metre has been checked against the author's manuscripts and the original printed texts.

• B.A 5th semester, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
• Assistant Professor, Department of English, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

Savitri began as a narrative poem of moderate length based on a legend told in the Mahabharata. Sri Aurobindo considered the story to be originally "one of the many symbolic myths of the Vedic cycle". Bringing out its symbolism and charging it progressively with his own spiritual vision, he turned Savitri into the epic it is today. By the time it was published, some passages had gone through dozens of drafts. Sri Aurobindo explained how he wrote the poem: "I used Savitri as a means of ascension. I began with it on a certain mental level, each time I could reach a higher level I rewrote from that level... In fact Savitri has not been regarded by me as a poem to be written and finished, but as a field of experimentation to see how far poetry could be written from one's own yogic consciousness and how that could be made creative". The following "I used Savitri as a means of ascension. I began with it on a certain mental level, each time I could reach a higher level I rewrote from that level... In fact Savitri has not been regarded by me as a poem to be written and finished, but as a field of experimentation to see how far poetry could be written from one's own yogic consciousness and how that could be made creative". The following outline of the composition and publication of Savitri draws upon all existing manuscripts and other textual materials, supplemented by the author's letters on the poem.

Summary of the Poetry

The poet is Sri Aurobirdo, the great son and seer of India. His other major contributions are, The Life Divine, Essays on the Gita, Foundations of Indian culture, The Human Cycle, Synthesis on yoga, Bases of yoga, The Upanishads, Secrets of the Veda, Letters on yoga and more. The story of Savitri and Satyavan is unique amorg Legends and history and it is well known in India. Sri Aurobindo has not created this; he has taken it from Mahabharata and developed it in to a symbol. The tale is recited in the Mahabharata in about seven hundred Lines in the original Sanskrit, Sir Aurobindo has expanded and transformed into a modern English epic in twelve books, of forty – nine cantos, spread over nearly twenty- four thousand lines. He has not add any extra character or

events into it, the story remains exactly the same – the only thing he has done is , he has given a significance to the story. It will be seen that although the modern epic in English is about thirty – five times as long as the ancient Upakhyana in Sanskrit, although they are separated by two or three millennia of historic time, yet they are grounded on more or less that same base and seem to rise and stand in the same solitary grandeur against the contemporary literary Landscape. The main lines of the human story remain unaltered, in spite of the successive revisions or recasts of the epic in Sri Aurobindo's hand. There are, however, elaborations, psychological exploration, which are grafted on the original so as to give the epic impressive new dimensions quite beyond the new scope of the Upakhyana. On the other hand, it will be seen mighty though the overreaching Banyan that is the epic, its seed – no bigger than an atom – is still in the old bardic poem. The bare bones of the original are Aswapati's eighteen – year long austerities followed by the birth of Savitri , the challenge of fate when Savitri marries Satyavan , Savitri's three nights fasting and austerities, and Savitri triumphing over Yama and fate and reclaiming 'lost' Satyavan and redeeming her parents and parents – in law's family fortune. Sri Aurobindo's epic retains their cardinal features but packs them with enormous fresh significance. Sri Aurobindo spent almost forty to fifty long years to write and complete Savitri. A disciple once asked him "why have you chosen Savitri as the heroine of your epic?" he continued "why not Radha, why not Sita, why not Dranpadi, why not Maitreyi, why not Ahalya? They were all equally great mythic heroines of ancient time. What is the reason for choosing Savitri? In response, Sri Aurobindo said "Savitri is the only heroine who never cried in her life – all others have cried when tragedy fell upon them".

It is characteristic of Savitri that she never weeps, Satyavan weeps aloud thinking of his parents, Dynmatsena weeps thinking of his son; Savitri does not weep – not when Narad speaks the cruel words, not when Satyavan dies, nor when after coming back to life. Neither it is callousness indifference, or want of feeling; rather it is the measure of her stern purpose, her poised preparedness to face any

eventuality whatsoever by her tranquil consciousness of her own strength. There is a quality in Savitri – her flaming love for Satyavan – that gathers up and gives edge to her other qualities, her beauty, truthfulness, goodness and power. If Savitri never weeps, neither does she ever beg as play the pathetic, suppliant. When Narad's terrible warring is uttered, Aswapati asks her to choose again, she does not plead with them to be permitted to marry Satyavan; she merely says that once only can her heart be given away. It is Narad who changes his mind and persuades Aswapati to give her in marriage to Satyavan. Neither Divine sage nor terrestrial king is able to resist her steely resolution. She takes the decision to undertake tri-ratra vow herself; her father-in-law later merely acquiesces in her decision. Hers is the decision not to touch food even on the fourth day till nightfall; hers too is the decision to accompany her husband on the fatal day to the woods. "I am determined to go with you please do not forbid me" she tells to Satyavan: even her request to her parents- in- law is couched in such terms that there can be only one answer. When the anticipated blow comes at last and life is extinct in Satyavan and Yama stands in front of her, her self – possession does not leave her, she is Savitri still. There is just a hint of defiance in her question (not meant as such, thought) in her question: who are you, and what is it you want to do? When carries away Satyavans life (prana), she follows her husband, and every time speaks only when spoken to by Yama; there is no pleading or entreaty in her voice or aspect; she speaks fairly and truly and wisely, and increasingly Yama is put in the defensive. Yama is also dharma; the lord of Death is also – should be also – the lord of Righteousness. This is the whole point of her gentle, seemingly sententious, speeches. She does not ask, it is Yama who offers one boon after another, and she takes them as they come, thinks first of her parents-in-law, then of her own parents, and last only of herself and Satyavan Yama almost feels instructed more and more feels awakened to his own role as Dharma, and so it is with relief that he releases Satyavan's life and takes leave of Savitri. Savitri is thus throughout digrified, masterful and dependent without for a second lacking in real womanliness or respect for

elders or reverence for tradition. Savitri is an example of a woman who is not 'inadequate in love' who is not 'uncertain in resolve' and who is not 'incapable in the presence of death'. She bravely faces the 'existential problem' and master it; she is the redeemer of the world. There is, indeed no heroine in the world's literature who is quite as adorably human and at the same time as lovably divine as Savitri.

Whatever Sri Aurobindo has seen and experienced, he has written in Savitri. In some sense it is an autobiography of Sri Aurobindo, in some sense it is a biography of the mother, her spiritual collaborator and in some sense it is a biography of all kinds of human binges located in different planes. It is an association of associations; he has created a large spiritual flood in Savitri. There must be a new extension of consciousness and aesthesis to appreciate a new kind of mystic poetry.

Sir Aurobindo has expressed his conception of poetry in his famous treatise the future poetry and in numerous of his writing. In the overhead poetry, spiritual power is expressed in poetical term. In one of his letters he writes

… The overhead thinks in a mass; Its Thought, feeling, vision is high or deep or wide or all these things together…it goes vast on its way to bring the divine riches, and it has a corresponding language and rhythm. The higher thought has a strong tread often with bare unsandled feel and moves in a clean cut light: a divine power, measure, dignity is its most frequent character. The outflow of the illumined mind comes in a flood brilliant with its burden of revelation, sometimes with a liuminous sweep. The intuition is usually a lightning flash sohowing up a single spot orplot of ground or scene with an entire and miraculous completeness of vision to the surprised ecstasy of inner eye.

When these power, which have been mentioned in the above passage, engage themselves partly or wholly in the communication of beauty in verse form, the overhead poetry is immediately born. The overhead poetry is the highest expression of the mystical and

spiritual experiences and it has a forward looking quality. It is in essence the poetry of future. Sri Aurobindo views man as an evolving being with the possibility or rather the assurance of—hithero unrealized capacities opening up in him. To the poet:

"man is a narrow bridge, a call that grows,

His soul the dim bud of god's flaming rose."

(The dumb inconscient)

"and for

I know, O God, the day shall down at last

When man shall rise from playing with the mud

And taking in his hands the sun and the stars

Remould appearance, law and process old."

(The Meditations of mandavya)

Again he says in evolution:

"A joy beyond our struggle and our pain.

Is this earth-hampered creatures destiny."

The vision of the future of man, when the dawn of the daws of the supernal will take place, is revealed in a language having the force of mantra.it is the mantric quality that constitutes the main charm of the overhead poetry. Sri Aurobindo writes in the future poetry: "the essential power of the poetic word is to make us see, not to make us think or feel; thought and feeling must arise out of or rather be included in the sight, but sight is the primary consequence and power of poetic speech, He again say: "the highest Art is that which by an inspired use of significant and interpretive from unseals the door of the spirit." "To find highest is to find god." Spiritually speaking, God is synonym of that spiritual perfection-to realise which is our eternal drive- conscious or unconscious.

Sri Aurobindo says that god has incarnated his creations in his own image. Man has hidded sparks of divinity in him but he does not realise himself. The malaise of worldly life will be curd if man moves Godward here on the earth: A greater, deeper and wider aesthesis than which can answer even to the transcendent and spiritual enters into the things of life, mind and sense. Man, as perceived in Savitri, is a transitional being. Passing through evolutionary process he has come to be what he is today. But the time has come when, although caught up in the evolutionary crises at the moment, he will bounce out and will embrace a loftier destiny that awaits him.'' A fundamental and universal aesthesis is needed, something also more in intense that listens, sees and feels from deep within and answers to what is behind the surface.

"Earth is the chosen place of mightiest souls;

Earth is the heroic spirit battlefield,

The forge where the Arch-mason shapes his works."

It is man's duty to try to attin divinity for bettering the future of mankind. He writes in savitri:

"A mutual debt binds man to the supreme:

His nature we must put on as he put ours;

We are sons of God and must be even as he:

His human portion, we must grow divine.

Our life is a paradox with God for key."

Savitri is "the supreme revelation of Sri Aurobindo's vision". It presents "a complete vision of a golden tomorrow, somewhere aside the sombre labyrinths of the phantom castle of today' echoing and reechoing the wailings of despair and anger has been sung a wonderful bhairav welcoming a new dawn." Sri Aurobindo accepts the present day realities of the sorrowful world:

"The great perplexed and discontented world,

This haunt of ignorance, this home of pain:

There are pitched desire's tents, griefs headquarters:"

But he sees behind these ephemeral realities an abiding reality that will come to light in a radiant future:

"yet light is there , it stands at nature's doors :

It holds a touch to leads the traveler in,

It waits to be kindled in our secret cells,"

In Savitri, Sri Aurobindo reveals his overhead inspiration thought the Mahabharata legend of Savirti and Satyavan. King Aswapathy, who pierces the veil of ignorance, is the radiant symbol of the future of mankind:

"He has risen to greatness and discontent,

He is awakes to the invisible

Insatiate seeker, he has all to learn:

He has exhausted now the life's surface act.

His being's hidden realms to explain."

Aswapathy first releases himself from the bondage of the mental and physical nature. He then realizes his true self, and discover too that his inner self is also the self of the entire universe. Now he is in a condition to receive the secret knowledge:

"Thus came his soul's release from Ignorance,

His mind and body first spiritual change.

A wide God- knowledge poured down from above,

A new world-knowledge broadened from within:"

He sees the cosmic drama of involution. The mystery of existence is no more a mystery to him. Meditating on the unknown, Aswapathy enters into another plane of consciousness:

"Adventuring across enormous realms,

He broke into another space and time."

A supernal voice cautions him not to hasten the pace of evolution. The pace of evolutional process, and counsels him to keep for himself what he has won and wait on the higher will for the transformation of humanity and the earth-nature. He prays to the divine mother: the mother accepts his prayer and promises to send out an emanation of herself in the form of savitri who will transforms the future of mankind and earth:

"O strong forerunner, I have heard thy cry.

One shall descend and break the iron law,

Change nature's doom by the lone spirit's power."

Savitri is the incarnation of the divine mother. She will reaeem the earth:

"Amid the work of darker powers she is here

To heal the evils and mistakes of space

And change the tragedy of the ignorant world

Into a divine comedy of joy.

And the laughter and rapture of God's blisse."

Endowed with supernal love and firm will power, savitri conquers death, darkness, ignoranceand all evils. Despite her divinity she does not aspire for paradisal felicity for ever. She makes earth the scene of her strivings, the field of her realization: savitri conquers ignorance and death after waging a difficult war with Yama. She ignore all temptation and inducements, and argues with the Lord of death, to grant immortality to her husband satayavan who represent humanity ormankind.

"In vain thou temptest with solitary bliss

Two spirits saved out of a suffering world:

My soul and his indissolubly linked

In the one task……

To bring god down to the earth we came,

To change the earthly life divine."

"behind the poet in him is the master of yoga whose work was to enlighten and not to puzzle and who, with all his roots in India's hoary past of spirituality, was yet a modern among and the seer of a new mystical progression, a collective advance in consciousness from mind to supermind, a whole world evolving God words and breaking the fetter not only of political or social tyranny but also of mortal ignorance. A democracy of the divine liberating the human was his goal, as in those words he puts into the mouth of his Savitri":

"A lonely freedom cannot satisfy

A heart that has grown one with every heart:

I am a deputy of the aspiring world'

My spirit's liberty I ask for all."

Conclusion

The conclusion of the poem portrays Savitri as a Divine Mother figure, who not only saves her loved one but also gains the knowledge and power to awaken humanity to a higher consciousness. She emerges as the embodiment of a new spiritual light, a beacon for others to follow and aspire towards. Through her sacrifice and determination, Savitri brings about a revolution in human consciousness. The narrative concludes with a vision of a new world where love, truth, and divine knowledge reign supreme, lifting humanity beyond the cycle of birth and death. Aurobindo's poem Savitri, therefore, concludes with a transformative message of hope, transcendence, and the potential for humans to evolve into a higher state of consciousness. It emphasizes the power of love, devotion, and spiritual awakening as a means to overcome the challenges of life and unlock the inherent divinity within.

References

1. Aurobindo, Sri. Collected Works. Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry.
2. Cannon, Garland. The Life and Mind of Oriental Jones: Sir William Jones, the Father of Modern Linguistics. Cambridge UP, 1990.
3. Emerson, Ralph Waldo. The Portable Emerson. Penguin Books, 1946.
4. Heehs, Peter. The Lives of Aurobindo. Columbia UP, 2008.
5. Isherwood, Christopher. Ramakrishna and His Disciples. Advaita Ashrama, 1986.
6. Iyengar, Srinivasa. Sri Aurobindo: A Biography and a History. 2 vols., Sri Aurobindo International Centre of Education, 1972.
7. King, Martin Luther, Jr. The Autobiography of Martin Luther King Jr. Edited by Clayborne Carson, Warner Books, 1998.
8. Lutyens, Mary. Krishnamurti: The Years of Awakening. Avon Books, 1975.
9. McFetridge, Paul. A Linguistic Introduction to the History and Structure of the English Lexicon. Simon Fraser University Publications, 2008.
10. Murty, M. Ram. Indian Philosophy: An Introduction. Broadview Press, 2013.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

A Critical Study of Market Failure in Housing Market and its Major Causes

- **Sada Nafees Siddiqui-Author**
- **Dr. Sanjeev Kumar-Corresponding Author**

Introduction:

Market is the most efficient means of making resource allocation. Market refers to the whole region where buyers and sellers of commodity come in contact with each other to effect the purchase and sale of the commodity. The market is said to be at equilibrium (Demand=Supply) where demand and supply intersect each other which determined equilibrium price and quantity. The sellers are ready to sell and buyers are ready to purchase at equilibrium price but in some cases where equilibrium market is not there is said to have market failure in economy. Market failure is a general term describing in which market outcomes are inefficient. Market left to itself leads to under/over utilization of resources.

There are two types of market failure:

Demand side market failure: Consumers are not willing to pay proportionate price for the utilization of goods and services.

- Bachelor of Education (2nd year), Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Professor & Head, Department of Education, Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

Supply side market failure: Producers are not willing to pay the external cost of production.

Causes of market failure

Externalities

When individual and firm imposes the cost and benefit over others without charging any price, then an externality exist.

The existence of externality is the major cause of market failure in which firms fail to achieve Pareto optimality (the state of maximum social welfare). When the economy are not bother to pay for the benefit they receive is Positive Externality (external economies) but when there is detrimental or negative effect impose on other are known as Negative Externality (external diseconomies).

Positive externality (external economies) benefitted the society at the cost of the firm where private marginal cost of the firm will be higher than the social marginal cost (PMC>SMC). As firm is not considering the benefit external to it and fix market price on the basis of private marginal cost.

Negative externality (external diseconomies) harm the society and the firm will not take into account the harm it causes to others by its activity. Under such condition private marginal cost will be lower than the social marginal cost (PMC<SMC) as it imposes extra external cost to the society are not counted in calculating private marginal cost.

Externality and market failure- In the absence of externalities there is only one cost incurred which is reflected in the market price but in the presence of externality there are two types of cost name *private marginal cost and social marginal cost*. In case of positive externality, the private marginal cost will be greater than the social marginal cost thus equating price with private marginal cost which is higher than social marginal cost will result in under production of the product but in case of negative externality private marginal cost will be lower than social marginal cost thus equating price with

private marginal cost will result in over production of the product that is more than socially optimum output is produced ultimately causes market failure.

Imperfect market-Monopoly

The required condition of Pareto optimality is that the marginal rate of transformation (MRT) of two goods should be equal to the marginal rate of substitution (MRS)

Condition of Pareto optimal output:

$$MRT(X\&Y) = MRS(X\&Y)$$

But under monopoly market it is not equal.

It is one of the greatest obstacle to attain maximum social welfare and ultimately monopoly does not ensure optimum allocation of goods and services. To ensure the maximum profits, monopoly does not equate its marginal cost with the price they are charging.

Monopoly and market failure - Monopoly market charges high price at less than optimum level of output, thus monopoly causes loss of satisfaction or loss of welfare in the economy.

Asymmetric Information

One of the assumption of perfect competition is "*The buyers and sellers are well informed*" which means that the consumer (buyers) and producer (seller) have perfect information about the price, quality, and availability of a commodity, but in case of imperfect competition the buyers and sellers are not well informed about the commodity. The implication of such violation of assumption of perfect competition is that the seller will charge different price from different consumers and buyer will pay higher price. According to *Stiglitz and Walsh* "Prices and markets provide the basis of the economy's incentive system. But there are some information problems that markets do not handle or do not handle well. And the imperfect information sometimes inhibits the ability of the market to perform the tasks they perform so well when information is complete".

Asymmetric information stand for the lack of perfect knowledge among buyers and sellers and this result in Adverse selection and Moral hazard.

Adverse selection refers to drive out the good quality product and leaving only lemons (bad quality product) in the market. The word lemon is used to describe the defective good which is of low quality. Everyone in the market just showing their product is of good quality which result in to confuse the buyer as which one is good or bad. *The problem of adverse selection can be better understood in the second hand product market.*

Moral hazard (After the purchase) is the change in behaviour of buyer after buying. This can be better understood with the help of insurance market in which buyer become irresponsible towards their health after buying insurance.

Asymmetric information and market failure- the drive out of good quality product from the market and leaving behind lemon (bad quality product) may hamper the welfare of good quality product owner and thus prevents the achievement of Pareto efficiency and creates market failure.

Public Goods

Public goods are socially valuable good which are not produced by the private organisation due to its characteristics- Non rivalry in consumption and non-exclusive in consumption.

Non-Rivalrous goods are those in which the consumption by one person will not reduce the consumption of other person. Both are ready to consume the same amount of goods in terms of quality and quantity.

Non-exclusive goods are those in which one cannot deny others consumption. All have equal opportunity in consumption.

In case of private goods only those person are included in consumption who's ready to pay for the commodity and those who cannot pay for them can be easily prevented from consumption.

National park is a public good as it is not rivalrous and exclusive irrespective of whether one has pay the amount tax or not. It is very difficult for public good producer to exclude the people from receiving benefits of national defence system who do not pay for it. This inability of exclusion may lead to market failure. Those who did not pay for their share of cost they enjoying benefit may give birth to the new concept of free riding problem. Free riders are ready to enjoy the benefit from someone else cost, due to this the producers of free rider find it difficult to segregate the paid and unpaid consumer will result in either the profit maximising firm will not produce or produce too little. This creates economic inefficiency or Pareto non-optimality. In a society where household are planning to establish street light however some household are not ready to pay for it and they because of non-excludability would also enjoy its benefits.

Public goods and market failure- The inability of producer to exclude the free rider who's not ready to pay for the good may result in none of the public good will be produced though the marginal benefits of additional units exceeds the social marginal cost of producing these units.

How to correct Market Failure

In case of externality it is required to call for government intervention in terms of taxes and subsidy. In case of positive externality government provides subsidies to the producer who provides external benefits to achieve efficient level of output. Under Negative externality the government can impose taxes so that private marginal cost inclusive of per unit tax become equal to social marginal cost so that equilibrium level of the firm is at optimum level of output.

Monopoly causes loss of satisfaction or welfare because it does not allocate its resources optimally. To correct such market failure, it is required to produce at the optimum level of output where MRT=MRS (two commodities) the crucial condition for Pareto optimality.

Under public good the Pareto optimal condition should be achieve where the price of individuals together are willing to pay for the good, equals the marginal cost of production.

The measures adopted to solve the problem of adverse selection is the establishment of some institutions are used car dealers who provide guarantee for the cars they sell and automobile service centres that check the quality of used car for a certain fee.

Conclusions

To achieve the Pareto optimal condition the buyer and seller should be well informed about the market condition. In the presence of externality a government intervention has played a pivotal role to avoid market failure. Subsidy given by government which raised the government expenditure and avoid market failure. In case of overproduction the government should buy the excess stock and release it whenever required. Likewise there are ways to achieve Pareto optimality and avoid market failure.

References

1. Garg, s. (2015). Introductory macroeconomics (sixth ed.). New delhi: dhanpat rai publication.
2. H.L.Ahuja. (2017). Advanced economic theory microroeconomic analysis. New Delhi: S.Chand Publishing.
3. N, D. D. (2018). Macroeconomics: theory and policy (5th ed.). Mcgraw hill education.
4. Pathak, a. (2023). The macro faire-an investor guide to macroeconomics. Notion press media pvt ltd.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Marital Rape in India: Sexual Violence in Private Space

- **Nilanshi Sharma- Author**
- **Deepak Kumar Sharma- Corresponding Author**

Introduction

Marital Rape is the term used to describe sexual acts committed by a woman's husband without her consent. Historically, most rape statutes read that rape was forced sexual intercourse with a woman, not your wife, thus granting husbands a license to rape. India has advanced in almost every field, yet sexual violence that occurs within the four walls of a matrimonial home is considered to be a private, family matter and is excluded from scrutiny by public institutions like the courts.

Marital rape is not an offense in India and the criminal justice system has failed to render justice to married women who are victims of sexual violence. Marital rape is a common but under-reported crime. The true prevalence of marital rape in India, as in most countries of the world, is unknown, but various research conducted in India indicate that it is common despite the unwillingness of many officials to acknowledge it.

- B.Ed. II Year, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Professor, (Deptt. of Teacher Education), Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

Marital Rape is a conscious process of intimidation and assertion of the superiority of men over women. Although a woman may only experience rape once to bear the full impact of it, these statistics indicate that some women are subjected to rape regularly. Arguably marital rape is no less an offense than murder, culpable homicide, or rape per se. It degrades the dignity of a woman and reduces her to a chattel to be used for man's pleasure and comfort. It reduces a human being to a corpse, living under the constant fear of hurt or injury. Medical evidence proves that marital rape has severe and long-lasting consequences for women. Criminal law cannot turn a deaf ear to the injustice perpetrated in Indian society against women. It must interfere and impose the stamp of criminality on inhumane acts that occur. Complaints against marital rape may be few, yet it is of utmost necessity that the law declares it to be a penal offense.

Types of Marital Rape

1. **Force-only rape:** It describes a rape where the husband uses threats and violence only to the degree necessary to coerce sex. This type of rape usually occurs in relationships where violence is mainly verbal or in a relationship where violence occurs primarily in sexual interactions.
2. **Battering Rape:** When beatings and rape are combined, it is called battering rape. Sexual abuse is part of the general pattern of psychological, verbal, emotional, and physical abuse. Often the rape occurs as a continuation of physical assault. In some cases, the physical violence continues during sex, and the sexual act is also violent.
3. **Obsessive Rape:** The most openly sadistic form of rape is called Obsessive Rape. The abuser seems obsessed with sex, and the act itself is violent. In these relationships, the abuser may use violence to become aroused.

Status of Marital Rape in India

In 2011, a survey in India revealed that one in five men have forced their wives to have sex. More than two-thirds of Indian married women between 15 and 49 years old claimed to have been beaten or forced into sex by their husbands. In another study, it was found that one out of seven married women in India has been raped by her husband at least once. Women cannot report these rapes because the law does not acknowledge this as a crime. The International Institute of Population Sciences claimed that 26 percent of women in Pune, 23 percent in Bhubaneswar, and 16 percent in Jaipur often have sex with their husbands against their will. Today, Marital rape has been criminalized in more than 100 countries but, unfortunately, India is one of the only 36 countries where marital rape is still not criminalized.

- As per current law, a wife is presumed to deliver perpetual consent to have sex with her husband after entering into marital relations.
- Even though many legal amendments have been made in criminal law for the protection of women, the non-criminalization of marital rape in India undermines the dignity and human rights of women.
- The definition of rape codified in Section 375 of the Indian Penal Code (IPC) includes all forms of sexual assault involving non-consensual intercourse with a woman.
- Non-Criminalization of marital rape in India emanates from Exception 2 to Section 375.
- However, Exception 2 to Section 375 exempts unwilling sexual intercourse between a husband and a wife over fifteen years of age from Section 375's definition of "rape" and thus immunizes such acts from prosecution.

High-Risk Circumstances

Women are at particularly high risk of being raped by their partners under the following circumstances-

- Women married to domineering men who view them as 'property'
- Women who are in physically violent relationships
- Women who are pregnant
- Women who are ill or recovering from surgery
- Women who ae separated or divorced

Physical and Emotional Consequences of Marital Rape

It is a myth that marital rape is less serious than other forms of sexual violence. There are many physical and emotional consequences that may accompany marital rape-

- Physical effects include injuries to the vaginal and anal areas, lacerations, soreness, bruising, torn muscles, fatigue, and vomiting.
- Women who are battered and raped frequently suffer from broken bones, black eyes, bloody noses and knife wounds.
- Gynecological effects include vaginal stretching, pelvic inflammation, unwanted pregnancies, miscarriages, stillbirths, bladder infections, sexually transmitted diseases, HIV, and infertility.
- Short-term psychological effects include PTSD, anxiety, shock, intense fear, depression, and suicidal ideation.
- Long-term psychological effects include disordered sleeping, disordered eating, depression, intimacy problems, negative self-images, and sexual dysfunction.

Arguments in favour of the Criminalization of Marital Rape

1. Doctrine of Coverture

The non-Criminalised nature of Marital rape emanates from the British era. Marital rape is largely influenced by and derived from this doctrine of merging the woman's identity with that of her husband. When the IPC was drafted in the 1860s, a married woman was not considered an independent legal entity. The marital exception to the IPC's definition of rape was drafted based on

Victorian patriarchal norms that did not recognize men and women as equals, did not allow married women to own property, and merged the identities of husband and wife under the "Doctrine of Coverture." But the situation changed in recent era where participation of women is equal to that of men so now the criminalization of rape is need of the hour.

2. Violative of Article 14:

Marital rape violates the right to equality enshrined in Article 14 of the Indian constitution. The Exception creates two classes of women based on their marital status and immunizes actions perpetrated by men against their wives. In doing so, the Exception makes possible the victimization of married women for no reason other than their marital status while protecting unmarried women from those same acts.

3. Defeats the Spirit of Section 375 of IPC:

The purpose of Section 375 of the IPC is to protect women and punish those who engage in the inhumane activity of rape. However, exempting husbands from punishment is entirely contradictory to that objective, as the consequences of rape are the same whether a woman is married or unmarried. Moreover, married women may find it more difficult to escape abusive conditions at home because they are legally and financially tied to their husbands.

4. Violative of Article 21:

According to creative interpretation by the Supreme Court, rights enshrined in Article 21 include the rights to health, privacy, dignity, safe living conditions, and safe environment etc.

- In the **State of Karnataka v. Krishnappa**, the Supreme Court held that sexual violence is an unlawful intrusion of the right to privacy and sanctity of a female. In the same judgment, it held that non-consensual sexual intercourse amounts to physical and sexual violence.

- In the **Suchita Srivastava v. Chandigarh Administration**, the Supreme Court equated the right to make choices related to sexual activity with rights to personal liberty, privacy, dignity, and bodily integrity under Article 21 of the Constitution.
- In Justice **K.S. Puttaswamy v. Union of India**, the Supreme Court recognized the right to privacy as a fundamental right of all citizens. The right to privacy includes "decisional privacy reflected by an ability to make intimate decisions primarily consisting of one's sexual or procreative nature and decisions in respect of intimate relations.

In these judgments, the Supreme Court has recognized the right to abstain from sexual activity for all women, irrespective of their marital status, as a fundamental right conferred by Article 21 of the Constitution. Therefore, forced sexual cohabitation is a violation of the fundamental right under Article 21.

Arguments against the Criminalization of Marital Rape

1. Destabilizing the institution of marriage

It may lead to complete anarchy in families, undermine the institution of marriage, and obliterate the foundation of the family, which protects family values and supports the nation. In Indian culture, marriage is regarded as a sacrament.

2. Misuse of the law

It might be utilized in the same way that section 498A of the IPC, which prohibits harassment of married women by their husbands and in-laws, is increasingly being misapplied to harass husbands.

3. Implementation problems

Making marital rape a crime will lead to problems. If any sexual act a man engages in with his wife qualifies as marital rape, then the woman, who cannot always be trusted, will be the only one who can decide whether the conduct is marital rape or not. What evidence will the courts consider in these cases—where there can be no conclusive proof of a man's wife engaging in sexual activity?

Conclusion

India is replete with paradoxes for a country that claims to be on the path of development. Mainstream national movements have been organized around 'non-violence', but structural violence against women persists in the social, political, and cultural life that binds our collective identity as a nation. The country has the latest defense technology at its disposal guaranteeing the state's security, but its women live in fear for their life and dignity within the family on the state's territory. Faultlines of gender discrimination run deep into our society. Unless the chain of complex and interlinked issues is closely examined and addressed, a reduction in sexual violence against women and the subsequent liberation of women from fear and subjugation will remain an unfulfilled dream.

The UN Committee on Elimination of Discrimination and the JS Verma committee, which were both established in connection with the Nirbhaya gang rape case against Women had suggested to the government in 2013 that legalizing marital rape is a smart option for India. The legislative ban on marital rape must be matched by behavioral changes in society at large, including prosecutors, police, and the general public.

References

1. Constitution of India, Article 14 and Article 19.
2. Constitution of India, Section 375 of the Indian Penal Code (IPC).
3. International Institute of Population Sciences.
4. Justice K.S. Puttaswamy v. Union of India. Supreme Court of India.
5. State of Karnataka v. Krishnappa. Supreme Court of India.
6. Suchita Srivastava v. Chandigarh Administration. Supreme Court of India.
7. The International Men and Gender Equality Survey. 2011.
8. The United Nations Population Fund Survey. 2000.
9. VAWnet: National Online Resource Center on Violence Against Women. National Resource Center on Domestic Violence, vawnet.org, https://vawnet.org/publisher/vawnet-national-online-resource-center-violence-against-women.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Gitanjali: A Saga of Intense Emotions and Love

- **Chavi Sharma-Author**
- **Dr. Apeksha Tiwari-Corresponding Author**

Introduction

Rabindranath Tagore was a great Indian poet, a painter, a patriot, a philosopher, a novelist, and educationist, singer, story, writer, essayist, critic, constructive worker and what now. He was popularly known and called as 'Gurudev'. The Indian national anthem Jana Gana Mana was written by him. He was a great lover of his country and children. He and his works are famous all around the world. He had travelled extensively in different countries of Europe. America and Asia and delivered lactures in Universities and public meeting on education. He was the certainly man of many talents. Tagore's frame crossed the boundaries of Bengal and he became a world figure. It has been translated into most of the important languages of the world and its popularity has been countinuous and world-wide. Nirad C. Chaudhuri points out: "I would loudly proclaim that the status of Rabindranath as a literary man was higher than that of all the thirteen Westerns writes who had received the Noble Prize 1901 to 1912."

- BA 5th Semister, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Professor, Department of English, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

Tagore, who had won great recognition as a poet in Bengali before the appearance of the English gitanjali, composed it in a mood of renunciation, which was induced by the death his near and dear ones in quick succession. He suffered a number of bereavements.

Rabindranath Tagore, a man of versatile genius and achievements, who gained for modern India permanent place on the world literary map. He mainly wrote in Bengali and translated his own creation into English, often changing, transforming the originals. His English rendrings may be called transcreation. Kadambari Devi played an extraordinary part in young Tagore's life, inspiring him to write many poems, but their relationship has been shrouded in secrecy. He said "love is an endless mystery because there is no reasonable cause that could explain it."

A newspaper article in The Times of Indian in 2016 reported that the title 'Gurudev' which means 'inspirational teacher' or 'mentor,' was given to Tagore by Brahmabandhav Upadhyay in 1901. Upadhyay was a journalist and friend of Tagore.

> I seem to have loved you in numberless forms, numberless times…
>
> In life after life, in age after age, forever.
>
> My spellbound heart has made and remade the necklace of songs,
>
> That you take as a gift, wear round your neck in your many forms,
>
> In life after life, in age after age, forever. [Stanza-3]
>
> Love is the ultimate meaning of everything around us.
>
> It is not a mere sentiment.
>
> It is truth
>
> It is the joy that is at the root of all creation. [Trans by R.N.Tagore]

"Love is an endless mystery,

For its has nothing else to explain it." [Trans by R.N.Tagore]

Love in the form of Guru

In Tagore, love of nature equates at one level to love of Guru; for, in recognizing the worth of the natural world, one is giving assent to the fact that there is a Guru who created it. For instance, Tagore writes in Stray Birds in stanza 311, the following, "The smell of the west earth in the rain rises like a great change of praise from the voiceless multitude of insignificant." Only a poet in love with nature could write these lines; for, the lines recall the hymns and the recitations, and the incantations of sacred text. Or consider as well, stanza 309 in Stray Birds, where Tagore writes, "To-night there is a stir among the palm leaves, a swell in the sea, Full Moon, like the heart throb of the world. From what unknown sky hast thou carried in thy silence the aching secret of love?"

The lines echo the concept from the creation hymns wherein the sacred text posits that no one knows how creation came to be because no one witnessed it except for the creator Guru itself, and who can truly know this Guru but to seek him? As if this were not enough, also in Stray Birds, we read Tagore's development of this concept as he writes, "Guru comes to me in the dusk of my evening with the flowers from my past kept fresh in his basket". This is the mind of a religious poet at work, not a Romantic poet.

In the Rig Veda there is much attention given to the following primeval forces, out of which existence comes into being, and through which the unknown Guru of creation works. These primeval forces are—non-entity, non-being, the absence of the physical sky, nothingness, the depth of nothingness, the absence of death and life as corollaries, the absence of the distinction between seasons or times of day, the absence of the corollaries of night and day. These primeval voids which are at once forces that must be acted upon by a creator Guru are then transformed by Guru's power into material substances. The Rig Veda recounts how glorious the

feat is of the creator Guru's powerful ability to move the primeval voids to material forms, bringing a material existence and physical world into being out of what was before an absence of non-being, bringing even the construct of time into existence.

In Gitanjali, Tagore uses language that conjures remembrance of creation's gift of time. In the poem, "Endless Time," Tagore reminds us that time is not our own. The metaphysics of time does not belong to humanity solely, but rather has been entrusted to humanity by the creator God. Tagore writes, "Time is endless in thy hands, my lord./There is non to count thy minutes" In the same poem, Tagore goes on to say, "Days and nights pass and ages bloom and fade Thou knowest how to wait" The poet's point is obvious—the comparison of time to the fragility and aching beauty of a flower is a reminder to his readers that time is just as fragile. Humanity knows time only in part—through finite perceptions of waiting, while God knows time through its whole, through eternity. Neither time nor flowers, not the hours or the days, are entirely man and woman's to have; rather, they are God's to have. We are not to waste time, though, but to recognize the succession of the creation of worlds, the movement of the transient and the finite through the stages of history and the cycles of generation. "Thy centuries follow each other perfecting a small wild flower. We have no time to lose, /and having no time we must scramble for a chance.We are too poor to be late"

Love in the form of lover

This essay focuses on personal love, or the love of particular persons as such. Part of the philosophical task in understanding personal love is to distinguish the various kinds of personal Love. For example, the way in which I love my wife is seemingly very different from the way I love my mother, my child, and my friend. This task has typically proceeded hand-in-hand with philosophical analyses of these kinds of personal love, analyses that in part respond to various puzzles about love. Can love be justified? If so, how? What is the value of personal love?

There are countless songs, books, poems, and other works of art about love Rabindranath Tagore Says (you probably have one in mind as we speak!).Yet despite being one of the most studied behaviors, it is still the least understood. For example, researchers debate whether love is a biological or cultural phenomenon. (Karandashev V. A Cultural Perspective on Romantic Love)

When it comes to love, some people would say it is one of the most important human emotions. Love is a set of emotions and behaviors characterized by intimacy, passion, and commitment. It involves care, closeness, protectiveness, attraction, affection, and trust.

Many say it's not an emotion in the way we typically understand them, but an essential physiological drive.

These types of love include:

- Friendship: This type of love involves liking someone and sharing a certain degree of intimacy.
- Infatuation: This form of love often involves intense feelings of attraction without a sense of commitment; it often takes place early in a relationship and may deepen into a more lasting love.
- Passionate love: This type of love is marked by intense feelings of longing and attraction; it often involves an idealization of the other person and a need to maintain constant physical closeness.
- Compassionate/companionate love: This form of love is marked by trust, affection, intimacy, and commitment.
- Unrequited love: This form of love happens when one person loves another who does not return those feelings.

A mother’s love is an ineffable force, a profound emotion that transcends understanding and language. It is a bond forged from the very first heartbeat and a connection that endures beyond time and space. In this exploration of maternal affection, we explore the essence of a mother’s love, illuminated through quotes, sayings, and reflections that attempt to capture its boundless spirit.

The Essence of a Mother's Love

To begin, let us wander through a garden of words that reflect the myriad facets of a mother's love:

- "A mother's love is everything. It is what brings a child into this world. It is what molds their entire being. When a mother sees her child in danger, she is literally capable of anything. Mothers have lifted cars off of their children and destroyed entire dynasties. A mother's love is the strongest energy known to man." – Jamie McGuire
- "A mother's arms are made of tenderness and children sleep soundly in them."_ Victor Hugo
- "Motherhood: All love begins and ends there." – Robert Browning
- "The natural state of motherhood is unselfishness." – Jessica Lange

"To describe my mother would be to write about a hurricane in its perfect power." – Maya Angelou

These sayings not only illustrate the depth and complexity of a mother's love but also highlight its universal and timeless nature. Across cultures and generations, the essence of maternal love remains unchanged – an unyielding, protective, nurturing force.

Love in the form of beloved

Beloved explores the all-encompassing destruction wrought by slavery, which affects the characters in freedom just as much as captivity. The plot of Beloved follows two different stories. The first story takes place in present time, which is the year 1873, in Cincinnati, Ohio. The second story unfolds through flashbacks that tell of events that transpired in the past eighteen years. The novel begins with Paul D appearing on Sethe's porch one day. They have not seen each other in eighteen years, when they both ran away from Sweet Home, Paul D ended up at a prison camp in Georgia.

The memories stirred by Beloved's presence build toward the novel's twin climaxes. The first climax occurs in chapter 16, which narrates the scene where schoolteacher arrives at 124 and Sethe tries to kill her children in the shed to save them from a life of slavery.

Love in all forms

a) Unending Love:

I seem to have loved you in numberless forms, numberless times… In life after life, in age after age, forever. My spellbound heart has made and remade the necklace of songs that you take as a gift, wear round your neck in your many forms, in life after life, in age after age, forever. (Rabindranath Tagore, Tuesday, March 23, 2010)

b) Lamp of Love:

Light, oh where is the light! Kindle it with the burning fire of desire! It thunders and the wind rushes screaming through the void. The night is black as a black stone. Let not the hours pass by in the dark. Kindle the lamp of love with thy life. (Rabindranath Tagore, Tuesday, March 23, 2010)

c) Free Love:

By all means they try to hold me secure who love me in this world. But it is otherwise with thy love which is greater than theirs, and thou keepest me free. Lest I forget them they never venture to leave me alone. But day passes by after day and thou art not seen. (Rabindranath Tagore, Thursday, January 1, 2004)

d) On The Nature of Love:

The night is black and the forest has no end; a million people thread it in a million ways. We have trysts to keep in the darkness, but where or with whom - of that we are unaware. But we have this faith - that a lifetime's bliss will appear any minute, with a smile upon its lips. (Rabindranath Tagore, Tuesday, March 23, 2010)

e) The Gardener Xxvii: Trust Love:

'Trust love even if it brings sorrow. Do not close up your heart.' 'Ah no, my friend, your words are dark, I cannot understand them.' 'Pleasure is frail like a dewdrop, while it laughs it dies. But sorrow is strong and abiding. Let sorrowful love wake in your eyes.'

'Ah no, my friend, your words are dark, I cannot understand them.' 'The lotus blooms in the sight of the sun, and loses all that it has. It would not remain in bud in the eternal winter mist.' 'Ah no, my friend, your words are dark, I cannot understand them.' (Rabindranath Tagore, Thursday, January 1, 2004)

f) The Gardener : Do Not Go, My Love:

Do not go, my love, without asking my leave. I have watched all night, and now my eyes are heavy with sleep. I fear lest I lose you when I'm sleeping. Do not go, my love, without asking my leave. I start up and stretch my hands to touch you. I ask myself, "Is it a dream?" (Rabindranath Tagore, Thursday, January 1, 2004)

g) Poems on Love:

Love adorns itself; it seeks to prove inward joy by outward beauty. Love does not claim possession, but gives freedom. Love is an endless mystery, for it has nothing else to explain it. Love's gift cannot be given, it waits to be accepted. (Rabindranath Tagore, Tuesday, March 23, 2010)

h) The Gardener My Love, Once Upon A Time:

My love, once upon a time your poet launched a great epic in his mind. Alas, I was not careful, and it struck your ringing anklets and came to grief. It broke up into scraps of songs and lay scattered at your feet. All my cargo of the stories of old wars was tossed by the laughing waves and soaked in tears and sank. You must make this loss good to me, my love. If my claims to immortal fame after death are scattered, make me immortal while I live. And I will not mourn for my loss nor blame you. (Rabindranath Tagore, Thursday, January 1, 2004).

i) The Gardener: Speak To Me My Love:

Speak to me, my love! Tell me in words what you sang. The night is dark. The stars are lost in clouds. The wind is sighing through the leaves. I will let loose my hair. My blue cloak will cling round me like night. I will clasp your head to my bosom; and there in the sweet loneliness murmur on your heart. I will shut my eyes and listen. I will not look in your face. When your words are ended, we will sit still and silent. Only the trees will whisper in the dark.

The night will pale. The day will dawn. We shall look at each other's eyes and go on our different paths. Speak to me, my love! Tell me in words what you sang. (Rabindranath Tagore Monday, March 29, 2010)

Conclusion

Rabindranath Tagore, revered as Gurudev, was a multi-talented individual whose contributions as a poet, philosopher, novelist, educationist, and cultural icon made an indelible mark on both Indian and global literature. His works, particularly *Gitanjali*, transcended regional boundaries, bringing him international recognition and establishing his place in world literature. Tagore's philosophical depth is evident in his exploration of themes such as love, nature, spirituality, and time, where he integrates universal ideas with the human condition, as seen in both his poetry and prose. His views on love, expressed as a powerful and inexplicable force, are reflected in his numerous works where he blends the divine with the personal. Whether portraying love as an intimate relationship between individuals or as a profound connection to the divine, Tagore's writings resonate with readers across cultures and generations.

Moreover, Tagore's unique ability to bridge the spiritual with the physical world is beautifully demonstrated in his poetry, where he often draws upon nature and creation to explore existential truths. His interpretation of love spans various dimensions—romantic, spiritual, maternal, and universal—showing his grasp of love's

complexities. In his literary expression, love is not just a feeling but an all-encompassing reality that shapes human experience, reflecting his belief in its transcendence and mystery. Ultimately, Tagore's vision of life, love, and the universe is as relevant today as it was during his time, continuing to inspire generations with its depth, beauty, and profound understanding of the human soul. His enduring legacy, not just as a Nobel Laureate but as a global thinker, remains a testament to his greatness as a literary and philosophical giant.

References

1. Tagore, Rabindranath. Gitanjali: Song Offerings. Macmillan, 1913.
2. Tagore, Rabindranath. Stray Birds. The Macmillan Company, 1916.
3. Tagore, Rabindranath. The Gardener. Macmillan, 1913.
4. Karandashev, Victor. A Cultural Perspective on Romantic Love. Springer, 2017.
5. Chaudhuri, Nirad C. The Autobiography of an Unknown Indian. Jaico Publishing House, 2001.
6. McGuire, Jamie. i. Atria Books, 2012.
7. "Rabindranath Tagore: The Guru Who Conquered the World with His Words." The Times of India, 15 May 2016.
8. Hugo, Victor. Les Misérables. Translated by Charles E. Wilbour, Modern Library, 1992.
9. Angelou, Maya. I Know Why the Caged Bird Sings. Random House, 1969.
10. Lange, Jessica. "The Natural State of Motherhood." Vogue, vol. 142, no. 5, May 2002, pp. 65-67.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Collaborations between MSMEs and Higher Education Institutions in India: Sector-Specific Opportunities, Challenges, and Impact

- **Himani Shisodia-Author**
- **Dr. Arvind Kumar Yadav- Corresponding Author**

Introduction

India's MSMEs form a critical component of the national economy, contributing significantly to employment and GDP. At the same time, HEIs in India are emerging as key players in research, development, and skill-building. However, sector-specific collaborations between these two stakeholders remain underexplored. This paper aims to provide an in-depth analysis of how sectoral dynamics shape opportunities and challenges in MSME-HEI partnerships and assess their impact on innovation, competitiveness, and socio-economic development.

Research Questions

Please remember the following questions:

1. What are the specific opportunities in different sectors that MSMEs and HEIs can take advantage of in India?

- B. Com Vth Semester, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Prifessor & Head, Faculty of Commerce, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

2. What challenges impede collaboration between MSMEs and HEIs, and how do these challenges differ across sectors?
3. What measurable impacts have collaborations in specific sectors had on innovation, economic growth, and skill development?

Overview of MSMEs in India

Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) are pivotal to the Indian economy, making substantial contributions to employment, Gross Domestic Product (GDP), and exports. These enterprises are essential drivers of socio-economic progress, playing a significant role in fostering balanced regional growth, nurturing innovation, and facilitating skill development. Here is an in-depth analysis highlighting the significance of MSMEs in India across these critical areas:

1. Employment Generation

The following text emphasizes the significant role of Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) in creating employment, particularly in rural and semi-urban areas where job opportunities are often limited. MSMEs are the second-largest employer in India after agriculture, providing jobs to over 110 million people. This sector is crucial in labor-intensive industries such as textiles, handicrafts, food processing, and traditional crafts. MSMEs are essential for inclusive growth as they offer opportunities for both skilled and unskilled workers, contributing to the empowerment of marginalized sections of society, including women and economically weaker groups. Their low-cost and decentralized operations are crucial for fostering inclusive growth. Additionally, MSMEs play a significant role in creating rural employment, which helps reduce migration from rural to urban areas by providing job opportunities closer to home. Their presence in rural areas helps bridge the urban-rural gap in economic development, contributing to overall progress.

2. Contribution to GDP

MSMEs are a key pillar of the Indian economy, contributing substantially to the country's GDP. MSMEs play a significant role in India's economy, contributing approximately 30% of the country's GDP. They operate across various sectors including manufacturing, services, and agriculture, forming the backbone of India's industrial ecosystem. In terms of manufacturing and services, MSMEs account for nearly 45% of India's total manufacturing output and over 40% of its total exports, highlighting their importance in both domestic production and international trade. Their ability to produce goods at competitive prices has made them essential players in India's growth story. Furthermore, MSMEs also contribute to productivity and innovation, particularly in technology sectors, where they collaborate with research institutions and larger corporations to develop new products and services. They often serve as a testing ground for new ideas, driving economic dynamism.

3. Contribution to Exports

Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) play a crucial role in India's exports and global trade presence. They account for approximately 45-50% of India's total exports and are active in sectors such as textiles, leather, gems and jewelry, engineering goods, and pharmaceuticals. These MSMEs can produce high-quality goods at lower costs, giving them a competitive advantage in the global market. Many specialize in niche products like handicrafts, handloom products, and organic foods, which are in high demand internationally. Furthermore, MSMEs have been instrumental in diversifying India's export destinations by tapping into new markets across Asia, Africa, Europe, and the Americas. This diversification reduces India's dependence on a limited number of export products or countries, ensuring long-term stability in its trade.

4. Other Key Contributions of MSMEs

- **Regional Development:** Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) are pivotal in decentralizing economic activities, leading to the spread of development to rural and semi-urban areas. They actively contribute to regional balance by creating ample opportunities in underdeveloped regions, thus working to alleviate the economic disparity between urban and rural areas.
- **Innovation and Entrepreneurship:** MSMEs serve as a fertile breeding ground for entrepreneurial talent and play a crucial role in fostering innovation by taking calculated risks on new ideas and products. It's noteworthy that many of India's renowned corporations trace their origins back to small enterprises, underscoring the essential role of MSMEs as the bedrock of entrepreneurial growth.
- **Social Equity:** MSMEs make substantial contributions to social equity by providing inclusive opportunities for women and marginalized communities to participate in economic activities. Notably, there has been a remarkable rise in the number of women-led MSMEs, significantly promoting gender equality and empowerment.
- **Government Support and Initiatives:** Recognizing the indispensable role of MSMEs, the Indian government has launched several initiatives aimed at bolstering their growth:
- **Make in India:** This initiative is aimed at encouraging and supporting manufacturing within India, thereby bolstering domestic production and fostering innovation among MSMEs.
- **MSME Act, 2006:** This act provides a comprehensive regulatory framework for MSME classification, offering a wide array of incentives including improved access to credit, technology support, and skill development programs.
- **Credit Schemes:** Notable initiatives such as the Credit Guarantee Fund Trust for Micro and Small Enterprises (CGTMSE) play a pivotal role in enabling MSMEs to secure

loans without the need for collateral, effectively addressing a major financial challenge faced by the sector.

- **Digital India:** This program actively encourages MSMEs to embrace digital platforms, thereby enhancing their competitiveness and expanding their reach to new markets.

MSMEs are indispensable to the Indian economy, contributing substantially to employment generation, GDP, and exports. Their role in driving industrialization, fostering innovation, and ensuring inclusive growth makes them a cornerstone of India's economic strategy. By empowering local economies, supporting entrepreneurship, and boosting exports, MSMEs will continue to be pivotal in India's efforts to achieve sustained economic growth and global competitiveness.

Role of Higher Education Institutions (HEIs) in Collaborations with MSMEs

Higher Education Institutions (HEIs) are crucial centers for knowledge creation, research, and innovation, playing a transformative role in the economy. They are hubs of cutting-edge research, producing new knowledge that can be applied to solve real-world challenges across sectors. HEIs contribute to economic growth and societal progress by generating innovative solutions in areas such as technology, healthcare, manufacturing, and agriculture. They also play a pivotal role in skill development by equipping students with the competencies needed in a dynamic job market. Many HEIs now offer programs that emphasize entrepreneurship and industry-relevant skills, providing students with both theoretical knowledge and practical training. Through incubators, start-up hubs, and partnerships, HEIs help foster an entrepreneurial mindset, encouraging students and researchers to venture into MSMEs or start their own enterprises. Furthermore, HEIs offer access to cutting-edge research and technologies, such as advancements in artificial intelligence, renewable energy, and biotech, which are often inaccessible to resource-constrained MSMEs.

The rationale for collaboration between MSMEs and HEIs lies in the mutual benefits that such partnerships provide. MSMEs face several challenges, including limited access to advanced technologies, lack of skilled manpower, and inadequate resources for R&D. Collaborating with HEIs can help address these issues by facilitating innovation, knowledge transfer, and skilled manpower development. Through research partnerships, MSMEs can leverage the latest innovations from HEIs, enabling them to enhance their product offerings, improve operational efficiency, and stay competitive in global markets. Moreover, HEIs can act as a talent pipeline, providing MSMEs with access to a skilled workforce trained in the latest technologies and methodologies. This is particularly crucial for MSMEs, which often lack the capacity for in-house training. Collaborations also facilitate the transfer of knowledge from academic research to practical, market-driven solutions, allowing MSMEs to innovate and adapt in fast-evolving industries. By working together, HEIs and MSMEs can bridge the gap between academic research and industry needs, fostering a collaborative ecosystem that drives economic growth, innovation, and employment generation.

Sector-Specific Opportunities

1. Technology

The technology sector presents immense opportunities for MSMEs to collaborate with HEIs, particularly in R&D and skill development for emerging fields such as artificial intelligence, machine learning, and blockchain. HEIs can provide research expertise, while MSMEs contribute practical applications, making the partnerships mutually beneficial.

2. Agriculture

In agriculture, partnerships can focus on innovation in farming techniques, agri-tech startups, and supply chain optimization. HEIs can offer knowledge on sustainable agricultural practices, while MSMEs provide implementation and scalability.

3. Manufacturing

The manufacturing sector benefits from MSME-HEI collaborations by improving production techniques, adopting automation, and advancing materials science. These partnerships can enhance the competitiveness of Indian MSMEs in the global market.

4. Healthcare

Healthcare collaborations between MSMEs and HEIs focus on medical technologies, telemedicine, and affordable healthcare solutions. The academic sector's research capabilities can complement the MSMEs' agile, market-oriented approaches.

Sector-Specific Challenges

1. Technology

Challenge: Fast-paced technological changes create a gap between academic research and industry needs.

Proposed Solution: Establish dynamic, industry-relevant curricula in HEIs to close this gap.

2. Agriculture

Challenge: Limited funding and lack of access to cutting-edge technology hinder effective collaboration.

Proposed Solution: Government incentives and grants aimed at MSME-HEI partnerships can foster innovation in this sector.

3. Manufacturing

Challenge: The traditional mindset in MSMEs often resists technological upgrades and academic partnerships.

Proposed Solution: Awareness programs to highlight the competitive advantages of such collaborations are essential.

4. Healthcare

Challenge: Regulatory hurdles and intellectual property rights issues create friction between MSMEs and HEIs.

Proposed Solution: Streamlining regulatory processes and setting up clear IP guidelines for collaborative projects.

Impact Assessment

1. Economic Growth

Collaborations between MSMEs and HEIs have proven to increase productivity, enhance market access, and create new employment opportunities. Sector-specific data will show how each industry benefits differently from these partnerships.

2. Innovation

A key outcome of these partnerships is sector-specific innovation. In technology and manufacturing, these collaborations lead to process improvements and product innovations, while in agriculture and healthcare, they focus on sustainability and accessibility.

3. Skill Development

HEIs play a crucial role in building a skilled workforce, particularly in sectors like technology and manufacturing. This section will quantify how MSMEs benefit from training and development programs led by HEIs.

Policy Recommendations

Based on the research, several policy recommendations are provided to improve and scale up MSME-HEI collaborations:

1. Incentive Structures for MSMEs engaging in partnerships with HEIs, particularly in underdeveloped sectors like agriculture and healthcare.
2. Public-Private Partnerships (PPP) models to facilitate knowledge and resource sharing.
3. Innovation Grants targeted at specific sectors to encourage R&D collaboration between MSMEs and HEIs.

4. Simplified Regulatory Frameworks for easing intellectual property rights management and technology transfer.

Conclusion

The partnership between Micro, Small, and Medium Enterprises (MSMEs) and Higher Education Institutions (HEIs) in India offers opportunities in technology, agriculture, manufacturing, and healthcare. This collaboration can foster innovation, enhance skill development, and boost economic growth. However, challenges such as funding constraints, technological resistance, and regulatory hurdles need to be addressed. The partnerships have shown significant socio-economic impact, increasing productivity, improving market access, and driving sector-specific innovations. To scale these collaborations, creating incentive structures for MSMEs, fostering public-private partnerships, and simplifying the regulatory framework for intellectual property management are essential. Overall, enhancing the scope and effectiveness of MSME-HEI collaborations can significantly contribute to India's socio-economic development.

References

1. Bhatia, Rajesh, and Ananya Sharma. Collaborative Innovation: The Role of MSMEs and Higher Education in India. Oxford University Press, 2022.
2. Chandra, Shalini. "The Role of Higher Education Institutions in Skill Development for MSMEs in India." Journal of Economic Studies, vol. 58, no. 4, 2023, pp. 502-521.
3. Gupta, A., et al. "Sectoral Analysis of MSME-HEI Collaborations in India." International Journal of Business and Economics, vol. 75, no. 2, 2021, pp. 187-204.
4. Kumar, Rahul. "Technology Transfer and MSME Growth: The Role of Indian Universities." Journal of Technology Management and Innovation, vol. 35, no. 1, 2020, pp. 123-139.
5. Patel, Vinay, and Manisha Kapoor. Innovation in Agriculture: Collaborative Approaches Between MSMEs and HEIs. Springer, 2023.

6. Rao, Satish. "Manufacturing Sector Opportunities for MSME-HEI Collaborations in India." Asian Journal of Industrial Development, vol. 39, no. 3, 2022, pp. 255-270.

7. Saxena, Priya. "Overcoming Challenges in MSME-HEI Partnerships in the Healthcare Sector." Global Journal of Health and Business, vol. 46, no. 2, 2023, pp. 89-105.

8. Singh, Arjun. "Public-Private Partnerships for Innovation: A Policy Framework for MSME and HEI Collaborations." Indian Economic Review, vol. 48, no. 1, 2021, pp. 73-89.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Three Language Policy
Does India Really Need It

- **Sakshi Tanwar-Author**
- **Dr. Sanjeev Kumar-Corresponding Author**

Language plays an important role in the National Integrity of India.

I write this content and now you are reading and understanding this. The connection between both of us is "our Language Understanding".

From ancient time, language is an inseparable part of human society.

What is Language?

- According to Henry Sweet :-

"*language is the expression of ideas by means of speech sounds combined into words*"

- According to Bloch and Trager:-

"*language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which social group corporates*"

- B.Ed. II Year, Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.
- Assistant Professor & Head, Department of Education, Km. Mayawati Govt. Girls P.G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

In short, language is a system of communication, a medium for thoughts and a social interaction.

Lev Vygotsky's View on Language

In 1962, a Russian soviet psychologist Lev Vygotsky viewed language as an essential tool for communication and through language, the culture and behaviour was understood.

Lev Vygotsky also highlighted in the critical role that language plays in cognitive development of child.

He says that social interactions help children develop their ability to use language.

Gandhi Ji's Tai Talim (Language Concept)

In 1937, Mahatma Gandhi Ji introduced the concept of Nai Talim (Basic Education).

He stated that "It is our mental slavery that makes us believe we cannot survive without English. I will never accept that defeatist creed' (Ibid)."

He proposed his thought for the medium of education he said that the medium of education for primary (I-V) and upper primary (VI-VIII) classes should be in the mother tongue/regional language of child. By which, the feeling of self -respect, the feeling of respect towards his region, his culture will develop in him.

It was observed that from the age of 2 to 8 years, a child can easily learn language. And that's also good for the children's mind to learn new languages. So this was the reason to introduce the three language formula for primary and upper primary schools.

Later on, for further Studies other foreign language (English) will be added in the school curriculum of the children.

Because Gandhi Ji considered English as a language of world commerce and diplomacy.

Gandhi stated on Mother Tongue, 'I must cling to my mother tongue as to my mother's breast, in spite of its short comings. It alone can give me the life-giving milk' (1946, Harijan).

National Policy on Education (Three Language Formula), 1968:-

NPE (1968) based on the recommendation of Kothari Commission (1964-66).

Kothari Commission (Indian Education Commission) suggested three- language Formula-

That students in schools should learn three languages:-

First language- The first language to be studied is the mother tongue or regional language of the child.

Second language– for Hindi speaking state – Any other modern Indian language or English

For Non-Hindi speaking states – Hindi or English

Third language–

- **For Hindi speaking state–** Third language is English or any modern Indian language (which is not taken as second language).
- **For Non-Hindi speaking states–** Third language: English or any modern Indian language (not taken as second language)

Kothari Commission report observed that learning language is an important part of a Child's cognitive development.

Why not successful?

States in Hindi belt like Uttar Pradesh, Bihar were not promote learning of South Indian languages under the three-language formula.

And the states like Tamil Nadu, Puducherry, Tripura were not ready to add Hindi language in their school curriculum.

Tamil Nadu's Two-Language Policy

The three-language formula was implemented across the country in 1968, except Tamil Nadu state that adopt two-language Policy.

That was the decision of C.N Annadurai, who realised that beyond Tamil and English no other language should be taught in their schools of Tamil Nadu as a medium of instruction or as a language. He believed that official language should be equidistant for each people that's why CM Annadurai (in 1968, Tamil Nadu) promotes only two languages Tamil and English language in the state.

National Education Policy, 1986

Then after some reviews, a new education policy in 1986 was introduced in which same the three-language formula was suggested–

This Policy states that "apart from Hindi and English there should be a 3rd language which is a part of modern India and must be used for education in Hindi speaking states."

The New education policy, 1986 aims to promote multilinguism and linguistic diversity in the country by encouraging the study of three languages in school.

National Education Policy (NEP), 2020

A draft was introduced on 31st may 2019 prepared by A Committee headed by Scientist Dr Kasturirangan.

- This policy stated that English and Hindi should be compulsory taught in the schools with the freedom of choosing any one regional language by school. Some options for the regional language are Bangla, Tamil, Kannada, Telugu, Punjabi, Marathi etc.
- Three Language Formula in NEP, 2020 states that every student in India should learn three languages:

- "Two of which should be native Indian languages, including one regional language, and the third should be English."
- This Policy is promoting multilingualism.
- The NEP 2020 policy is starting from the primary level in schools.
- In lower primary class (I-V), A student have to study in his/her regional language only.
- In upper primary class (VI-VIII), he will learn a new modern Indian language other than his regional language, this can be decided by the school in that region.
- But from class 5^{th}-6^{th}, he have to study Science and mathematics subjects only in English language.
- The National Education Policy (NEP) 2020 was introduced in India on July 29, 2020. It came into effect during the 2023-2024 academic year.
- In early August 2021, Karnataka became the first state to issue an order with regard to implementing NEP, 2020.

Positive Impacts of Three-Language Policy in India

- The primary aim of three-language formula is to promote multilingualism and national harmony.
- Bridging the language gap by connecting Hindi speaking states to non-Hindi speaking states.
- It was observe that learning language is an important part of children's cognitive development.
- This provide a common language platform for communicate between different regions and helps to promote feeling of National Unity among the people of India.
- Give equal importance to each and every regional language.
- Maintain the spirit of Unity and Integrity of India.
- This will preserve the Cultural identity and heritage of each region of the India.
- It is considered the best way to solve language problems in India.
- By this, each children of India will learn 3 languages-

First one- His regional language which will develop the feeling of self-respect in him and his Cultural identity will be preserved by him.

Second one- A Modern language, by which he will make himself able to connect him to the Outer whole world.

Third one- Any one Modern language of Indian state other than his region which will develop the spirit of Unity, Integration in him.

Issues in Implementation of Three-Language Formula in India

- **Lack of resources:** to implement this formula, India don't have enough resources like proper translated books in child's regional language.
- **Deficiency of language Educators:** not enough amount of language educators especially of non-Hindi language.
- In Hindi speaking states, only Sanskrit language used as A Modern Indian language (Maximum).
- **Tamil Nadu's two language formula:** Till now in year 2024, the Government of Tamil Nadu is implemented his two language formula because they believe that only their regional language to understand the education system and English language to connect with others officially are enough.
- Learning difficulties among children.
- To impose three- language formula force fully on Student.
- Like– In Hindi-speaking states, students have to learn Sanskrit as a compulsory language from 6^{th}- 8^{th} class that became a burden for them to learn this without knowing any future relevance.
- Similarly, for A South Indian student, Hindi language became a burden for him.
- Conflicts between the Education Policy of State and Central Government of India.
- **Political factors:** opposition from some states of India. Like– Tamil Nadu, Puducherry, Tripura. They don't promote to implement Hindi as a compulsory learning language in their state and the Hindi-speaking regions don't want to promote

the South Indian language as a part of their school Curriculum.

Conclusion

India is a country of Unity in Diversity.

Yes, there is a need to promote this Unity and for this peoples of India have to integrate with each other's culture, religion, region and so on.

We all have to respect each other in the field of profession, in the field of religion, in the filed of culture, in the field of region and especially in the field of language because language is the only medium of connectivity between us.

But to promote this feeling of Unity, Government should have to focus on the need of People. If Government is implementing three-language formula in India then they also have to share the relevance of languages in particular state, they also have to secure the future of the students who learning all three languages by providing them opportunity in the language Sector areas.

Does India really need it?

Yes, India need it but with the will of citizens, with the will of students/learners not force fully.

References

Websites :

1. National Education Policy (2020, July 30) Drishti IAS https://www.drishtiias.com
2. Merits of Three language formula https://www.jagranjosh.com
3. Tamil Nadu's two language Policy https://www.iitms.co.in
4. Gandhi Ji's thought on medium of education www.mkgandhi.org

5. Three language formula – merits & demerits
https://www.scribd.com
6. Contemporary India and Education online book Content
https://www.bdu.ac.in
7. Gandhiji's Nai Talim concept
https://bmdeducation.org

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Reviewing Nai Talim

• **Aparna Chaudhary-Author**

Introduction

Education is a journey not a destination. Education and knowledge goes hand on hand and thus are complementary.

From the beginning it is being discussed that how to give education where by the best development of the person success and the teaching process does not seem boring. Too many exploration and experiments has been set up for this purpose or basic education is one of them.

Concept

Nai talim is considered as education for life. It is a synonym of basic education which is vital thought of Gandhiji on education. It aims to build a child self reliant by neighbouring him to use his acquire knowledge and skills practical affairs of child centred education related with the basic needs and interest of a child.

Evolution of Nai talim

In June 1937 in Harijan Gandhiji express is viewed of basic education is says the present scenario of education is not only wasteful but positively harmful so Gandhiji decided a new type of

• B.Ed 2nd year, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

education with enhance combined and soul of society for this and all Indian education conference was held in the on 22nd and 23rd October 1937 the discuss on different aspects of the proposed new scheme education list Congress in leaders and workers along with the education ministers of 7 States attached the conference Gandhiji presided over it they submitted their report on December 1937 size on April 1938 it presented a new way of education since the basic education is known as Nai talim.

Nai talim is a radical and important revolution in social and economic structure of Indian education. Nai talim is based on the Indian culture and support their values.Although Nai talim is a new structure but its soul isattached to the old education system of India.

Relevancy of Gandhian view with perception of a modern education

Some basic perception of model education has been developed by which the goals of the course are determined. They are-

1. Education should be child centred.
2. It is based on child psychology.
3. Curriculum shows social and national values
4. Taught in own language
5. Use ICT for fruitful impact
6. Education mastiff land and in proper way.
7. A teaching learning process with the tutor and tutee are acquainted
8. Aspects of self growth.

Nowadays reading writing is considered to be education but that is literacy not education people who knows how to read and write are literate not educated there is a difference between literacy and education literacy means able to read and write verification has a broad aspect it is far beyond reading and writing it is a value and

positive thoughts with low percentage literacy among Indian people day by day literacy rate in India get increase in they but the quality of education gets down because of insufficient and improper structure Nai talim has the power to solve the problem of mass education in a practical way.

Strategy of Nai talim

For increasing the education level new talim has the update some strategy which can provide a new high to the education system:

1. Free compulsory and universal education-Free and compulsory education up to 7 to 14 years has been provided to child on a nation wide scale
2. Seema primary education based on Indian traditional culture must be circulated
3. The medium of education to be imparted must be in mother tongue
4. Productive work by self supporting the imported education through a useful and productive craft
5. The tutor should be the best character well drained and the knower of the subject
6. Organisations of schools must be manage properly the administration and inspection part should be done periodically
7. Subject should be correlated with each other
8. Knowledge and work are not separate hard work is mandatory for the success of education thus the imported education should be industrious
9. Education must be practical and base all real life knowledge were one can get a chance to make new discoveries.
10. Education should be child centred and develop harmony in child's personality

11. Nai talim is a holistic process of tutor tutee and tuition
12. New taleem is based on creating a sense of brotherhood equality corporation and social service among the children

Education through craft

If the tuition impart through some craft or productive work, the impact gone very high because it is mixture of skill and creativity were the potential of a child erupt. If the teaching way is by handicraft in which at least any one small- scale industries to be taught than its gives the child self- dependency. It also solve the problem of his livelihood. Psychologically, it is desirable because it relieves the child from the tyranny of a purely academic and theoretical instruction against which its active nature is always making a healthy protest. The introduction of such practical productive work in education, to be participated in by all children of the nation will trend to break down the existing barriers of prejudice between manual and intellectual workers harmful alike for both. Economically, carried out intelligently and efficiently the scheme will increase the productive capacity of our workers and will also enable them to utilise their leisure advantageously. From educational point of view greater concreteness and reality can be given to the knowledge acquired by children through craft as knowledge will be related to life. This is the basic idea of Nai Talim and it is self- supported. It will help children in later life economically.

Education through Mother tongue

Knowledge will become very easy to understand when the tuition go through his mother tongue and it also become prominent. It enhance the capacity of a child without giving any burden of outer language. The N.C.F (National Curriculum Framework) 2000 also says if taught by mother tongue than the ideas and views easily grasp by the child and give the clarity of picture. In Nai Talim education must be in their own language.

Make an Ideal Citizen

It is necessary for the growth of any nation that their citizen are become efficient and honest. For this we have to assure that the curriculum must be focused on this purpose. Nai Talim truly focused on a personal and professional growth of a child. Through this it develop inner soul were child performs his duties as a citizen and steps their rights well.

Flexible Curriculum and Free Environment

For the longevity of any education process his curriculum must be flexible and given in a stress free environment. Any type of political and social pressure frustrates the tuition. The flexibility of the curriculum and free environment for the child to perform according to his own capacity are another remarkable features of Nai Talim.

Under Nai Talim the tutor and tutee are free to work according to their own prospects. In N.C.F. 2000 it is also mentioned that "Tutor has to be taught in freeenvironment. There is no pressure of examination as it is taken in a free atmosphere." The flexible curriculum helps make changes according to the situation and an interest and capacity of the child. The free environment is necessary for the development of the child.

Syllabus

In Nai Talim the various subjects has been suggested-

1. Any handicraft according to the local need–spinning and weaving, carpentry, agriculture, horticulture, leather work, culturing fish, pottery, etc.
2. Some vocational courses related to computer vocational activities
3. Language: (1st mother language and 2nd global language).
4. Mathematics
5. Social studies

6. Art and craft
7. Physical education

The syllabus of the subject must be inter- related than can be the aim of education fulfilled.The syllabus for education should be same for

Generate Finance

Today education system purely depends on government. Thus educational bodies carries lots of political pressure. The interference of political parties and society can‟t be avoidable unless it became self – dependent financially. If we go through the view to pay salaries or to generate fund by the craft made by student, the positive point is after completing education the student became entrepreneurs. They wouldn‟t need to depend government or others. They can establish their own industries and generate employment.

Work is Worship

Our ancient culture says „Work is worship‟. Nai Talim is based on principle of work. The education system of Nai Talim is production oriented so it is positive sign for the economic growth of nation. The system which helps to grow nation never be faded.

Learning by Doing

The theme of Nai Talim is learning by doing. Modern education also support this thought because it based on child psychology. It believes that child is not only a passive learner but also an active participant in the learning process. Nai Talim is an activity centred education. Thus it enhance the capacity of learning.

Preserve Culture

Every nation has rich and prosperous history and culture. For the broad prospect it must be preserve in the form of education. Nai Talim inculcates social and moral values in the mind of student.

Discipline

Discipline makes a person self- controlled and self-centred which is helpful in deep contemplation. For Gandhiji education is a moral development of a person. Without discipline a person cannot maintain his moral values neither achieve his goals.

Satisfaction

Education means the best within the child came out and give satisfaction to his soul. If any structure is associated with its culture, civilization and environment, and economically strengthen then it has never omitted. Nai Talim is connected to reality which always keeping it alive.

Conclusion

The child is in centre of education. Nai Talim elaborate the all aspects of a child creativity. It values the dignity of an individual. It is a combination of manual and intellectual work which shows the power of hard work. Nai Talim have a democratic format like education for all, equality, cooperation etc. It has a universal thought. It believes in educational universalization. It develops qualities of good citizenship. It refers the modern value of education as well preserves the old path. It accommodate between the body, mind and soul. Nai Talim provides new ground for all three dimensions of education – Tutor-Tutee-Tuition where it relies on one another. In Nai Talim the syllabus of all subjects are interrelated. It correlate between physical environment, social environment and vocational environment. It is inclusion of craft centred education regarding handicrafts like spinning, weaving, agriculture etc. It gradually able to cover the remuneration of the teacher and own. At elementary level child are too young to understand the prospects of language. Though Nai Talim supports mother tongue so it became easier to educate them. The Kothari commission „1964-66" which known as the "Father of Indian modern education system" somehow also supports the views of Nai Talim. The key elements of both are similar. Gandhiji quoted

"Education means an all draw out of the best in child and man body, mind and spirit." Nai Talim creates meaning to this purpose.

References

1. Pathak Swanand S, Gandhian Thoughts.
2. Kriplani Krishna, India of my dreams.
3. Pathak R.P., Development and problems of Indian Education.
4. Chand Jagdish K, Education in India during British Period.
5. Dr. Sachdeva, Sharma K.K., Kumar Chanchal, Sunita, Contemporary India and Education.
6. Singh M.K., Gandhi ji on Education.
7. Saikia Ranjana, Learning from Gandhi.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

National Education Policy: 2020
Era of Educational Enlightenment

• **Soni Singh-Author**

Introduction

Education is the fundamental need of human being for achieving latent abilities, developing a fair and equitable society and fostering economic growth. Education is the process of acquiring knowledge, skills, values and habits through various forms of learning. If quality of education is good, numerous positive outcomes can occur for individuals, communities and society as a whole.

Previous policies

The first NEP was promulgated by the government of India in 1968 by Prime Minister Indira Gandhi which is based on the report of Kothari Commission (1964-1966). The policy aimed to provide equal educational opportunities and achieve national integration. This policy called for "a special emphasis on removing disparities and equalizing educational opportunities, especially for Indian women, Scheduled Tribes (ST) and Scheduled Castes (SC).

The second policy was promulgated by the government of India in 1986 by Rajiv Gandhi which is based on Kothari Commission, Acharya Ramamurti committee and Lok Sabha committee on Education. The main objectives were Universalization of -

• Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

elementary education, quality improvement, vocationalization, value- based education. Education for women empowerment, education for SC/ST and minorities, decentralization and research and development.

Limitations and challenges in previous policies

- Overemphasis on rote learning and memorization.
- Lack of focus on vocational and skills training.
- Outdated curriculum and teaching methods.
- Low learning outcomes and high dropout rates.
- Insufficient emphasis on research and Innovation.
- Disparities in education access for marginalized groups.
- Inevitable access to quality education.

Current policy

The National Education Policy (NEP) 2020 was formulated by the Committee for draft National Education Policy also known as the Kasturirangan committee after the name of the chairman Dr. K. Kasturirangan. This committee was constituted by the Ministry of human resource development (MHRD), Government of India 2017 and led by Prime Minister Narendra Modi, on July 29, 2020.

It aims to create a more inclusive, equitable, vibrant education system and to transform the country's education landscape.

Foundations and Goals of NEP 2020

The purpose of the education system is to cultivate enlightened individuals with critical thinking, emotional intelligence, moral fortitude, intellectual curiosity, resourceful, nurture compassion and adaptive resilience. It aims at producing productive, engaged and supporting citizens for building an equitable, inclusive, and harmonious society with diverse perspectives as contemplated by our Constitution. The good institution of education includes personal growth, improved employability, social mobility, informed decision making, active citizenship, economic growth, reduced

inequality, improved health, environmental awareness, and social cohesion, innovative and global competitiveness.

The fundamental principles that will guide both the education system at large, as well as the individual institutions within it are:

- Recognising, identifying, and fostering the unique capabilities of each student to promote student's holistic development in both academic and non-academic spheres.
- To achieving Foundational Literacy and Numeracy by all students by grade 3.
- Learners have flexibility in closing their learning trajectories and programmes according to their talents and interests.
- No vast difference between any subject and course. All courses and activities are in same level in every perspectives.
- Multidisciplinary and holistic education across all course and activities to ensure the unity and integrity of all knowledge.
- Focus on conceptual learning rather than rote Learning.
- Encourage critical thinking and Innovation.
- Enunciate ethics, human values and constitutional values.
- Promotes multilingualism in teaching and learning.
- Focus on teaching life skills.
- Extensive use of modern technology and tactics.
- Respect for diversity and local context.
- Cornerstone of all educational decisions with full equity and inclusion.
- Synergy in curriculum across all levels of education.
- Teachers and faculty are as the heart of the learning process.
- 'Light but tight' regulatory framework to ensure integrity, transparency and resources efficiency.
- Education is a public service which access to quality education.
- Substantial investment in a strong and vibrant public education system.

The Vision of NEP 2020

It envision an education system which access a high-quality education, sustain a vibrant knowledge and making Bharat 'a global knowledge superpower'. It envisages the curriculum and pedagogy of institutions to instill the learners a deep-rooted pride in being Indian, not only in thought, but also in spirit, intellectual and deeds.

School Education

The previous academic structure has 10+2 structure in school education which modified and extant to 5+3+3+4 curricular structure covering ages 3-18. In the new curricular structure a strong base of Early Childhood Care and Education (ECCE) is also included which promotes a better learning, development and well-being. The main Features of school education which includes in NEP 2020 are:

- Early childhood care and education: The foundation of learning.
- Foundational Literacy and Numeracy

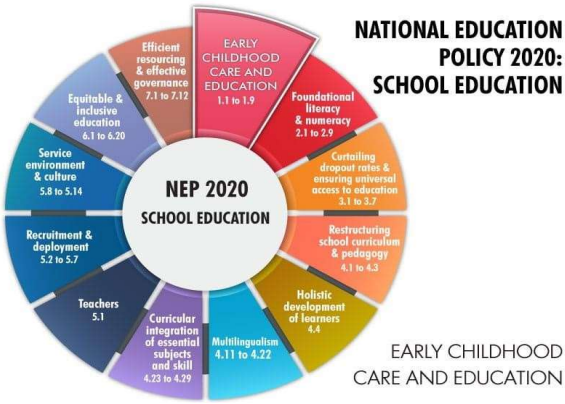

- Curtailing Dropout Rates and Ensuring Universal Access to education at all levels.
- Curriculum and pedagogy in schools; Learning should be holistic, integrated, enjoyable and engaging.

- Teachers: special educators, teacher education, professional standard and Recruitment and deployment.
- Equitable and inclusive education: Learning for all.
- Efficient resourcing and Effective governance through school complexes.
- Standard-setting and accreditation for school education.

Higher Education

Higher education provides adolescents with knowledge and skills for the modern workforce, personal growth and development, social and economic mobility, and contribution to society and economic growth. By pursuing higher education, adolescent and children can unlock their potential, achieve their goals and become productive. The main Features of higher education which includes in NEP 2020 are:

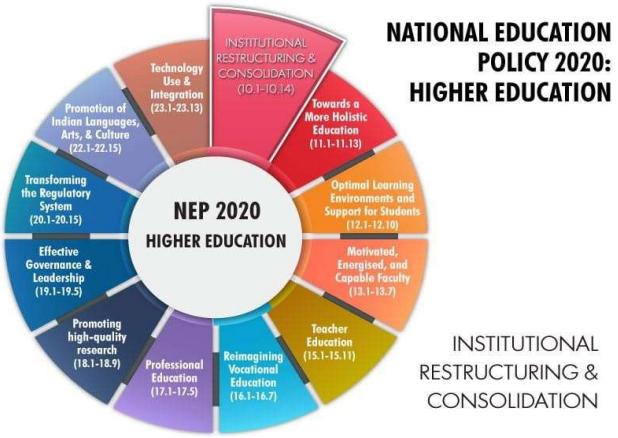

- Quality universities and colleges: A new and forward-looking Vision for India's higher education system.
- Institutional restructuring and consolidation.
- Holistic and multidisciplinary education.
- Optimal learning environments and support for students.
- Internationalization
- Motivated, energized and capable faculty.

- Equity and inclusion.
- Quality Teacher education.
- Reimagning vocational education.
- Transforming the regulatory system.
- Effective governance and leadership

Other Key Areas of Focus

1. Professional Education

Professional Education is an integral part of the overall higher education system. Agricultural education, legal education, Healthcare education and technical education play an important role in preparing students for the workforce and addressing India's socio-economic needs.

Objectives:

- Develop skilled and knowledgeable professionals.
- Enhance employability and job readiness.
- Foster entrepreneurship and innovations.
- Address industry-academia gap
- Focus on emerging areas (e.g., AI, data science)

2. Adult Education

Adult Education plays a crucial role in promoting life, long learning skill, development and social equity. The target of adult education is 100% literacy rate by 2013 and 50% of adults enrolled in vocational training by 2025 and 20% increase in adult education enrolment by 2025, NEP 2020 emphasise adult education as a critical component of India's education. System focusing on inclusivity and equity, skill development and employability, lifelong learning and personal growth, social mobility and empowerment. By prioritizing adult education NEP 2020 aims to transform India into a knowledge-based economy promoting social, cohesion and economic prosperity.

3. Art and culture Education

Art and culture education plays a vital role in fostering creativity, preserving heritages and promoting holistic development. The objectives of art and cultural education to develop aesthetic sensibility, creativity preserved and promote Indian heritage and culture. The main feature of its to do mandatory art and culture education from Grade 1-12, flexible and modular course redesign, Focus on Indian classical music, dance and visual arts, incorporation folk arts and craft and emphasis on hands-on learning and projects.

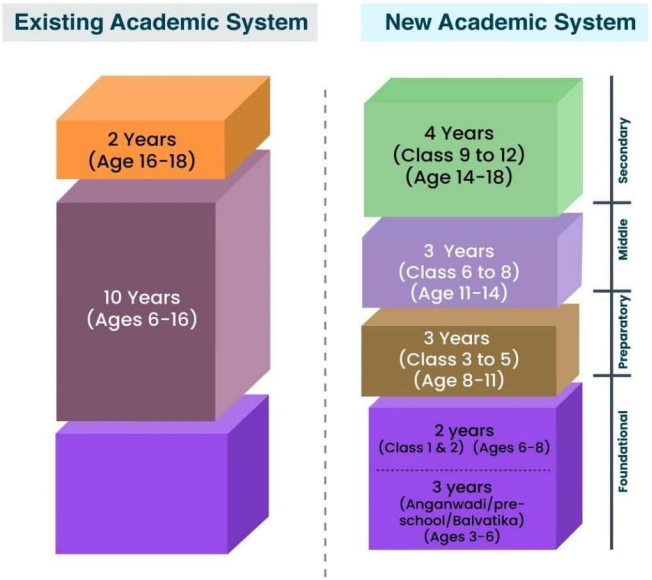

Implementation of NEP 2020

Achieving successful implementations of the National Education Policy (NEP) requires the multifaceted approach. To start , the policy such strengthening and empowering the Central Advisory Board .of Education (CABE) to make it one more than just a consultation forum. CABE's revamped mandate would include developing articulating evaluating and revising the. Country's

education in collaboration with the Ministry of Human Resource Development and state apex bodies.

Rename MHRD to the ministry of Education (MoE) would help refocus attention on education and learning. A significant increase in educational investment is also crucial as high quality education is vital for society future. However, India's public expenditure on education has fallen short of the recommended 6% of GDP a target set in 1968 and reaffirmed in 1986 and 1992.

The current situation of Education system in India has declined to 0.00% of GDP in 2022 down from 14.65% in 2021. The literacy rate lag behind the world average, with a 74% literary rate in India. Compare to 86.3% globally. And disparities exist in education, Axis and quality, particularly in rural and disadvantaged area. By addressing these challenges and implementing the NEP's recommendation, India can move closer to providing affordable quality education for all. Some strategies should be followed for successful implementation of NEP i.e; long-term vision, expertise, concerted action, institutional frameworks and increased investment.

National level implementations

- National Educational Technology Forum (NETF): An autonomous body created to facilitate the exchange of ideas on technology uses to improve learning.
- National Curriculum Framework for Teacher Education: To be framed by the National Council for Teacher Education by 2021.
- National Professional Standards for Teachers will be developed by the national Council for teacher education by 2022.
- Simultaneous Dual Degrees: Approved by the university grant commission (UGC) in April 2022, allowing students to pursue 2 degrees simultaneously.
- New Curriculum Framework released by the ministry of education in October 2022 for children aged 3-8 years.

State- level implementations:

- Chhattisgarh government announced plans to implement NEP 2020 in July 2024.
- Jawaharlal University JNU established new centres for Hindu, Buddhist and Jain studies under the school of Sanskrit and Indic studies in July 2024.
- National Digital Universities is set to be launched in January 2025.

The National Education Policy 2020 is being implemented across various cities in India. Karnataka was the first state to issue an order implementing NEP 2020 in August 2021. Other states like Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Telangana, Maharashtra, Andhra Pradesh, Rajasthan and Assam have also started implementing the policy in pages.

These initiatives demonstrate the progress being made toward implementing the NEP 2020 across India.

Conclusion and Discussion

The National Education Policy (NEP) 2020 is a comprehensive and visionary document that aims to transform India's education system. It seeks to address the country's socio-economic challenges promote equity, qualities and accessibility and prepare students for a 21st century. The policy emphasis on multidisciplinary education, skill development, and critical thinking will help create a knowledgeable and innovative work force. According to a report, in 2013 there were approximately 229 million students enrolled in accredited urban and rural schools in India from class 1-12. This number represent an increase of 2.3 million students from 2002 and a 19% increase in girl's enrollment. Additionally, the annual status of education report (ASER) 2012 reported that 96.5% of rural children aged of 6-14 world enrolled in school, the India has ruined the highest environment issue of 95%. For instance, in this age group from 2007 to 2014. For higher education, India had Over 900 universities and 40000 colleges in January 2009.

The challenges that are implementation and funding, teacher training and capacity building infrastructure development, addressing socio-economic disparities, balancing traditional and modern education. It will be helpful in developing a robust implementation plan, Building partnership with stakeholders, fostering research and Innovation. Enhancing teacher education and training, and monitoring and evaluating policy outcomes.

Implications

Improved education outcomes and employability, increased economic growth and development, enhanced social cohesion and inclusivity, better preparedness for global challenges, development of knowledgeable and skilled workforce. The successful Implementation of an NEP 2020 will require collective efforts from policymakers, educators and the community. By addressing the challenges and building on the strength, India can create the world-class education system that fosters innovations, entrepreneurship, socio-economic development. NEP 2020 presents a unique opportunity for India to reimagine his education system, addressing long-standing challenge and harnessing a demographic dividend India. As India embarks on this educational reform journey, the effectiveness of it will be crucial in shaping the party's future.

References

1. NEP 2020-Ministry of Education (2020, JULY 29) Government of India.
2. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/
3. National Education Policy 2020-Wikipedia
4. https://en.wikipedia.org
5. EducationWorld (2020) NEP2020: school education. educationworld.in
6. Acadecraft (2023, Aug 22) The 5+3+3+4 education system. Acadecraft.com
7. Aryabhatta Knowledge University. (NEP 2020: Higher Education)Gyan parisar, Pithampur, Patna, Bihar.
8. akubihar.ac.in
9. Jha, P., & Parvati, P. (2020).National Education Policy, 2020.

10. Kasturirangan, K. (Chairperson). (2020) National Education Policy 2020: Report of the Committee. New Delhi: Ministry of education, Government of India.
11. MyGov. (2020) National Education Policy 2020.Retrived from (link unavailable).
12. Journal of Educational Research. (2020). National Education Policy 2020, 113(4), 1-12. Doi: 10.1080/00220671.2020.1744211
13. Economic and Political Weekly. (2020). National Education Policy 2020, 55(30), 31-38.
14. Journal of Teacher Education. (2020). National Education Policy 2020, 71(4), 1-15. Doi: 10.1177/0022487120922341

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Jane Austen's Examination of Social Class and Marriage in 'Pride and Prejudice'

• **Nisha-Author**

Introduction

"Pride and Prejudice," written by Jane Austen and published in 1813, is regarded as a classic work of English literature. The story deftly explores the complexities of social standards, relationships, and the impact of social status against the backdrop of early 19th-century England. Austen's writing presents a profound reflection on the difficulties and contradictions involved in the quest for love and social mobility within the strict confines of a class-conscious society through the prism of its characters and their relationships.

Marriage acted as both a personal and societal compact during a period of rigid adherence to social hierarchy where one's place in society was frequently determined by birthright and fortune. The need to maintain one's social position and financial security was frequently entwined with the imperative of achieving a marriage of hearts. It is within this backdrop that Austen's narrative unfolds, building a tapestry of characters dealing with societal expectations and individual wants. In "Pride and Prejudice," Jane Austen deftly analyses and reveals the dynamics of marriage and social class in early 19th-century England. This research study aims to investigate how she does this. This study tries to illuminate Austen's perceptive

• BA 5th Semister, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

commentary on social standards, relationships, and the nuanced interplay between love and social status by examining the characters' struggles and decisions. We will explore this well-known book's pages to discover the complexities, satirical wit, and ongoing relevance of Austen's portrayal of a society in which pride and prejudice frequently determine fate. We will take a journey into the heart of a society where love, marriage, and social status were closely interwoven, yet where individual agency and sincere passion dared to defy tradition through the eyes of Elizabeth Bennet, Mr. Darcy, and a host of other characters.

This study analyses Austen's reflections on a society that, despite the passage of time, continues to provide insightful perspectives on the complex dance between societal expectations and the quest for personal pleasure.

Contexts: Both historical and social

In order to fully comprehend Jane Austen's comments on marriage and social class in "Pride and Prejudice," it is imperative that we familiarise ourselves with the historical and social context of early 19th-century England. The society in which Austen lived, with its rigid social rules, class distinctions, and institution of marriage, is reflected in her book.

1. Early nineteenth-century England: A Class-Defined World

In England during the beginning of the 19th century, there was a rigorous class system that pervaded every facet of life. The aristocracy and landed gentry, who possessed enormous riches, political clout, and social standing, were at the top. The middle class, which included professionals, businesspeople, and members of the clergy, lived below them and aspired to respectability and upward mobility. The working class and the poor were at the bottom of the social scale, struggling with poverty and having little prospects to advance.

2. The Value of Marital Partnerships

Marriage was not just a personal decision; it was also a calculated one heavily influenced by social class and financial factors. It was a way for the upper classes to align themselves with powerful allies in order to consolidate their money and influence. For the middle class, it presented a chance to move up the social scale, while for the lower classes, it could either bring financial security or, on the other hand, result in poverty.

3. Gender roles and societal norms

Strict gender roles and expectations were prescribed by societal conventions at the time. Women were mainly viewed as domestic carers who relied on marriage for social status and financial security. Men were the primary decision-makers and providers, and their ability to find a suitable spouse was frequently correlated with their social status and financial situation.

4. The Novelist's Thoughtful Perspective

Jane Austen stands out as an astute observer and commentator against this backdrop of social stratification and gender-defined duties. She depicts the nuances of her characters' lives with humour and nuance, highlighting the conflicts between societal standards and personal preferences. In essence, "Pride and Prejudice" is a social critique that questions the social conventions of the day.

Deciphering Jane Austen's investigation of marriage and social class in "Pride and Prejudice" requires an understanding of the historical and social background of early 19th-century England. It offers helpful insights into the book's ongoing relevance and its profound reflection on the interaction of cultural norms, relationships, and personal agency by providing the lens through which the characters' choices and societal restrictions can be studied.

Social Class of the Characters

The characters in the novel reflect a range of social groups in early 19th-century England. The social position of each character influences not only how they fit into society but also how they see marriage and romantic relationships.

- **Lower Gentry: The Bennet Family**

The Bennet family belongs to the bottom tiers of the aristocratic class because Mr. Bennet is a landowner. Despite having a little estate, Longbourn is not particularly wealthy. Therefore, the marriages of their daughters are essential to guaranteeing their financial prospects. The family's aim to climb the social ladder through successful marriages is highlighted by Mrs. Bennett's obstinate search for suitable suitors for her daughters. 2. The Wealthy Aristocracy of Mr. Darcy and Mr. Bingley

Fitzwilliam Darcy and Charles Bingley, members of the affluent elite, stand in for the highest classes of society. Due to his enormous money and status, Darcy is a very sought-after bachelor. Despite not being as wealthy as Darcy, Bingley has a comfortable income and is regarded as a suitable match for any young lady of noble birth.

- **The Clergy and Social Aspiration, by Mr. Collins**

Mr. Collins, a clergyman, holds a special place in society. He is not a member of the aristocracy, but he does work in the clergy, which is regarded as a noble line of work. His quest for a wife, and especially his proposal to Elizabeth Bennet, exemplifies the desire of middle-class people to rise socially through marriage.

- **Lady Catherine de Bourgh: Nobility of the Aristocracy**

The apex of aristocratic nobility is Lady Catherine de Bourgh. She has enormous riches, power, and influence because she is a noblewoman. Her persona acts as Elizabeth Bennet's antithesis, highlighting the significant differences in their social standing and the hurdles that class places in the way of their connections.

- **The Gardiners: Middle-Class Respectability**

The middle class is represented by the Gardiners, who are family members of the Bennets. They are characterised as being financially secure, educated, and smart. The Bennets' lesser gentry rank and the steadiness of the middle class are contrasted by their appearance in the book.

Character Development and Social Class

Character growth in the narrative is closely related to each person's socioeconomic status. For instance, their early notions of social status are what led to Mr. Darcy's initial pride and Elizabeth Bennet's initial prejudice. The protagonists' emotional growth and self-discovery journeys are connected with their changing perspectives on marriage and social standing. Through her characters in "Pride and Prejudice," Jane Austen skillfully depicts the social structure of her era. She provides a subtle commentary on the challenges of negotiating the social mores and socioeconomic distinctions that characterised early 19th-century England through their interactions and choices. Austen's critique of social expectations and the search for love and happiness in a class-segregated society can be explored through this interplay of characters and social class.

Satire and Critique in “Pride and Prejudice”

"Pride and Prejudice" is more than just a book about manners and romantic relationships; it also contains acute societal commentary and sly humor. Austen masterfully analyses the social mores, romantic relationships, and class divisions of her day through her smart use of irony, wit, and sharp observation.

a) Social hypocrisy parody

Austen utilises satire to highlight the hypocrisy of a culture that places a high value on social position and external looks. The obsequious and self-serving aspect of Mr. Collins' persona makes him a prime target. His over-the-top flattery and sycophantic actions

expose the ridiculousness of false social customs. The pomposity and total disdain for Elizabeth's sentiments in his proposal serve as a shining illustration of Jane Austen's satirical pen at work.

b) Misrepresenting marriage expectations

Practical factors like social mobility and financial security dominated marriage in Austen's time. Through figures like Mrs. Bennet, who is fixated on matching her daughters up with affluent husbands, Austen parodies these expectations. Her comedic portrayal of her concern with securing beneficial pairings emphasises the foolishness of putting financial gain ahead of emotional compatibility.

c) Character development irony

Irony is a powerful tool that Austen uses to shape the personalities of her characters. The power of self-reflection is demonstrated by Mr. Darcy's change from an arrogant, haughty nobleman to a more modest, self-aware person. His initial pride, which inspires the book's title, is gradually undermined as he comes to terms with his shortcomings. This irony is a critique of the superficial judgements society frequently makes about people based on their social class.

d) Gender Role Subversion

Austen subverts traditional gender roles to gently attack the restrictions put on women in her society. Elizabeth Bennet emerges as a role model who defies social norms. She exhibits Austen's conviction in women's agency and the value of sincere affection in relationships with her wit, intelligence, and refusal to wed for selfish reasons.

e) Criticism of Succession Laws

The story also makes fun of the period's inheritance laws, which sometimes gave preference to male heirs over female ones. The complexity of Mr. Bennet's inheritance and the possibility that a distant male relative will inherit Longbourn bring to light the

inequality and vulnerability that women experienced in a society where wealth and property were passed down patriarchally.

Through satire and criticism, Austen encourages readers to consider the ridiculousness of cultural rules, the hollowness of class distinctions, and the value of true personal connection. By providing a timeless reflection on the complications of love, marriage, and social class, "Pride and Prejudice" challenges the traditions of its period and still has an impact on viewers today. Because of Austen's humour and wisdom, her novel is not only a literary classic but also a useful tool for analysing the customs and relationships of her period.

Conclusion

We travel through the complexities of early 19th-century English society in Jane Austen's "Pride and Prejudice," when marriage and social class were crucial. Austen's profound reflection on relationships and cultural norms is conveyed through her skillful narrative, demonstrating the timeless nature of her writing. We are prompted to consider the complexities of human interaction within these limitations by Austen's depiction of a society ruled by rigid social hierarchies, where marriage frequently served as both a personal decision and a tactical move. The contradictions between a person's wishes and society's expectations are embodied by the characters, who each represent a distinct aspect of society.Austen exposes the hypocrisies of a society where superficiality and material gain frequently take precedence over genuine passion through satire and critique. She mocks characters like the obedient Mr. Collins and the frivolous Mrs. Bennett, who mindlessly follow social norms. She also emphasises the need for personal integrity and sincere affection in relationships by praising figures like Elizabeth Bonnet who have the audacity to disobey the expectations of their period.

A major focus of the book is the examination of how differences in class affect romantic relationships and marriage. Elizabeth's shift from prejudice to understanding and Mr. Darcy's journey from pride

to humility serve as examples of how self-awareness and self-reflection can help break down social boundaries.

The idea that love should transcend society's expectations and the limitations of gender is strengthened by Austen's defiance of established gender roles, as shown in the character of Elizabeth. Her criticism of inheritance rules emphasises the vulnerability that women experienced in a society where wealth and property were frequently controlled by men.

References

1. Austen, Jane. Pride and Prejudice. Edited by James Kinsley, Oxford University Press, 2004.
2. Brown, Lloyd W. "Jane Austen and the Feminist Tradition: Marriage, Divorce, and Women's Rights." Nineteenth-Century Fiction, vol. 28, no. 3, 1973, pp. 321-338.
3. Butler, Marilyn. Jane Austen and the War of Ideas. Clarendon Press, 1975.
4. Fergus, Jan. Jane Austen and the Didactic Novel: Northanger Abbey, Sense and Sensibility, and Pride and Prejudice. Barnes & Noble, 1983.
5. Gilbert, Sandra, and Susan Gubar. "Shut Up in Prose: Gender and Genre in Austen's Juvenilia." The Madwoman in the Attic, Yale University Press, 1979, pp. 107-136.
6. Johnson, Claudia L. Jane Austen: Women, Politics, and the Novel. University of Chicago Press, 1988.
7. Kirkham, Margaret. Jane Austen, Feminism and Fiction. Athlone Press, 1997.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

R.K. Narayan's Malgudi: An Imaginative Locale

• **Shivani-Author**

Introduction

R.K. Narayan, one of India's foremost literary figures, has enchanted readers with his artistic creation of Malgudi, a fictional town that serves as the setting for many of his novels and short stories. It forms setting for most of Narayan's work. First novels, "Swami and Friends" and most of his short stories takes place here. R. K Narayan successfully portrayed Malgudi as a microcosm of India Malgudi is more than just a backdrop; it is a living, breathing character that embodies the essence of Indian society. Malgudi was created as mentioned in Malgudi Days, by Sir Fredrick Lawley, a fictional British officer in the 19th century by combining and developing a few villages. This paper delves into the intricacies of Malgudi, exploring its physical layout, social structure, and cultural ethos. Geographical and Physical Description fictional town Malgudi Malgudi is depicted as a quintessential South Indian town. As it made clear by the author itself a fictional town but it is reachable and fulfilling all its acolytes alfactory-needies. Might be connote it may geographically locate between two states of Northern India, Karnataka and Tamil Nadu because it picturesque the fictional Sarayu River and fictional Mempi forest, on the border of the States of Mysore and Madras. Narayan's assertion that -

• B.A. 5th Semister, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

Malgudi is work of fiction has not deterred readersfrom speculating aboutits actuallocation being Mysore, with river on one side and a forest on the other, and buildings and lanes similar to those of Malgudi. Malgudi is located on the banks of river Sarayu. Sarayu River: A serene river that serves as a gathering place for residents, offering a picturesque setting for social and personal reflection. In Swami and Friends, Swami, Mani and Rajan spend mostly of their evening times playing or chatting by the river. Swami and Friends also seems to have taken place during the swadeshi and boycott movement against British. In The Guide novel holy - man Raju fasts on the bank of the dry river Sarayu, praying for the rains to come. When Mahatma Gandhi visits Malgudi, the meetings and speeches are held right on the banks of river Sarayu. MempiForestis also an important feature of the Malgudi town. Mempi forest is on the other side of Sarayu.

The Mempi Forest- Located on the outskirts, this forest provides a backdrop for adventure and mystery. It houses many hills and caves. Animals to be found there include tigers, members of the deer family, langurs and water buffalos. Portrays a complete serene beauty of the typical village setting in his novels where the reader will be engrossed in imagination and caught up there in the fictional town and come to the strong conclusion of such an "ideal village" each individual should enjoy in his life span. Market Street is the central street of Malgudi, the location of several big shops including Bombay Anand Bhavan and Truth Printing Works. Kabir Street is the residence of the elite of Malgudi, while Lawley Extension is a new upcoming lane housing the rich and the influential. Elleman Street, home to the oil-mongers, isthe Last Street and beyond itliesthe river Sarayu. Other streets include Grove Street, Kalighat Lane and Vinayak Muduli Street. Between Elleman Street and the river lie Mallappa's Grove and the cremation ground. The Untouchables and sweepers live on the lower banks of the river. Buildings Palace Talkies was built in 1935 to replace the old Variety Hall. Albert Mission School and Albert Mission College are the more popular educationalinstitutions. There are also the board

school and the town elementary schools. Malgudi has a small railway station which in many episodes, is central to the storyline. The main hospital of Malgudi is Malgudi Medical Centre (MMC). The statue of Sir Fredrick, seated on a horse, forms another major landmark. Another important place is The Board less, a small restaurant without any board. Board less is a center of discussion for current events in Malgudi. Market Road The commercial heart of Malgudi, teeming with shops, street vendors, and various businesses. which replicated the influence of the British rule in India it clearly picturized in the novel Financial Expert and The Guide – where the protagonist is running behind the advancement then they return back with their own traditional root which realizes them to not live the life in the intention of the money madness, but with the life the life of righteous one.

Albert Mission School- A symbol of the town's colonial past and its educational aspirations. Modification of the education that is Gurukula to schools run by the missionaries which will provide education to all the four varnas. Conceptualization of the fictional town by other writers various critics compare Narayan's Malgudi with Thomas Hardy's Wessex or William Faulkner's Yoknapatawpha. Yoknapatawpha County is a fictional Mississippi county created by the American author William Faulkner, largely based on and inspired by Lafayette County, Mississippi, and its county seat of Oxford (which Faulkner renamed "Jefferson"). Faulkner often referred to Yoknapatawpha County as "my apocryphal county". It was a town created from his own experiences, his childhood, his upbringing. The people in it were people he met every day. He thus created a place which every Indian could relate to. A place, where, in the words of Graham Greene (from the introduction to The Financial Expert), you could go "into those loved and shabby streets and see with excitement and a certainty of pleasure a stranger approaching past the bank, the cinema, the hair cutting saloon, a stranger who will greet us, we know, with some unexpected and revealing phrase that will open the door to yet another human existence."

Malgudi replete with narrow streets, traditional houses, and bustling marketplaces. Key locations within Malgudi include it was clearly portrayed in the Novel Swami and Friends where the visibility of the town in a way it represents typical Indian remote villages and clear connection to the village life and the Swami's adventures. Country which portrays the adventures life of the Swami and his friends will also create an imaginary concept of the village Malgudi and reader will sure quest for the presence of the country in reality or in his/her own imaginary world. In contemporary culture fictional town Malgudi Days a 1986 Indian television series directed by Kannada actor and director Shankar Nag, based on the eponymous works of R.K. Narayan was mostly shot near Agumbe in Shimoga District, Karnataka. Some episodes, however, were also shot at Bengaluru and Devarayanadurga in Tumakuru District, Karnataka. The concept of Malgudi as an "idyllic spot located in South India" seems to have taken root in popular imagination. Some restaurants offering South Indian fare go by the name or extensions of "Malgudi." The Shyam Group operates Malgudi restaurants in Chennai, Bengaluru and Hyderabad. A restaurant named "Malgudi Junction" is located in Kolkata. Cultural and Social Fabric Malgudi is a melting pot of cultures, traditions, and modern influences. The town's cultural life is vibrant, with festivals and communal activities playing a central role. Social institutions like temples, schools, and marketplaces are focal points for interaction and community building. Festivals and Celebrations too describes the conflict and adjustment between the modernity, and the importance of family and community, the desire of social mobility the complexity and rigidity off the religion and social taboos. The social and cultural importance of the 'fictional town Malgudi' portrays several aspects of Indian culture, including caste, class, religion and family relationships too. Again, it symbolizes the Indian nationalism as well asthe British colonialism within the one novel Malgudi comes alive during festivals such as Diwali and Pongal, highlighting the town's rich traditions and communal harmony.

Social Dynamics: The town's social fabric is woven with interactions among diverse characters, in the novel 'The Guide', 'The English Teacher' many stories revolve around the bonds that unite members of a family and a community and also characters often find strength and support in these relationships and they can also lead to tension and conflict too reflecting the complexity and unity of Indian society. Character which connected with the Malgudi Town Narayan populates Malgudi with a variety of memorable characters, each contributing to the town's charm and depth. Some notable characters include:

Swaminathan (Swami): The young protagonist of "Swami and Friends," whose adventures capture the innocence and curiosity of childhood. A ten-year-old boy studying at Albert mission School, Malgudi.

Nataraj: The central character in "The Man-Eater of Malgudi," a mild- mannered printer whose life is turned upside down by a disruptive taxidermist. He is portrayed as broods, reflects and grows nostalgic. S R Ramteke regards Natraj a timid cowardly person – submissive and "good for nothing fellow". A central character and owner of the printing press in the fictional town of Malgudi. Through Natraj's experiences, the author explores themes of tradition, modernity and the conflict between progress and preservation.

Margayya: The ambitious financial expert in "The Financial Expert," whose journey explores themes of wealth and morality. The concept of social mobility is explored in the novel, Margayya being a main character is a man who aspires to be wealthy and move on in society. But cast and social class he found difficult to achieving his objectives in the life. He has to put effort to the complex web of Indian society Themes and Symbolism Malgudi serves as a canvasfor exploring variousthemes central to Narayan's works mesmerize the readers in India and around the world, providing a timeless depiction of the Indian culture and society. Narayan's stories portray Indian Society and culture in a unique and

insightful manner and it engages reader with the complexities and contradictions of Indian life, reflect on larger issues of tradition, modernity, and cultural identity that continue to shape the country even today.

Tradition vs. Modernity: Many stories highlight the tension between maintaining traditional values and embracing modern influences. All the characterization which blends with the tradition and modernity where return back to its originality or yearning for reaching the root, are the important feature struggle between the tradition and modernity in the novels of R K Narayan.

Human Resilience and Adaptability: Characters often face personal and social challenges, showcasing their resilience and adaptability. The portrayal of this aspects in his novels in Swamis yearning to prove his father he is courageous enough too, and in the Financial Expert Margayya even though in his routine life he lostthe hope but still his plans ideas and thoughts which proves him to become a rich person in his village. The Guide novel provides man who enjoys all the happiness of the life later he moves pout of the worldly desires and lives to the welfare of the others here also reader may get the doubt of is protagonist really away from the worldly desires? In the novel "English teacher", also portrays the sorrow and worries of a teacher who lost his wife and he broods over the missed-out love life. The Extraordinary in the Mundane: Narayan celebrates the simplicity and depth of everyday life, finding the extraordinary in the mundane. By characterizing protagonist in one or the other way which makes the reader to complete and find happiness in reading it or re thinking for the suitable solution to the problems or issues discussed in the novels.

Conclusion

Malgudi, with its rich descriptions and complex characters, stands as a testamentto R.K. Narayan'sliterary genius. Through Malgudi, Narayan offers readers a timeless and intimate glimpse into the heart of India, making it a beloved and enduring setting in Indian literature. It allows the reader to brood over the such village in their

life and live happily where the fictional Malgudi may visible in their life too.

References

1. Narayan, R. K. Swami and Friends. Indian Thought Publications, 1935.
2. Narayan, R. K. The Financial Expert. Indian Thought Publications, 1949.
3. Narayan, R. K. The Man-Eater of Malgudi. Indian Thought Publications, 1961.
4. Narayan, R. K. The English Teacher. Eyre & Spottiswoode, 1945.
5. Narayan, R. K. The Guide. Viking Press, 1958.

SHODHANJALI

ISBN- 978-93-93248-63-3
E ISBN- 978-93-93248-66-4

Women's Contribution in Amitav Ghosh's 'The Shadow Lines'

• **Parul-Author**

Introduction

Amitav Ghosh's The Shadow Lines is a seminal work in postcolonial literature, known for its complex narrative structure and thematic depth. Set against the backdrop of the Partition of India, World War II, and the Indo-Pakistani conflicts, the novel explores themes of memory, identity, nationalism, and the permeable nature of borders—both physical and psychological. Amidst this complex socio-political landscape, the contributions of women in the novel are substantial yet understated. Their roles are intricately woven into the fabric of the story, driving not only the narrative forward but also shaping the protagonist's understanding of the world.

Women like Thamma, Ila, May Price, and the narrator's mother each serve as pivotal figures who provide perspectives on memory, history, identity, and resistance. Their stories are not merely confined to the domestic sphere; they engage with broader political and cultural struggles, thus complicating the traditional understanding of women's roles in patriarchal societies. Through these characters, Ghosh presents a nuanced exploration of the -

• B.A 5th semester, Km. Mayawati Govt. Girls P. G. College, Badalpur, Gautam Buddha Nagar.

intersections of gender, politics, and nationalism. This paper seeks to analyze the ways in which women in *The Shadow Lines* contribute to the narrative, serving as vessels of history and agents of change in a male-dominated world.

Overview of 'The Shadow Lines'

The Shadow Lines is structured around the memories of an unnamed narrator as he recalls his relationships with his family, especially his grandmother Thamma, and his cousin Ila. The novel moves between various time periods and geographies—Calcutta, Dhaka, and London— highlighting the interconnectedness of personal and political histories. Central to this narrative is the exploration of borders—both literal and metaphorical—and how they shape individual and collective identities. The novel is split into two parts: "Going Away" and "Coming Home." The first part centers on the narrator's experiences in Calcutta and his fascination with his cousin Ila, a free-spirited young woman who lives in London. The second part delves into the grandmother's past in Dhaka and the impact of the Partition on her life. These stories converge in the exploration of the effects of nationalism, displacement, and communal violence. The women in the novel, particularly Thamma, Ila, and May Price, embody different responses to these political and social upheavals, providing unique insights into the broader historical context.

Female Characters and Their Contributions

a) Thamma: The Traditional Matriarch

Thamma, the narrator's grandmother, is arguably one of the most significant female figures in the novel. She represents the older generation's struggle with the violent legacy of Partition and the accompanying sense of loss and displacement. Born in Dhaka (now in Bangladesh), Thamma moved to Calcutta following the partition of Bengal. Her life is shaped by a deep-seated belief in the sanctity of borders and the nation-state, reflecting her strong nationalist inclinations.

Despite being a traditional matriarch, Thamma is a complex character who demonstrates remarkable strength and resilience. Her life is marked by sacrifice, as she works tirelessly to support her family after the death of her husband. In this sense, Thamma embodies the conventional role of the caregiver, a role often relegated to women in patriarchal societies. However, her significance extends beyond the domestic sphere. Through her memories of the Partition and her unwavering belief in the nation, Thamma emerges as a symbol of the older generation's commitment to nationalism, even as it brings about immense personal loss.

Thamma's obsession with borders is symbolic of her generation's belief in clear distinctions between nations, communities, and identities. When she decides to return to Dhaka to bring back her elderly uncle, she finds herself unable to comprehend the arbitrary nature of the new borders that divide what was once a unified Bengal. Ghosh uses Thamma's character to critique the artificiality of national borders and the violence they engender. Her experience of communal riots during the Partition and her insistence on going to Dhaka to retrieve her uncle symbolize the older generation's futile attempts to reconcile with the ruptures created by political history.

Thamma's role in the novel is also that of a historian. Through her recollections, the narrator and the reader gain access to the traumatic history of the Partition. Ghosh uses her character to emphasize the importance of memory in shaping historical consciousness. Thamma's memories are not just personal; they represent the collective trauma experienced by millions during the Partition. In this way, Thamma's contribution to the novel goes beyond her role as a matriarch. She becomes a custodian of history, passing down her memories to the next generation, ensuring that the lessons of the past are not forgotten.

b) Ila:The Modern Woman in Exile

Ila, the narrator's cousin, is another pivotal female character in *The Shadow Lines*. In many ways, she is the opposite of Thamma.

While Thamma represents tradition, nationalism, and the older generation's values, Ila embodies modernity, cosmopolitanism, and a rejection of conventional societal norms. Having grown up in London, Ila's worldview is shaped by her experiences abroad, and she rejects the rigid boundaries of nationality and tradition that Thamma holds dear.

Ila's character is significant for her representation of the globalized, postcolonial woman. She is independent, confident, and unafraid to challenge societal expectations, particularly those related to gender and sexuality. Her relationship with Nick Price, a British man, and her lifestyle in London serve as markers of her departure from the traditional roles expected of women in Indian society. However, despite her apparent freedom, Ila's life is fraught with contradictions. While she rejects her Indian roots and embraces the West, she remains alienated from both cultures. In England, she is viewed as an outsider, while in India, her choices are often judged harshly by her family.

Ghosh uses Ila's character to explore the theme of exile, not just in the geographical sense but also in terms of cultural and emotional exile. Ila's decision to live abroad represents her desire to escape the confines of Indian society, yet she remains disconnected from both her Indian and Western identities. Her struggle for acceptance, both from her family and from the world around her, reflects the broader challenges faced by women who attempt to forge their own paths in a patriarchal and postcolonial world.

Furthermore, Ila's relationship with the narrator is an essential aspect of her contribution to the novel. The narrator is infatuated with Ila, but their relationship is marked by unrequited love and a deep sense of misunderstanding. While the narrator idealizes Ila as a symbol of freedom, Ila remains emotionally distant, focused on her own quest for identity and autonomy. Through this dynamic, Ghosh critiques the traditional expectations placed on women to conform to idealized notions of femininity and love. Ila's refusal to

be confined by these expectations demonstrates her agency and her determination to live life on her own terms.

However, Ila's contribution to the novel is not without its complexities. While she embodies modernity and independence, her character is also a critique of the hollow promises of Western cosmopolitanism. Despite her freedom, Ila remains deeply unhappy, trapped in a cycle of alienation and dislocation. Ghosh uses her character to explore the limitations of Western ideals of individualism and autonomy, particularly for women of color navigating postcolonial identities.

c) May Price: The Outsider's Perspective

May Price, a British woman, plays a crucial role in the novel, particularly in the second half, where the narrative shifts focus to the events surrounding the communal riots in Dhaka. May's relationship with Tridib, the narrator's uncle, forms the emotional core of the novel, and her presence provides a contrasting perspective on the events of the Partition and the communal violence that follows. As an outsider, May represents the Western gaze, attempting to understand the complexities of India's history and its socio-political realities. However, Ghosh does not present her as a mere spectator. May's love for Tridib and her involvement in the tragic events in Dhaka reveal her emotional investment in the story. Her guilt over Tridib's death, which occurs during a riot while he is attempting to protect her, adds a layer of emotional complexity to her character.

May's contribution to the novel lies in her role as a witness to the violence and chaos that erupt in Dhaka. Her outsider status allows Ghosh to explore the limits of Western understanding of Indian history and politics. May is deeply affected by the violence she witnesses, but she cannot fully comprehend the long-standing historical and political tensions that have led to it. Her relationship with Tridib, and later her guilt over his death, serves as a reminder of the tragic consequences of communal violence and the personal toll it takes on individuals.

May's character also brings a different dimension to the theme of borders. Unlike Thamma, who believes in the sanctity of national borders, and Ila, who rejects them entirely, May occupies a middle ground. As a British woman, she is aware of the privileges that come with her nationality, yet she is also empathetic towards those who suffer due to the arbitrary nature of borders. Her relationship with Tridib, a man caught between multiple identities and histories, reflects her attempt to navigate these complexities.

d) The Narrator's Mother: The Silent Influence

While the narrator's mother plays a relatively minor role compared to Thamma, Ila, and May, her presence in the novel is nonetheless significant. She represents the silent, often unacknowledged contributions of women in patriarchal societies. Unlike Thamma, who is vocal in her opinions, or Ila, who actively challenges societal norms, the narrator's mother embodies the quiet endurance of women who navigate their roles within the confines of tradition. Her relationship with Thamma, in particular, highlights the generational differences between women in the novel. While Thamma is fiercely independent and determined to uphold her nationalist ideals, the narrator's mother is more accommodating, choosing to focus on her family and domestic responsibilities. However, this does not diminish her importance in the narrator's life. She provides emotional support and stability, allowing the narrator to explore his own identity and navigate the complexities of the world around him.

Conclusion

In 'The Shadow Lines', women play crucial roles that extend beyond the domestic sphere. Through characters like Thamma, Ila, May Price, and the narrator's mother, Amitav Ghosh presents a nuanced exploration of women's contributions to both personal and political histories. These women are not mere passive observers; they actively shape the narrative, offering unique perspectives on issues of nationalism, identity, and memory. Thamma's staunch nationalism, Ila's rejection of borders, May's outsider's

perspective, and the narrator's mother's quiet strength each represent different ways of engaging with the world. Together, they demonstrate the multifaceted roles women play in shaping history and challenging societal norms. Ghosh's portrayal of these women highlights their agency and their capacity to influence both personal and collective histories, making them integral to the novel's exploration of borders, identity, and memory.

References

1. Bhattacharya, Nandini. "Partitioned Lives: Women and Refugees of Bengal." South Asian Studies, vol. 18, no. 3, 2002, pp. 39-51.
2. Chatterjee, Partha. The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories.
3. Princeton University Press, 1993.
4. Ghosh, Amitav. The Shadow Lines. Penguin, 1988.
5. Nayar, Pramod K. Postcolonial Literature: An Introduction. Pearson Education India, 2008.
6. Pandey, Gyanendra. Remembering Partition: Violence, Nationalism, and History in India.
7. Cambridge University Press, 2001.
8. Roy, Anjali. "Feminist Voices in Amitav Ghosh's The Shadow Lines." Journal of Postcolonial Writing, vol. 40, no. 1, 2004, pp. 22-35.
9. Roy, Anjali. "Nationalism, Borders, and Amitav Ghosh's The Shadow Lines." Postcolonial Text, vol. 4, no. 2, 2008.

NEEL KAMAL PRAKASHAN
1/11052A, Subhas Park, Shahdara, Delhi-32
e-mail: nkplife@gmail.com
web. neelkamalprakashan.net
© Editors, First Edition
Printer: Dhruv Publisher & Printer, Bareilly (U.P.).

ISBN 939324863-X
9789393248633

₹600

कु० मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र.